* श्रीहरि:शरणम् *

चेतावनीपद-संग्रह

प्रथम भाग

मंगलाचरण

(१)

जय गनेस जय गनेस जय गनेस देवा।
माता तेरी पारबती, पिता महादेवा॥ टेर॥
एक दन्त दयावन्त, चार भुजा धारी।
माथे पै सिन्दूर सोहे, मूस की असवारी॥ १ ॥
अन्धों को आँख देत, कोढ़िन को काया।
बाँझन को पुत्र देत, निरधन को माया॥ २ ॥
पान चढ़े फूल चढ़े, और चढ़े मेवा।
लडुवन के भोग लगे, सन्त करे सेवा॥ ३ ॥

कीर्तन-धुन

(२)

राम राघव राम राघव राम राघव पाहि माम्।
जानकी वर मधुर मूरति राम राघव रक्ष माम्॥
कृष्ण केशव कृष्ण केशव कृष्ण केशव पाहि माम्।
राधिका वर मधुर मूरति कृष्ण केशव रक्ष माम्॥

नमस्कार

(३)

नमस्कार प्रभु बारम्बारा।
असंख्य कोटि ब्रह्माण्ड के स्वामी जड़ चेतन सब रूप तुम्हारा॥
तुम हो सबमें सब तेरे में, धन्य सगुण प्रभु रूप तुम्हारा॥ १॥
ना तुम किसमें ना तेरे में, धन्य है निर्गुण रूप तुम्हारा॥ २॥

बाहर भीतर ऊपर नीचे, जहाँ देखूं तहाँ रूप तुम्हारा॥ ३॥
रामकृष्ण ओंकार हरि हर, वेदों में तेरा नाम अपारा॥ ४॥
जुगल चरन में शीश झुकाऊँ, सिर पर धर दो हात तुम्हारा॥ ५॥

दो सुन्दर नाम

(४)

जग में सुन्दर है दो नाम, चाहे कृष्ण कहो या राम॥ टेर॥
एक हृदय में प्रेम बढ़ावे, एक ताप सन्ताप मिटावे।
दोनों हीं हैं पूरन काम॥ चाहे॥ १ ॥
एक विदुर-घर भोजन पावे, एक बेर भिलनी के खावे।
दोनों प्रेम कृपा के धाम॥ चाहे॥ २ ॥
एक राधिका के संग राजे, एक जानकी संग विराजे।
दोनों सुन्दर रूप ललाम॥ चाहे॥ ३ ॥
दोनों हीं घट-घट के बासी, दोनों हीं आनन्द प्रकाशी।
भजिये निसि दिन आठौं याम॥ चाहे॥ ४ ॥

हमारे माँ बाप

(५)

श्री रामजी हमारे बापू, सियाजी मेरी मैया है॥ टेर॥
नृप दशरथजी हैं दादा हमारे, दादी कौशल्या महारानी,
सियाजी मेरी मैया है॥ १ ॥
राजा जनक जी हैं नाना हमारे, नानी सुनैना महारानी,
सियाजी मेरी मैया है॥ २ ॥
लक्ष्मीनिधि हैं मामा हमारे, मामी है सिद्धि महारानी,
सियाजी मेरी मैया है॥ ३ ॥
लक्ष्मण भरत शत्रुघन चाचा, हनुमत लव कुश भैया,
सियाजी मेरी मैया है॥ ४ ॥
'सिया शरण' है दास तुम्हारो, राघवजू कै छैया॥ ५ ॥

माता, पिता, गुरु और ईश्वरके चरणोंमें वन्दना

(६)

तर्ज—देख तेरे संसार की हालत

मात पिता गुरु प्रभु चरणों में प्रनवत बारम्बार।
हम पर किया बड़ा उपकार॥ टेर॥
माता ने जो कष्ट उठाया, वह ऋण कभी न सके चुकाया।
जिन्हकी गोदी में पल कर हम, कहलाते हुँसियार॥
हम पर किया बड़ा उपकार॥ १ ॥
पिता ने हमको योग्य बनाया, कमा कमा कर अन्न खिलाया।
जोड़-जोड़ अपनी सम्पति का बना दिया हकदार॥
हम पर किया बड़ा उपकार॥ २ ॥
गुरु ने तत्व ज्ञान दरशाया, अन्धकार सब दूर हटाया।
बिनु कारन ही कृपा करे वे, कितनें बड़े उदार॥
हम पर किया बड़ा उपकार॥ ३ ॥
प्रभु कृपा से नर तन पाया, सन्त मिलन का साज सजाया।
ज्ञान विराग भक्ति मुक्ती का, खोल दिया भण्डार॥
हम पर किया बड़ा उपकार॥ ४ ॥

प्रार्थना

(७)

वह शक्ति हमें दो कृपानिधे, कर्तव्य मार्गपर डट जायें।
पर सेवा पर उपकार करें, हम जीवन सुफल बना जायें॥
अति दीन दुखी निरबल उनके, सेवक बनकर संताप हरें।
जो हैं अटके भूले भटके, उनको तारें खुद तर जायें॥
छल द्वेष कपट पाखण्ड झूठ, अन्याय से निसदिन दूर रहें।
जीवन हो शुद्ध सरल अपना, सुचि प्रेम सुधा रस बरषावें॥
निज आन मान मरियादा का, प्रभु ध्यान रहे सम्मान रहे।
जिस देश जाति में जन्म लिया, बलिदान उसीपर हो जायें॥

(८)

भगवान आपके मन्दिर में, मैं तुम्हें रिझाने आई हूँ।
वाणीं में तनिक मिठास नहीं, पर विनय सुनाने आई हूँ॥ टेर॥
प्रभुका चरनामृत लेने को, है पास मेरे कोई पात्र नहीं।
आँखों के दोनों प्यालों में, कछु भीख माँगनें आई हूँ॥ १ ॥
तुमसे लेकर क्या भेंट धरूँ, भगवान आपके चरनों में।
मैं भिक्षुक हूँ तुम दाता हो, सम्बन्ध बतानें आई हूँ॥ २ ॥
सेवा को कोई वस्तु नहीं, फिर भी मेरा साहस देखो।
रो रो कर आज आँसुओं का, मैं हार चढ़ानें आई हूँ॥ ३ ॥

सच्चा सुख

(९)

मिलता है सच्चा सुख केवल
भगवान आपके चरणों में॥
यह विनती है पल पल छिन छिन,
रहे ध्यान आपके चरणों में॥ टेर॥
चाहे वैरी सब संसार बने,
चाहे जीवन मुझ पर भार बने।
चाहे मौत गले का हार बने,
रहे ध्यान आपके चरणों में॥ १ ॥
चाहे अगनी में मुझे जलना हो,
चाहे काँटो पे मुझे चलना हो।
चाहे छोड़के देश निकलना हो,
रहे ध्यान आपके चरणों में॥ २ ॥
चाहे संकट ने मुझे घेरा हो,
चाहे चारों तरफ अँधेरा हो।
पर मन नहिं डग मग मेरा हो,
रहे ध्यान आपके चरणों में॥ ३ ॥

जिह्वा पर तेरा नाम रहे,
तेरा ध्यान सुबह और शाम रहे।
तेरी याद तो आठों याम रहे,
रहे ध्यान आपके चरणों में॥ ४ ॥

दोहा

धन्य ये मानुष जनम है, धन्य है भारत देस।
धन्य हमारे संत जन, धन्य है गीताप्रेस॥

(१०)

धन्य हमारा भारत देश, धन्य धन्य है गीताप्रेस॥ टेर॥
धन्य भागवत संत हमारे जग हितकारी प्रभु के प्यारे।
धन्य हमारा गीता ग्रन्थ, धन्य सनातन वैदिक पंथ॥
धन्य हमारा भारत देश॥ १॥
धन्य गंग जमुना की धारा, धनि धनि रामकृष्ण अवतारा।
धन्य हमारा मानस ग्रन्थ, धन्य हमारे तुलसी संत॥
धन्य हमारा भारत देश॥ २॥
धन्य अयोध्या मथुरा काशी, धन्य गौरिशंकर कैलाशी।
धन्य हमारे प्रभु का नाम, राधा माधव सीता राम॥
धन्य हमारा भारत देश॥ ३॥

गीताप्रेस

(११)

तर्ज—आवो बच्चों तुम्हें दिखायें

भाई बहनो पढ़कर देखो पुस्तक गीताप्रेस की।
इस पुस्तक में भरा खजानां निधि है इस देश की॥
राधे गोविन्द भजो राधे गोविन्द॥ टेर॥
खाली हाथ कभी नां जाना, पढ़कर जाना भाईजी।
पुस्तक गीताप्रेस की ये, गोरखपुर से आई जी॥
भवसागर को पार करोगे, जै बोलो सर्वेश की॥ इस॥ १॥

राधे गोविन्द भजो राधे गोविन्द
गन्दी पुस्तक पढ़ लोगे तो, बिगड़े सारी जिन्दगी।
औरों को पढ़ने दोगे तो, फैलावोगे गन्दगी॥
दुर्गुण तजकर सद्‌गुण लावो, छोड़ो चाल विदेश की॥ इस॥ २॥
राधे गोविन्द भजो राधे गोविन्द
ऐसी पुस्तक और कहीं पर नहीं मिलेगी माताजी।
कलजुग में कल्याण करो तो, खुला पड़ा है खाता जी॥
इससे बढ़कर और नहीं है, करो पढ़ाई शेष की॥ इस॥ ३॥
राधे गोविन्द भजो राधे गोविन्द
यह झूठा उपन्यास नहीं है, ज्ञान भरा है गीता का।
सुमिरन कर लो राधा माधव, रामचन्द्रजी सीता का॥
रामचरित मानस में देखो, लीला है अवधेश की॥ इस॥ ४॥

आपने क्या कमाई की ?

(१२)

गोविन्दो नहिं गायो जगमें, क्या कमायो बावरा॥ टेर॥
माटी का एक बूत बनाया, धर्‌यो आदमी नाम रे।
आपहि हाले आपहि चाले, भलो बसायो गाँव रे॥ १ ॥
अहरन की चोरी करे रे, करे सुई को दान रे।
ऊपर चढ़कर देखन लाग्यो, कब आवे बीमान रे॥ २ ॥
आकड़े का पेड़ लगावे, खायो चाहवे आम रे।
जे तूँ प्रानी सुख चाहवे तो, रट ले हरि को नाम रे॥ ३ ॥
पत्थर की तो नाव बनाई, उतर्‌यो चाहवे पार रे।
कहत कबीर सुनो भाइ साधो, डूबेगी मझधार रे॥ ४ ॥

गीता-स्तुति

(१३)

जय जग जननी जगत वन्दिनी,
जय जय भगवद गीता॥ टेर॥

गनपति लिखित कथित केशव मुख, वेदव्यास भनीता।
श्री मूरति नर नारायण की, प्रगट भई जग हीता॥ १॥
तत्वविवेचनि भव दुख मोचनि, उज्वल परम पुनीता।
करमयोग अरु ग्यान भक्ति की, परमानन्द सरीता॥ २॥
साधक की संजीवनि बूँटी, बड़ भागी जन पीता।
समता बोध प्रेम नर पावे, मुक्त होइ वह जीता॥ ३॥
दरपन सुचि सिद्धान्त सत्य की, पक्ष वाद तें रीता।
अरथ भाव का अन्त न पावै, नित नित नव दरसीता॥ ४॥

गीता क्यों नहीं पढ़ते ?

(१४)

जनम जाय बीता, पढ़ो क्यों न गीता।
पढ़ो क्यों न गीता, सुनो क्यों न गीता॥ टेर॥
ये हड्डियों का पिंजरा, कभी गिर पड़ेगा।
निकल जायेगा दम, तो फिर क्या करेगा।
उठा ले चलेंगे, लगेगा पलीता॥ १ ॥
तूँ किस देश का है, कहाँ बस रहा है।
बिषय वासनाओं में, क्यों फँस रहा है।
मानुष जन्म पाके, ना रह जाय रीता॥ २ ॥
तू है अंश ईश्वर का, मालिक वो तेरा।
बुलाता तुझे कहके, मेरा तूँ मेरा।
उसीकी शरण ले के, हो जा नचीता॥ ३ ॥
बदलता है उसका ना, पकड़ो सहारा।
कभी ना बदलता है, वो ही तुम्हारा।
वही कृष्ण राधा, वही राम सीता॥ ४ ॥

हमारी मातेश्वरी गीता

(१५)

धर्म ग्रंथों में है सबसे बड़ी मातेश्वरी गीता।
हरी मुख शब्द रतनों से जड़ी मातेश्वरी गीता॥ टेर॥
किसी भी वर्ण में कोई, किसी भी धर्म में कोई।
करे कल्याण सब जग का, हमारी मातु यह गीता॥ १ ॥
जगत में धर्म हैं जितने, अनेकों मत मतान्तर हैं।
बताती सार सब मत का, हमारी मातु यह गीता॥ २ ॥
करो सेवा सकल जग की, छोड़ आसक्ति ममता को।
तजो अहँकार फल इच्छा, सिखाती योग यह गीता॥ ३ ॥
इन्द्रियाँ बुद्धि तन धन जन, हटा लो सबसे अपनापन।
रहो ईश्वर के होइ शरन, पढ़ाती प्रेम यह गीता॥ ४ ॥
देह संसार नहिं कायम, बदलता मिट रहा हरदम।
करो अनुभूति आप स्वयं, कराती बोध यह गीता॥ ५ ॥

(१६)

जय जय जग जननी भगवद्गीता, हरि मुख की बानी॥ टेर॥
जितने धर्म ग्रंथ सबकी सिरमौर महारानी।
जगत गुरु श्रीकृष्ण बड़े ठाकुर की ठकुरानी॥ १ ॥
हिन्दू मुस्लिम बौध इसाई हितकर सब मानी।
मानव मात्र लेत शिक्षा तुम सबकी गुरुआनी॥ २ ॥
सीखे पढ़े कला कौशल नर खोई जिंदगानी।
गीता अमृत पीवत हो गए बड़े भक्त ग्यानी॥ ३ ॥
जो नर ऐसा गर्व करे हम हैं हिन्दुस्तानी।
भगवद्गीता पढ़ी नहीं कैसा हिन्दुस्तानी॥ ४ ॥
बिछुड़ गया प्रभुसे जब प्रानी हुई बड़ी हानी।
गीता का नित पाठ करे तो होत महरबानी॥ ५ ॥

गीता माँकी दीक्षा और आजकी शिक्षा

(१७)

सब जग ईश्वर रूप लखावे, गीता माँ की दीक्षा है।
ईश्वर नाम निशान मिटावे, भ्रष्ट आज की शिक्षा है॥ टेर॥
दैवी संपति के गुन लावे, गीता माँ की दीक्षा है।
असुर भाव जगमें फैलावे, भ्रष्ट आज की शिक्षा है॥ १॥
पैंड पैंड पर धरम सिखावे, गीता माँ की दीक्षा है।
धरम विरोधी पाठ पढ़ावे, भ्रष्ट आज की शिक्षा है॥ २॥
स्वारथ छोड़ करो जग सेवा, गीता माँ की दीक्षा है।
कारन बिना बने दुख देवा, भ्रष्ट आज की शिक्षा है॥ ३॥
हरि अरपित शुचि भोजन पाना, गीता माँ की दीक्षा है।
अण्डे, मांस तामसी खाना, भ्रष्ट आज की शिक्षा है॥ ४॥
सबही के हित में रत रहना, गीता माँ की दीक्षा है।
औरों का उतकर्ष न सहना, भ्रष्ट आज की शिक्षा है॥ ५॥
ऊपर अलग एक हो भीतर, गीता माँ की दीक्षा है।
ऊपर एक अलग हो भीतर, भ्रष्ट आज की शिक्षा है॥ ६॥
सब महँ आत्म भाव अपनाना, गीता माँ की दीक्षा है।
बरन भेद तजि सँग महँ खाना, भ्रष्ट आज की शिक्षा है॥ ७॥
अक्षय सुख का अनुभव करना, गीता माँ की दीक्षा है।
राग द्वेष महँ हरदम जलना, भ्रष्ट आज की शिक्षा है॥ ८॥
एक लालसा हरी मिलन की, गीता माँ की दीक्षा है।
एक लालसा धन मिलने की, भ्रष्ट आज की शिक्षा है॥ ९॥
बिनु दीक्षा के घातक शिक्षा, देखो करो परीक्षा है।
वो शिक्षा भारत में कैसें, यह ही बड़ी समीक्षा है॥ १०॥

पाप कर्म ईश्वर नहीं कराते ! मनुष्य ही आसक्तिवश करता है।

(१८)

उथल पुथल मचि रही जगत में, उलटे मारग जाते हैं।
लोग कहे ईश्वर ही हमसे, पाप करम करवाते हैं॥ टेर॥
पहले लिख धर दिया शीश पै, पाप करम का भारा है।
कैसे बचें बुरे करमों से, क्या अपराध हमारा है॥
डींग हाँकते रहते ऐसें, हरदम पाप कमाते हैं॥ लोग १॥
अगर पाप ईश्वर करवाते, मुक्त न कोई रह पाता।
संत शास्त्र उपदेश न रहते, धरम करम शुभ उठ जाता॥
क्या करना अरु क्या नहिं करना, कौन किसे यह समझाता।
सभी बुराई करने लगते, विप्लव जगमें मच जाता॥
मलिन बुद्धि के लोग जगत में, गलत बात फैलाते हैं॥ लोग २॥
दिया बड़ा अधिकार पुरुष को, कृपा करी जगदीश्वर ने।
स्वारथ में अन्धे होकर नर, लगे अहित जगका करने॥
हो आसक्त अधर्म करे खुद, ईश्वर पर सब थोप दिया।
राग द्वेष के वशमें होकर, बीज कलुष का रोप दिया॥
एक घड़ी भर सत पुरुषों की, संगत में नहिं जाते हैं॥ लोग ३॥
गीता त्रय अध्याय श्लोक सैंतीस, कृष्ण की बानीं है।
धन संग्रह भोगों की इच्छा, सब पापों की खाँनी है॥
बिना कामना कोई भी नर, पाप करम नहिं कर सकता।
पाप करम करने से प्राणीं, भव से कभी न तर सकता॥
भजो हरी को तजो कामना, संत शास्त्र समझाते हैं॥ लोग ४॥

गायक और लायक

(१९)

जब राम गुन गाया नहीं, गायक हुआ तो क्या हुआ।
माँ बाप मन भाया नहीं, लायक हुआ तो क्या हुआ॥ टेर॥

पढ़ सुन के बातें बहुत सी, कहता फिरे सब जगत को।
अपना सुधार नहीं किया, शिक्षक हुआ तो क्या हुआ॥ १॥
घर छोड़ कर त्यागी बना, छोड़ी न कंचन कामिनी।
वैराग्य जब भीतर नहीं, त्यागी हुआ तो क्या हुआ॥ २॥
वोटों से बाजी जीत कर, लेता है पक्ष अधर्म का।
पुतला बना वह पाप का, नेता हुआ तो क्या हुआ॥ ३॥
सतसंग जग सेवा के खातिर, खर्च धन करता नहीं।
गउओं की रक्षा नहिं करी, धनपति हुआ तो क्या हुआ॥ ४॥
मल मल के तन को खूब धोया, घिस के साबुन से सदा।
मन मैल को धोया नहीं, सुन्दर हुआ तो क्या हुआ॥ ५॥

भगवत्-प्रार्थना

(२०)

तुमको भूलूँ अब नहिं नाथ, दासपर ऐसी कृपा करो।
चढ़े रहो चित ऊपर मेरे, कबहू नायँ टरो॥ टेर॥
बिकल रहूँ दरशन बिनु तेरे, ऐसी आग लगा दो मेरे।
जिन्दा रह नहिं सकूँ एक पल, ऐसी लगन भरो॥ १ ॥
चाहूँ स्वर्ग नरक में डारो, सुख चाहूँ तो दुख मत टारो।
प्यारे लगते रहो मुझे तुम, दूजी चाह हरो॥ २ ॥
माँ माँ कह बालक अकुलावे, ले गोदी झट हृदय लगावे।
आप अनन्त जनम की माता, धीरज काहे धरो॥ ३ ॥

भूलूँ नहीं

(२१)

ऐसी कृपा करो हे नाथ, आपको कबहू ना बिसरूँ॥ टेर॥
विमुख हुआ तुमसे हरिराई, अगनित जन्म ठौकरें खाई।
मिला नहीं बिसराम कहींपर, जनमूँ सदा मरूँ॥ १ ॥

चाह रहित बिचरूँ जगमाहीं, आश रहे किससे कछु नाहीं।
निसदिन पूजा करूँ आपकी, जो कछु काज करूँ॥ २ ॥
सयन करूँ जागूँ उठि जाऊँ, प्रभु का नाम सुमिरि गुन गाऊँ।
परिकम्मा नित करूँ आपकी, जहँ जहँ पाँव धरूँ॥ ३ ॥
जब जब जैसा स्वाँग सजावो, जानउँ नहिं तो मोहि जनाओ।
निरखौं नित नव छबी आपकी, हियमहँ आनि भरूँ॥ ४ ॥
अब मत नाथ मोहि तरसाओ, जैसा हूँ मुजको अपनाओ।
पड़ा रहूँ चरनों में हरदम, पल छिन नायँ टरूँ॥ ५ ॥

दरश भिखारी

(२२)

घनश्याम तुम्हारे द्वारेपर, एक दरश भिखारी आया है।
दो नयन कटोरों में आँसू, भर भेंट चढ़ाने आया है॥ टेर॥
चलो श्याम चलो बाजे नूपुर ध्वनि,
एक ताल पै बाँसुरियाँ गूँजे।
मन भावना रूपी गोपिन्ह ने, हृद धाम में रास रचाया है॥ १ ॥
मन प्रेम के सुन्दर मण्डप में, दिन रात जुगल जोड़ी झूले।
घनश्याम तुम्हारे झूलन को, एक सुन्दर बाग लगाया है॥ २ ॥
मैं तुम्हमें बसूँ तुम्ह मुजमें बसो, पूरन हो भगत की अभिलाषा।
तुम्ह एक अनेक हो मनमोहन, जंजाल से जग भरमाया है॥ ३ ॥

मैं आपका हूँ

(२३)

मैं आपका हूँ आपका हूँ आपका रहूँगा॥ टेर॥
आपके दरवाजेका मैं हूँ भिखारी,
दाताकी महिमा सुनाता रहूँगा॥ १ ॥

आपके ही दासोंके दासोंका सेवक,
मन्दिरोंमें झाड़ू लगाता रहूँगा॥ २ ॥
आपहीके चरणोंका मैं हूँ पुजारी,
अँसुवों की माला चढ़ाता रहूँगा॥ ३ ॥

एक निश्चय

(२४)

मुझे है काम ईश्वर से, जगत रुठे तो रुठण दे॥ टेर ॥
कुटुम्ब परिवार सुत दारा, माल धन लाज लोकनकी।
हरीके भजन करने में, अगर छूटे तो छूटण दे॥ १ ॥
बैठ सन्तों की संगत में, करूँ कल्याण मैं अपना।
लोक दुनियाँ के भोगों में, मौज लूँटे तो लूंटण दे॥ २ ॥
प्रभूके ध्यान, करने की, लगी दिलमें लगन मेरे।
प्रीत संसार विषयों से, अगर टूटे तो टूटण दे॥ ३ ॥
धरी सिर पापकी मटकी, मेरे गुरुदेवने झटकी।
वो ब्रह्मानन्दनें पटकी, अगर फूटे तो फूटण दे॥ ४ ॥

फरियाद

(२५)

पतित पावन तरन तारन, मेरी फरियाद सुन लेना॥
तेरे चरणों में मस्तक है, मुझे अपना बना लेना॥ टेर ॥
सुना है पार करते नाव, तुम पतितों अनाथों की।
भँवर बिच है मेरी नैया, किनारे से लगा देना॥ १ ॥
बढ़ाया चीर द्रौपदिका, ओ राखी लाज भक्तोंकी।
तुम्हारी ही दया है शूलको आसन बना देना॥ २ ॥
यह दुनियाँ पापकी बस्ती, बिछा है जाल स्वारथका।
छुड़ाके पापसे मुझको, पास अपने बुला लेना॥ ३ ॥

सब आपका; आप मेरे

(२६)

तूँ मेरा है तूँ मेरा है, जो मिला हुआ सब तेरा है।
तूँ मेरा है तूँ मेरा है, यह रचा हुआ सब तेरा है॥ टेर ॥
दौड़त कोई पकड़े छाया, ऐसी अजब रची तूँ माया।
मैं मूरख देखत ललचाया, कैसा गजब चितेरा है॥ १ ॥
मैं तो रहा सदा मुख मोड़े, फिर भी तूँ मुजको नहिं छोड़े।
जैसे गाय बच्छ सँग दौड़े, करता लाड घनेरा है॥ २ ॥
पाया कष्ट बहुत गफलत में, अब लिखकर देता हूँ खत में।
मेरा कुछ भी नहीं जगत में, जो कुछ है सब तेरा है॥ ३ ॥
तूँ ही मात पिता अरु भ्राता, तूँ मेरा स्वामी सुखदाता।
मेरा एक तुमहिं से नाता, तुम बिन घोर अँधेरा है॥ ४ ॥
तुम बिन कोई रहा न जगमें, रमा हुआ मेरे रग रग में।
पल भर रह नहिं सकूं अलग मैं, जहँ रवि तहाँ उजेरा है॥ ५ ॥

दर्शनकी भीख

(२७)

दिला दो भीख दर्शनकी प्रभू तेरा भिखारी हूँ॥ टेर ॥
चलकर दूर देशोंसे, तेरे दरबार में आया।
खड़ा हूँ द्वार पै दिलमें, तेरी आशा का धारी हूँ॥ १ ॥
फिरा संसार चक्कर में, भटकता रात दिन बिरथा।
बिना दीदार के तेरे, हमेशां मैं दुखारी हूँ॥ २ ॥
तुहीं माता पिता बन्धू, तुहीं मेरा सहायक है।
तेरे दासन के दासों का, चरण का सेवकारी हूँ॥ ३ ॥
भरा हूँ पाप दोषों से, क्षमा कर भूलको मेरी।
वो ब्रह्मानन्द सुन विनती, शरणमें मैं तिहारी हूँ॥ ४ ॥

प्रार्थना

(२८)

तोसे अरज करूँ साँवरिया, मोसे मन नहिं जीत्यो जाय॥ टेर॥
मन मेरा यह चंचल भारी, छिन छिन लेवे राड़ उधारी।
तोड़ फेंक दे ज्ञान पिटारी, ना कछु पार बसाय॥ मोसे० १॥
मन मेरा यह चंचल घोड़ा, सत्सँग का माने नहिं कोड़ा।
ज्ञान ध्यान का लङ्गर तोड़ा, पल छिनमें हिहिनाय॥ मोसे० २॥
मन हस्थी काबू नहिं मेरे, न्हाय धोय सिर धूल बखेरे।
महावत को भी नीचा गेरे, जरा नहीं भय खाय॥ मोसे० ३॥
कैसे राखूँ मनको वशमें, मन कर राखा मुझको वश में।
तुलसी का मन विषय कुरस में, पल पल में ललचाय॥ मोसे० ४॥

(२९)

प्रभु मेरे अवगुन चित ना धरो।
समदरशी प्रभु नाम तिहारो, चाहो तो पार करो॥ टेर॥
एक लोहा पूजा में राखत, एक घर बधिक परो।
सो दुविधा पारस नहिं देखत, कंचन करत खरो॥
एक नदियां एक नाल कहावत, मैलो नीर भरो।
जब मिलिके दोऊ एक बरन भये, सुरसरि नाम परो॥
एक माया एक ब्रह्म कहावत, सूर श्याम झगरो।
अबकी बेर मोही पार उतारो, नहिं पन जात टरो॥

(३०)

दीन बन्धु दीनानाथ मेरी सुध लीजिये॥ टेर॥
भाई नाहीं बन्धु नाहीं, कुटुम्ब कबीलो नाहीं,
ऐसो कोई मित्र नाहीं स्वारथ बिन रीझिये॥ १॥

सोने की सलैया नाहीं, रूपे का रूपैया नाहीं,
कौड़ी पैसा पास नाहीं जासौं कछु कीजिये॥ २॥
खेती नाहीं बाड़ी नाहीं, बनिज व्यापार नाहीं,
ऐसो कोई साहू नाहीं, जाहिसौं पतीजिये॥ ३॥
कहत मलूकदास, छोड़ दे पराई आश,
प्रभु के शरण रह के बाहर न पसीजिये॥ ४॥

(३१)

मालिक से मेरी कब सुनवाई होगी॥ टेर॥
लिखता हूँ अरजी पै अरजी, कहौ तुम्हारी क्या है मरजी,
हमको चैन नहीं पल भरजी, कैसी विपति मैने भोगी॥ १॥
ज्यों बालक दुखिया जननी बिन, जैसे काला नाग मनी बिन,
जैसे सिंघ ना रहे बनी बिन, जुगत बिना जैसे जोगी॥ २॥
अब मैं रहा न इधर उधर का, ना मैं घर का ना बाहर का,
जैसे पंछी है बिनु पर का, पिया बिन नार बियोगी॥ ३॥
अब तो दरशन दो नन्दलाला, मत लो मोहन हमसें टाला,
शंकरदास करो प्रतिपाला, देवो दवाई मैं हूँ रोगी॥ ४॥

(३२)

तुम मेरी राखो लाज हरी,
तुम जानत प्रभु अन्तर्यामी, करनी कछु ना करी।
अवगुन मोते बिसरत नाहीं, पल छिन घरी घरी।
सब प्रपंच की पोट बाँधके, अपने शीश धरी।
सुत दारा धन मोह लियो हैं, सुधि बुधि सब बिसरी।
सूर पतित को बेगि उबारो, अब मेरी नाव भरी।

(३३)

सभा में मेरा तुमहीं करोगे निसतारा॥ टेर॥
मीराँबाई सदन कसाई, नामदेव की छान छवाई,

कबीर के घर बालद लाई, आप बने बनजारा॥ १॥
जब मैं तुझको याद किया था, जहँ देखूँ मौजूद खड़ा था,
नरसीजी का भात भरा था, सबही कारज सुधारा॥ २॥
बलि छलने ब्राह्मण बनि आये, द्रौपदि के तुम्ह चीर बढ़ाये,
खम्भ फाड़ प्रहलाद बचाये, हिनाकुश को मारा॥ ३॥
भारत में भीषम प्रन राख्यो, गीता शास्त्र जुद्ध महँ भाख्यो,
सारथि बन अरजुन रथ हाँक्यो, भूमि का भार उतारा॥ ४॥

(३४)

अब सौंप दिया इस जीवन का सब भार तुम्हारे हाथों में।
यह जीत तुम्हारे हाथों में अरु हार तुम्हारे हाथों में॥ टेर॥
यह जीत हार सब तेरी है, मेरा इस जगमें कुछ भी नहीं।
मैं जैसा हूँ प्रभु तेरा हूँ, उपचार तुम्हारे हाथों में॥ १ ॥
मेरी तड़फन बस एक यही, एक बार तुम्हें पा जाऊँ मैं।
अरपण कर दूं दुनियाँ भर का, सब प्यार तुम्हारे हाथों में॥ २ ॥
यदि मानुष का मोहि जन्म मिले, तेरे दासों का दास बनू।
फिर अन्त समय में प्राण तजूँ, सरकार तुम्हारे हाथों में॥ ३ ॥
तुझमें मुझमें बस भेद यही, मैं नर हूँ तुम नारायण हो।
जो चाहो मुझसे करवा लो, यह डौर तुम्हारे हाथों में॥ ४ ॥

सावधान

(३५)

जागो सज्जन वृन्द हमारे, मोह निशाके सोवन हारे॥ टेर॥
जागो जागो हुआ सबेरा, मोह निशा का उठ गया डेरा,
ज्ञान भानुने किया उजेरा, आशा दुखद अस्त भये तारे॥ १॥
सोते सोते जनम गमाया, अब तक चैन कभी नहीं पाया
देह गेह में मन भरमाया, होय रहे मदमें मतवारे॥ २॥

यह घर बार जगत् सब सपना, सुत वित्त दारा कोई नहिं अपना
मैं मेरे की तजो कलपना, परमेश्वर के हो तुम्ह प्यारे॥ ३॥
यह संसार रात अँधियारी, सो रहि जिसमें दुनियाँ सारी,
जागे कोई सन्त हितकारी, परमारथ पथ के उजियारे॥ ४॥
जागो सत संगत में आवो, आकर परम शान्ति को पावो
जनम-मरण से पिण्ड छुटावो, कट जावे दुख शंकट भारे॥ ५॥
जानो तबहि कि अब हम जागे, जब मन विषयों से खुद भागे,
चित हरि चरणन में अनुरागे, राग-द्वेष भय मिट गये सारे॥ ६॥
सीता पति रघुपति रघुराई; राधा पती कृष्ण यदुराई,
श्री माधव गोविन्द सुखदाई, मञ्जुल नाम जपो सुखकारे॥ ७॥

उस दिनकी तैयारी

(३६)

कुछ उस दिन की भी सार करो।
लेखा-जोखा उस मालिक को, सँभलाना तैयार करो॥ टेर॥
क्या करने जगमें आये थे, क्या आज्ञा प्रभु की लाये थे।
याद है क्या वहाँ कौल किया था, अन्तर की संभार करो॥ १ ॥
पूरन काम हुआ क्या अपना, बोलो बाकी क्या है कितना।
देखो समय भागता जाता, इसका सोच विचार करो॥ २ ॥
क्षणभङ्गुर यह जीवन भाई, सब जीवों की करो भलाई।
बुरा किसी का कभी न सोचो, सबसे हित ब्यवहार करो॥ ३ ॥
खाते सदा नमक हो जिसका, काम करो तन मन से उसका।
मिला हुआ अपना मत मानो, झूठा मत अधिकार करो॥ ४ ॥
करम करे वह बल भी प्रभुका, सब करमों का फल भी प्रभुका।
हम भी प्रभु के सब कुछ प्रभु का, प्रभु से सब मिल प्यार करो॥ ५ ॥

भारत माँके लाल

(३७)

जागो भारत माँ के लाल, राम के भक्त बनो तुम वीर॥ टेर॥
जैसे हनूमान बल धारी, खोज लई सीता महतारी,
असुर मार लंकापुर जारी,
आकर खबर दई सीता की, रिनियाँ भये रघुबीर॥ १॥
ब्रह्म मुहूरत में उठ जाओ, उठकर हरिका ध्यान लगाओ।
मात पिता गुरु पद सिर नाओ,
परमेश्वर से करो प्रार्थना, हरो नाथ भव पीर॥ २॥
द्विज हो तो नित संध्या करना, सेवा धर्म शूद्र का बरना
परम धरम भव सागर तरना,
निज निज धरम करो तुम पालन, कटे करम जंजीर॥ ३॥
सब जीवों का हित अपनाओ, दीन दुखी को गले लगाओ।
दुष्टों से तुम भय मत खाओ,
देश भक्ति अरु धर्म नीति में, सजग रहो धरि धीर॥ ४॥
दुबला मैला मन मत करना, पीछें पाँव कभी मत धरना।
जगमें होय निशंक विचरना,
डट अधर्म का करो सामना, हरी तुम्हारे सीर॥ ५॥

शिक्षाप्रद पत्र—सन्तानके लिये

(३८)

ताल-रूपक

तुम भूलना सब कुछ मगर, माँ-बाप को मत भूलना।
करजा बहुत माँ-बाप का, सिर पर चढ़ा मत भूलना॥ टेर॥
मुखड़ा तुम्हारा देखनें, पूजे थे देवी-देवता।
जन्मे तो सब हर्षित हुये, इस बात को मत भूलना॥ १॥

थाली बजा खुशियाँ मना, एकत्र सबको कर लिया।
घर-घर फिरे लड्डू बँटाये, स्नेह यह मत भूलना॥ २॥
बचपन में जब रोगी हुआ, कड़वी दवा माँ खावती।
टोना किया नजरें उतारी, वह घड़ी मत भूलना॥ ३॥
माता के कपड़े कीमती, मल-मूत्र सें मैले किये।
धो-पौंछ कर छाती लगाया, प्यार यह मत भूलना॥ ४॥
सरदी की ठण्डी रात में, बिस्तर सभी गीले किये।
तब साफ कर सूखे सुलाया, वह घड़ी मत भूलना॥ ५॥
गोदी बिठाकर ग्रास अपना, तोड़ कर मुखमें दिया।
तूं उगल वापिस थूक भरता, वह समय मत भूलना॥ ६॥
माँ ने सिखाया बैठना जब, तूं लुढ़क गिरता वहाँ।
फिर बोलना चलना सिखाया, वह समय मत भूलना॥ ७॥
अब तो बड़ी बातें बनाता, देन यह माँ-बाप की।
तुम छेद मत करना कलेजे, युग-युगों मत भूलना॥ ८॥
तुमने कमाया धन बहुत, माँ-बाप को सुख नां दिया।
धिक्कार है ऐसी कमाई, बात यह मत भूलना॥ ९॥
धन से सभी वस्तु मिले, माता-पिता मिलते नहीं।
नित शीश चरणों में झुकावो, बचन यह मत भूलना॥ १०॥
तुम अगर निज सन्तान से, सुख मिलन की आशा करो।
खुश हो सदा माँ-बाप की, सेवा करो मत भूलना॥ ११॥
थी मात कैकइ पिता दशरथ, बचन प्रभु टाला नहीं।
लंका विजय कर आ गये, श्री राम को मत भूलना॥ १२॥

ब्रह्मचर्य

(३९)

क्यों हुआ देश मतवाला, ब्रह्मचर्य नष्ट कर डाला॥ टेर॥
पवन पुत्र हनुमान बली ने, कैसा बल दिखलाया था।
ब्रह्मचर्य के प्रताप से वो, लंका जाय जलाया था॥
रावण कुल से अंगद का वह पैर टला नहिं टाला॥ १॥

शक्ती खाय उठे लक्ष्मणजी, कैसा शब्द मचाया था।
मेघनाद से शूरवीर को, पलमें मार गिराया था॥
रामायण को पढ़कर देखो, यह इतिहास निराला॥ २ ॥
जमदगनी-सुत परसराम को शूरवीर पहिचाना है।
बाल ब्रह्मचारी भीषम को, जानत सकल जहाना है॥
उनके बल से सब जग काँपे पड़ न जाय कछु पाला॥ ३ ॥
ब्रह्मचर्य को धारण कर लो, ये ही दवा अनूठी है।
मुरदे को जिन्दा करने में, यह संजीवन बूँटी है॥
इन्द्र कहे कमजोरी को तुम दे दो देश निकाला॥ ४ ॥

भारतकी माताओंसे

(४०)

तुम सुनियो भारत-नारी क्या हो गई दशा तुम्हारी॥ टेर॥
रामचन्द्र अरु लक्ष्मण जैसे, तुमने गोद खिलाये थे।
भीषम अर्जुन भीमसेन से, तुमने योधा जाये थे॥
पीर पिशाच पूजके अब तुम, पैदा किये मदारी॥ १ ॥
सीता द्रौपदि दमयन्तीने, कैसा पतिव्रत धारा था,
सहे हजारों कष्ट ये लेकिन, धर्म से पग नहिं टारा था॥
पति-सेवा के बदले में अब, देत हजारौं गारी॥ २ ॥
राजा रतनसिंह की रानी, पदमावती सयानी थी।
अपने पति को लिया छुड़ा के, बीर बड़ी मरदानी थी॥
मर कर गई पती के सँगमें ऐसा पतिव्रत धारी॥ ३ ॥
'इन्द्र' कहे भारत की नैया, तुमहीं उबारोगी बहना।
विद्या पढो पतिव्रत धारो, ये ही है उत्तम गहना॥
बिन विद्या के हाय तुम्हें अब, कहते नार गँवारी॥ ४ ॥

पातिव्रत-धर्म पालनसे कल्याण

(४१)

तर्ज—रसिया

बहनो ऐसा गहना पहनो, जासौं सुधरे सब संसार॥ टेर॥
सती-धर्म की पहनो साड़ी, पती-प्रेम की लगे किनारी,
शीश-सिन्दूर भाल की बिन्दी, पतिव्रत तेज अपार॥ १ ॥
सील स्वभाव आँख का सुरमा, वाणी मधुर गले का गहना,
कथा श्रवण कानों का कुण्डल, हरि-सुमिरन का हार॥ २ ॥
बल के बाजूबन्द पहन लो, कारीगरी के कड़े पहन लो,
सास-ससुर की सेवा का, हतफूल जड़ाऊदार॥ ३ ॥
पतिव्रत धर्म प्रेम से पालो, इसी नियम को कभी न टालो,
पतिव्रता नारी का जग में, होवे बेड़ा पार॥ ४ ॥

धनके गुलाम मत बनो!

(४२)

सन्त कहे हरि-भजन करो रे, लोग मरे रुपियाँ ताईं।
हाय रुपैया होय रुपैया, आग लगी सब जग माहीं॥ टेर॥
खाऊँ-खाऊँ करे रात दिन, धरम करम शुभ छोड़ दिया।
नाशवान का लिया सहारा हरि से नाता तोड़ दिया॥
उपजा दोश यहीं सों सारा फल लागे अति दुखदाई॥ हाय० १॥
घर-त्यागी क्या ग्रस्थी देखो, लोलुपता सबके लागी।
अन्न वस्त्र जल दाता देवे, भीतर भूख नहीं भागी॥
सारा धन मुझको मिल जावे, मिटे नहीं यह मँगताई॥ हाय० २॥
बड़ा आदमी कौन जगत् में, धन से काँटे पर तोले।
धन लेकर बेटा परणावे, लेण-देण पहले खोले॥
स्वारथ अन्ध हो गया जबसों, आगें की सूझत नाहीं॥ हाय० ३॥

मान बड़ाई धन कुटुम्ब के, सुख में इतना फूल गया।
मैं हूँ कौन? कहाँ से आया? क्या करना? यह भूल गया॥
जैसे फिरे बैल घाणी का, आँखों पर पट्टी छाई॥ हाय० ४॥
अगणित पाप करे धन के हित, बुरा-बुरा व्यवहार करे।
झूठ कपट छल धौखेबाजी, चोरी का व्यापार करे॥
मरते समय पाप सँग जावे, मार पड़े जमपुर माहीं॥ हाय० ५॥
असत् वस्तु का छोड़ सहारा, सुख की आशा तजिये रे।
नाशवान तो नाश करेगा, अविनाशी को भजिये रे॥
नर-तन जनम सुफल हो जावे, सतसंगत करिये भाई॥ हाय० ६॥

धनका सदुपयोग करो!

(४३)

धन का लोभी सुख का भोगी उसके बड़ी बिमारी।
धन का पद का गर्व करे वह नरकों का अधिकारी॥ टेर॥
धन के कारन बड़ा समझता खुद ही हो गया छोटा।
भीतर आग लगी तृष्णा की ऊपर दीखे मोटा।
खोया मानुष जनम इसी में समझे यह हुँसियारी॥ १॥
पद अधिकार लालसा धन की घमंड में रहे फूला।
सत पुरुषों का संग करे नहिं भटकत मारग भूला।
धन ही उनके इष्ट देवता धन का वही पुजारी॥ २॥
चेतन होकर जड़ पदार्थ से गठबंधन खुद जोड़ा।
जिस प्रभु का वह अंश सनातन उससे नाता तोड़ा।
अपना मूल्य घटा कर करता धन की ताबेदारी॥ ३॥
जिन्ह के कछु भी चाह नहीं है वे ही बड़े कहाते।
उन्ह से होता हित सबही का गीत प्रभू का गाते।
सच्चे शरणागत वे प्रभु के सदगुन के भंडारी॥ ४॥

(४४)

बगुला भगती न कीजिये, जगमें होय हांसी।
जम्म पकड़ ले जायँगे, डारे गल बिच फाँसी॥ टेर॥
बगुला धोली पांख का, मनमहँ कुटिलाई।
आँख मूंद मौनी भयो मछली गटकाई॥ १॥
बिल्लि कथामें बैठ के सिर दीपक राखे।
चूहा देखत दौड़ि के झट मुखमहँ भाखे॥ २॥
जैसे जल बिच कूंजरा न्हावत जल पूरा।
जल से बाहर होत ही सिर डारत धूरा॥ ३॥
लाख पिघल पानी भई पावक के संगा।
पल छिन न्यारी होत ही कियो काठ सो अंगा॥ ४॥
रे मन मूढ़ बिलाव क्यों मूसा सँग दौड़े।
कहत कबीर सनेह सों चित हरि सों जोड़े॥ ५॥

ईश्वरका सहारा पकड़ो

(४५)

तर्ज—निर्गुण

किसका लिया सहारा रे प्राणी, बहता यह जग सारा रे॥ टेर॥
पाँच तत्व का पींजर रचिया, मन बुद्धी अहँकारा रे।
मैं अरु मेरा मान इसीको, बहता जीव विचारा रे॥ १॥
बालक बहता बूढ़ा बहता, बहता तरुण कुमारा रे।
दुबला बहता मोटा बहता, बहता स्वस्थ बिमारा रे॥ २॥
साधू बहता पण्डित बहता, बहता मूर्ख गँवारा रे।
धनपति बहता नरपति बहता, हाथी के असवारा रे॥ ३॥
आश्रम बहता, कुटिया बहती, मन्दिर महल दिवारा रे।
जिन्दा बहता मुरदा बहता, बहती सबकी छारा रे॥ ४॥

नदियां बहती परबत बहता, बहता समँदर खारा रे।
धरणीं पवन अगन जल बहता, चाँद सूरज नभ तारा रे॥ ५ ॥
स्वर्गलोकमें इन्दर बहता, देवों का सरदारा रे।
ब्रहमलोक में ब्रहमा बहता, जिसके है मुख चारा रे॥ ६ ॥
मिन्ट सेकन्ड घड़ी पल बहवे, दिन रजनी पखवारा रे।
जाग्रत स्वप्न सुषुप्ती बहवे, ज्यों गंगा की धारा रे॥ ७ ॥
बहता संग बहो मत प्यारा, सुमिरो सिरजन हारा रे।
हरदम रहता, कभी न बहता, वह सबका आधारा रे॥ ८ ॥
यह संसार शरीर एक है, तूँ इन सबसे न्यारा रे।
तू ईश्वर का अंश सनातन मालिक वही तुम्हारा रे॥ ९ ॥

हंस उड़ जायेगा

(४६)

उड़ जायगा रे हंस अकेला, दिन दोय का दर्शन मेला॥ टेर ॥
राजा भी जायगा, जोगी भी जायगा, गुरु भी जायगा चेला॥ १ ॥
मात पिता भाई बन्धु भी जायगा, और रुपयों का थैला॥ २ ॥
तन भी जायगा मन भी जायगा, तूं क्यों भया है गैला॥ ३ ॥
तुम भी जायगा तेरा भी जायगा, सब माया का खेला॥ ४ ॥
कोड़ी रे कोड़ी माया जोड़ी, संग चले ना अधेला॥ ५ ॥
साथी रे साथी तेरे पार उतर गये, तू क्यों रहा अकेला॥ ६ ॥
राम नाम निष्काम रटो नर बीती जात है बेला॥ ७ ॥

शरीरका भरोसा नहीं

(४७)

तेरे तनका तनिक भरोसा नाहीं, काहे पै करत गुमाना रे।
तेरे तनका पलक भरौसा नाहीं, भज ले श्री भगवाना रे॥ टेर ॥

बन्दा मैं बड़ मैं बड़ क्या करे मूरख, माया देख लुभाना रे।
बहन भाणजी कुटुम कबीलो, भँवर जाल लिपटाना रे॥ १ ॥
बन्दा सिर ऊपर जम घात करत है, साँधे तीर कमाना रे।
पैन्ड पैन्ड पर तक तक मारे, कालकी चोट निशाना रे॥ २ ॥
बन्दा चन्द्रमा भी जायगा सूरज भी जायगा, धरनि और असमाना रे।
पवनरु पाणी सब उठि जायगा, रहेगा अलख निशाना रे॥ ३ ॥
बन्दा गुरुजी का बचन सांच कर मानो, कर ले वो ठौर ठिकाना रे।
चरणदास शुकदेव कहत है, फिर नहिं आना जाना रे॥ ४ ॥

हमको भी जाना है

(४८)

यह चला जाय जग सारा, एक दिन हमें भी जाना है॥ टेर ॥
सात द्वीप नवखण्ड बीच में, काल दिवाना है।
इस पापी जीव को छुपने का, कहिं नायँ ठिकाना है॥ १ ॥
मात पिता सुत नारि मित्र, मतलब का जमाना है।
कर तन मनसे हरि भजन, तुझे जो मुक्ती पाना है॥ २ ॥
चारजनों के बीच बैठकर, दिल बहलाना है।
आखिर को होना विदा यार, मिट्टी मिल जाना है॥ ३ ॥
कौड़ी कौड़ी माया जोड़ी, भरा खजाना है।
शम्भुदास की यही वीनती, भरम गमाना है॥ ४ ॥

सच्चा शूरवीर

(४९)

कोई बदलेंगे ज्ञानी जन शूर, मनवा तेरी आदत को॥ टेर॥
कामी क्रोधी क्या बदलेंगे, माया के मजदूर।
अमल तमाखू भांग धतूरा, रहत नशे में चकनाचूर॥ १ ॥

पाँचों ठग इस मन को लूटे, तृष्णा दे रही लूर।
बिन समझे नर कितने बह गये, माच्यो जगत में फितूर॥ २ ॥
पांच विषय में लिपट रहत है, सदा मति के क्रूर।
उनको दर्श स्वप्न में नाँही, साहिब जिनसे है दूर॥ ३ ॥
राम नाम से प्रीत लगा के, सत्सँग करो जरूर।
जनम जनम के पाप मिटेंगे, हो जावे माफ कसूर॥ ४ ॥
वेद पुराण शास्त्र की आग्या, गुरु मिले भर पूर।
कहत कबीर सुनो भाई साधो, सत् चित् आनन्द नूर॥ ५ ॥

डरते रहो

(५०)

डरते रहो यह जिन्दगी बेकार ना हो जाय।
सुपने में भी किसी जीव का अपकार ना हो जाय॥ टेर ॥
पाया है तन अनमोल सदाचार के लिये।
कहीं विषयों में फँस करके अनाचार ना हो जाय॥ १ ॥
सेवा करो निज धर्म की, शुभ कर्म हरी भजन।
इतना भी करके पीछे अहंकार ना हो जाय॥ २ ॥
मंजिल असल मुकाम की तय करनी है तुम्हें।
जग ठग नगरी में फस के गिरफ्तार ना हो जाय॥ ३ ॥
माधव लगी है बाजी माया मोह जाल की।
धोखे में फंस करके कहीं अब हार ना हो जाय॥ ४ ॥

दाग मत लगाना

(५१)

तेरी काया के काट लगावे मतना।
लगावे मतना रे ठगावे मतना॥ टेर॥
या काया तेरी सोने की बनी है,
सोने में खोट मिलावे मतना॥ १ ॥

या काया तेरी हीरों की बनी है,
हीरों में कँकड़ मिलावे मतना॥ २॥
या काया तेरी निर्मल गुदड़ी,
गुदड़ी में दाग लगावे मतना॥ ३॥
इस काया में दिवलो जगत है,
दिवले को फूँक से बुझावे मतना॥ ४॥
'रामसखी' चरणन की चेंरी,
राम के भजन ने भुलावे मतना॥ ५॥

मैं-मेरीका त्याग

(५२)

मैं नहीं मेरा नहीं यह तन किसीका है दिया,
जो भी अपने पास है वह धन किसी का है दिया॥ टेर ॥
देने वाले ने दिया वह भी दिया किस शान से।
"मेरा है" यह लेने वाला, कह उठा अभिमान से।
"मेरा है" यह कहने वाला, मन किसी का है दिया॥ १ ॥
जो मिला है वह हमेशा, पास रह सकता नहीं।
कब बिछुड़ जाये यह कोई, राज कह सकता नहीं।
जिन्दगानी का खिला मधुवन किसीका है दिया॥ २ ॥
जग की सेवा खोज अपनी, प्रीति उनसे कीजिये।
जिन्दगी का राज है यह जानकर जी लीजिये।
साधना की राह पर साधन किसी का है दिया॥ ३ ॥

पछिताना पड़ेगा

(५३)

पछितावेगा पछितावेगा तेरा गया वक्त नहिं आयेगा॥ टेर ॥
रतन अमोलक मिलिया भारी, कांच समझकर दीन्हा डारी,
खोजत नाहीं मूरख अनाड़ी, फेर कभी नहिं पायेगा॥ १ ॥

नदी किनारे बाग लगाया, मूरख सोवे ठंडी छाया,
काल चिड़ैया सब फल खाया, खाली खेत रह जायेगा॥ २ ॥
बालू का तूं महल बनावे, कर कर जतन सामान सजावे,
पलमें वर्षा आन गिरावे, हात मसल रह जायेगा॥ ३ ॥
लगा बजार नगर के माहीं, सबही वस्तु मिले सुखदाई,
ब्रह्मानन्द खरीदो भाई, बेगि दुकान उठायेगा॥ ४ ॥

रामजीका आश्रय

(५४)

तेरा रामजी करेंगे बेड़ा पार, उदास मन काहे को करे॥ टेर॥
नैया तूं कर दे प्रभु के हवाले, लहर लहर हरि आप संभाले,
हरि आपही उतारे तेरा भार, निराश मन॥ १ ॥
काबू में मँझधार उसीके, हातोंमें पतवार उसीके,
बाजी जीत लेवो चाहे तुम हार, निराश मन॥ २ ॥
गर निर्दोष तुझे क्या डर है, पग पग पर साथी ईश्वर है,
जरा भावनासे कीजिये पुकार, निराश मन॥ ३ ॥
सहज किनारा मिल जायेगा, परम सहारा मिल जायेगा,
डोरी सोंपदे उसीके सब हात, निराश मन॥ ४ ॥

गोरे शरीरका अभिमान

(५५)

गोरे गोरे गात को गुमान कहा बावरे,
रंग तो पतंग तेरो काल उड़ि जायगो॥ टेर॥
धृंवा कैसो धन तेरो, जातहु ना लागे बेरो,
नदी के किनारे रूँख, कैसे ठहरायगो॥ १ ॥
मनहु को छोड़ मान, प्यारे मेरी सीख मान,
जोबन को रूप तेरो, कूकरा न खायगो॥ २ ॥

मानुष की देही वो तो जीवत ही आवे काम,
मूवा पीछे स्याल काग सूकर न खायगो॥ ३ ॥
फूसहु की आगको निवास घड़ी दोयहु को,
चौरन को माल नहिं चौहटे बिकायगो॥ ४ ॥
कहत मलूकदास, छोड़ दे माया की आश,
बँधी मुट्ठी आयो है पसारे हात जायगो॥ ५ ॥

बेफिक्र रहो

(५६)

जीव तूं मत करना फिकरी, जीव तूं मत करना फिकरी।
भाग लिखी सो हुई रहेगी, भली-बुरी सगरी॥ टेर॥
तप करके हिनाकुश आयो, वर पायो जबरी।
लोह लकड़ से मर्‍यो नहीं वो मर्‍यो मौत नखरी॥ १ ॥
सहस्र पुत्र राजा सगर के, तप कीनो अकरी।
थारी गति ने तूँहीं जाने, आग मिली ना लकड़ी॥ २ ॥
तीन लोक की माता सीता, रावण जाय हरी।
जब लक्ष्मण ने लंका घेरी, लंका गई बिखरी॥ ३ ॥
आठ पहर साहेब को रटना, ना करना जिकरी।
कहत कबीर सुनो भई साधो, रहना बे फिकरी॥ ४ ॥

उस देश चलो

(५७)

चल हंसा उस देश समँद विच मोती है॥ टेर॥
चल हंसा वह देश निराला,
बिनु शशि भानु रहे उजियाला।
लगे न काल की चोट जगमग ज्योती है॥ १ ॥

करूँ चलन की जब तैयारी,
दुबिधा जाल फँसे अति भारी
हिम्मत कर पग धरूँ हंसनी रोती है॥ २ ॥
चाल पड़ा दुविधा सब छूटी,
पिछली प्रीत कुटुम्ब से टूटी।
सतरह उड़ गई पाँच, धरणि पर सूती है॥ ३ ॥
जाय किया अमरापुर वासा,
फिर न रही आवण की आशा।
धरी कबीर मौत के सिर पर जूती है॥ ४ ॥

प्रभुका खेल

(५८)

कैसो खेल रच्यो मेरे दाता, जित देखूं उत तूं ही तूं।
कैसी भूल जगत में डारी, साबित करणी कररयो तूं॥ टेर॥
नर नारी में एक ही कहिए, दोय, जगत् में दर्शे तूं।
बालक होय रोवण ने लाग्यो माता बन पुचकारे तूं॥ १ ॥
कीड़ी में छोटो बन बैठ्यो, हाथी में ही मोंटो तूं।
होय मगन मस्ती में डोले, महावत बन कर बैठ्यो, तूं॥ २ ॥
राजघराँ राजा बन बैठ्यो, भिखयाराँ में मँगतो तूं।
होय झगड़ालू झगड़वा लाग्यो फौजदार फौजां में तूं॥ ३ ॥
देवल में देवता बन बैठ्यो, पूजा में पूजारी तूं।
चोरी करे जब बाजे चोरटो, खोज करन में खोजी तूं॥ ४ ॥
राम ही करता राम ही भरता, सारो खेल रचायो तूं।
कहत कबीर सुनो भाई साधो, उलट खोज कर पायो तूं॥ ५ ॥

हरिकी लीला

(५९)

हरि की लीला बड़ी अपार।
बन गये आप अकेले सब कुछ, नाम धरा संसार॥ टेर ॥
मात पिता गुरु स्वामी बनकर, करे डाँट फटकार।
सुत दारा अरु सेवक बनकर, खूब करे सतकार॥ १ ॥
कभी रोग का रूप बनाकर, बनते आप बुखार।
कभी वैद्य बन दवा खिलाते, आप करे उपचार॥ २ ॥
कभी भोग सुख मान बड़ाई, हाजिर में नर नार।
कभी दुखों का पहाड़ पटकते, मचती हाहाकार॥ ३ ॥
कभी संत बनकर जीवों पर, कृपा दृष्टि विस्तार।
अगनित जनमों का दुख शंकट, छन महँ देवे टार॥ ४ ॥
कभी धरनि पर संतन के हित, धर मानुष अवतार।
अजब अनोखी लीला करते, सुमिरत हो भव पार॥ ५ ॥
अगनित स्वाँग रचाते हरदम, धन्य बड़े सरकार।
ऐसे परम कृपालू प्रभू को, बिनवउँ बारम्बार॥ ६ ॥

श्याममयी सृष्टि

(६०)

जित देखौं तित श्याम मई है।
श्याम कुञ्ज बन जमुना श्यामा, श्याम गगन घन घटा छई है॥
सब रंगन में श्याम भरो है, लोग कहत यह बात नई है॥
हौं बौरी कै लोगन ही की, श्याम पुतरियाँ बदल गई है॥
चन्द्रसार रविसार श्याम है, मृगमद सार काम बिजई है॥
नील कंठ को कंठ श्याम है, मनहु श्यामता बेल बई है॥
श्रुति को अक्षर श्याम देखियत, दीप शिखा पर श्याम तई है॥
नर देवन की कौन कथा है, अलख ब्रह्म छबि श्याम भई है॥

प्रभुका विराट रूप

(६१)

तूँ हीं है, तूँ हीं है, जो कुछ है सो तूँ हीं है।
तूँ हीं, तूँ हीं, तूँ हीं है, जो कुछ है सो तूँ हीं है॥ टेर॥
तूँ हीं किरिया, तूँ करतार, तूँ हीं तिरिया, तूँ भरतार।
तूँ हीं सृष्टि का विस्तार, तूँ हीं सब वेदों का सार॥ तूँ० १॥
तूँ हीं कपड़ा, तूँ हीं सूत, तूँ हीं मात पिता अरु पूत।
तूँ हीं बन गया पाँचौं भूत, तेरी है सारी करतूत॥ तूँ० २॥
तूँ विषयों का पाँचौं भोग, तूँ हीं समता तूँ हीं योग।
तूँ हीं काटे भव का रोग, तूँ हीं सत्सङ्गत का जोग॥ तूँ० ३॥
तूँ हीं माटी तूँ हीं कुम्हार, तूँ हीं सोना, तूँ हीं सुनार।
तूँ हीं बणियाँ, तूँ व्यापार, तूँ हीं चमड़ा, तूँ हीं चमार॥ तूँ० ४॥
तूँ हीं श्रोता, तूँ हीं व्यास, तूँ हीं श्रद्धा, तूँ विश्वास।
तूँ हीं सबका है परकास, तुझ में सब भूतों का बास॥ तूँ० ५॥
तूँ हीं निर्गुण, तूँ गुणवन्त, ना कोइ तेरा आदी-अन्त।
तूँ हीं धारे रूप अनन्त, समझे कोई विरला सन्त॥ तूँ० ६॥
मन की हलचल तूँ हीं हैं बुद्धि निश्चल तूँ हीं है।
निर्बल का बल तूँ हीं है, साधन का फल तूँ हीं है॥ तूँ० ७॥
मैं मैं भीतर तूँ ही है, तूँ तूँ भीतर तूँ हीं है।
यह के भीतर तूँ हीं है, वह के भीतर तूँ हीं है॥ तूँ० ८॥
बाहर भीतर तूँ हीं है, भीतर भीतर तूँ हीं है।
सबके भीतर तूँ हीं है, तेरे भीतर तूँ हीं है॥ तूँ० ९॥

सबमें तेरी ही सुगंध

(६२)

जिसमें तेरी नहीं सुगंध ऐसा कोई फूल नहीं।
ऐसा कोई फूल नहीं, ऐसी कोई वस्तु नहीं॥ टेर॥

मैने देख लिया सब ठौर, तुमसा मिला न कोई और।
पाया तूँ सबका सिरमौर, इसमें कोई भूल नहीं॥ १ ॥
तुमसे मिलकर करुना कन्द, मुनिजन पाते हैं आनन्द।
तेरा प्रेम सच्चिदानन्द, किसका मंगल मूल नहीं॥ २ ॥
तुमसे करे निरंतर प्यार, जिसका तुम पर दारमदार।
चाहे आवे कष्ट अपार, तो कुछ भी प्रतिकूल नहीं॥ ३ ॥
'शंकर' कहा बजाउँ ढ़ोल, तेरा नाम बड़ा अनमोल।
उसको सके न कोई तोल, ऐसा कोई तूल नहीं॥ ४ ॥

मेरा कुछ नहीं

(६३)

कछु नहीं मेरा जगत में कछु न मुजको चाहिये।
मैं उसी का वे हमारे, फिर कहो क्या चाहिये॥ टेर ॥
मैं तो उनका था सदा से, भूल थी वह मिट गई।
सुरति परगट हो गई अब, क्या रहा जो चाहिये॥ १ ॥
कछु भी बाकी न रहा अब, प्राप्त करने के लिये।
समझना करना रहा नहिं, मिट गया सब चाहिये॥ २ ॥
सुगम सहज प्रशस्त निरमल, सार गीता सास्त्र का।
सुलभ अति सबके लिये, उपलब्ध करना चाहिये॥ ३ ॥
शरन प्रभु के हो गये वे, भक्त जीवन मुक्त हैं।
उन महापुरुषों का दरशन, संग करना चाहिये॥ ४ ॥

अपना अपनेमें पाया

(६४)

परम प्रभु अपने हीं महुँ पायो।
जुग जुग केरी मेटी कलपना, सतगुरु भेद बतायो॥ टेर॥
ज्यों निज कण्ठ मनी भूषण कहुँ, जानत ताहि गमायो।
आन किसी ने देखि बतायो, मन को भरम मिटायो॥ १ ॥

ज्यों तिरिया सपनें सुत खोयो, जानत जिय अकुलायो।
जागत ताहि पलँग पर पायो, कहुँ ना गयो नहिं आयो॥ २ ॥
मिरगन्ह पास बसे कस्तूरी, ढूँढ़त वन वन धायो।
निज नाभी की गंध न जानत, हारि थक्यो सकुचायो॥ ३ ॥
कहत 'कबीर' भई गति सोई, ज्यों गूँगो गुड़ खायो।
ताको स्वाद कहे कहु कैसो, मन ही मन मुसकायो॥ ४ ॥

नश्वर देह

(६५)

खबर नहिं है जगमें पलकी,
राम सुमिरले सुकरित करले, को जाने कलकी॥ टेर ॥
कौड़ी कौड़ी माया जोड़ी, झूठ कपट छलकी।
सिरपर धरलइ पाप गठरिया, हो कैसे हलकी॥ १ ॥
तारा मंडल सूर्य चंद्रमा ज्योती झिलमिल की।
झपके पलक जाय जिंदगानी, ज्यों बिजली चमकी॥ २ ॥
भाई बन्धु कुटुम्ब कबीला मुहबत मतलबकी।
दया धरम साहिबने सुमिरो, विनती नानक की॥ ३ ॥

सहज सुख

(६६)

अब हम सोये पाँव पसार।
मूँदी दृष्टि सहज सुख पाया, बिसर गया संसार॥ टेर ॥
बिसर गई चतुराई जग की, बिसर गया घरबार।
ना कोइ अपना दुशमन दरशे, ना कोइ अपना यार॥ १ ॥
हरष न शोक न अस्तुति निन्दा, मिथ्या रहा न सार।
खण्डन मण्डन रहा न कछु भी, जीत न कोई हार॥ २ ॥
मैं मेरा कर रहा न कोई, ना कोइ नातेदार।
छोटा बड़ा न निरधन धनियां, भिक्षुक ना दातार॥ ३ ॥

देह भावना सकल बिलाई, सुरत न रही सँभार।
परम अगाध अमिय रस भीनो, हेमा अनुभव सार॥ ४ ॥

रामके बन्दे

(६७)

हमें धन की नहीं है चाह हमतो राम के बन्दे।
रहा करते नहीं प्यासे, कभी घनश्याम के बन्दे॥ टेर ॥
तीन लोकों की सम्पति को, पलक में मारदें ठौकर,
प्रभु के द्वार के सेवक, प्रभु के धाम के बन्दे॥ १ ॥
कभी मरते नहीं संसार के सुख भोग पर धन पर,
भरौसे जी रहे जिसके, उसी हरि नाम के बन्दे॥ २ ॥
सदा अलमस्त रहते हैं, न दुख चिन्ता नहीं कोई,
जसोदानन्द आनँदकन्द पूरनकाम के बन्दे॥ ३ ॥
नहीं किसको सताते हैं, नहीं हम कुछ भी चाहते हैं,
जपें श्रीकृष्ण राधेकृष्ण राधेश्याम के बन्दे॥ ४ ॥

मालिककी दूकान

(६८)

मेरे मालिक की दूकान में सब जीवों का खाता।
जो नर जैसा करम कमावे, वैसा ही फल पाता॥ टेर ॥
क्या साधू क्या संत गृहस्थी, क्या राजा क्या रानी।
प्रभु की पुस्तक में लिख रक्खी, सबकी करम कहानी।
सबही के वो जमा खर्च का, सही हिसाब लगाता॥ १ ॥
बड़े बड़े कानून प्रभु के, बड़ी बड़ी मरियादा।
किसी को कौड़ी कम नहिं देते, किसे न दमड़ी ज्यादा।
इसी लिये तो दुनियाँ मे वो, जगत सेठ कहलाता॥ २ ॥
करते हैं इनसाफ फैसला, निज आसन पर डटके।
उनका हुकुम कभी नहिं बदले, लाख कोई सिर पटके।
समझदार तो चुप रह जाता, मूरख शोर मचाता॥ ३ ॥

अच्छी करनी करो चतुर जन, करम न करियो काला।
हजार आँख से देख रहा है, तुझे देखने वाला।
हरि का भजन करो रे भाई, समय गुजरता जाता॥ ४ ॥

मायाका गुलाम

(६९)

माया को मजूर बन्दो कहा जाने बंदगी॥ टेर ॥
माया को ही ध्यान धरे, खोटे खोटे काम करे।
गंदगी को कीड़ो प्रानी, मानत आनंदगी॥ १ ॥
पाप केरि पोट लीन्हो, तिलक निन्दा को कीन्हो।
कथा तो कपट की बाँचे, डारे सब फन्दगी॥ २ ॥
साधुओं से धूम धाम, चौरों के करते काम।
मूरखों से चापलूसी, गरीबों से गुन्दगी॥ ३ ॥
बंदगी न नेक भावे, चंदगी को चित्त चावे।
कबिर कहे रे मूरख, खोई खाली जिन्दगी॥ ४ ॥

गुरु कृपाञ्जन

(७०)

गुरु कृपाञ्जन पायो मेरे भाई।
राम बिना कछु जानत नाहीं॥
अंतर रामहि बाहिर रामहि।
जहँ देखौं तहँ रामहि रामहि॥
जागत रामहि सोवत रामहि।
सपनेहि देखौं राजा रामहि॥
एका जनार्दन भावहिं नीका।
जो देखौं सो राम सरीखा॥

प्रभुका खुला दरबार

(७१)

तर्ज—ओ जाने वाले रघुवर से परनाम।

जो चाहें कल्याण आप हम, अटल रहें इस बात में॥
कभी बुराई नहीं करेंगे, अब हम किसके साथ में॥ टेर॥
ना हम बुरा करेंगे किसका, ना किससे करवायेंगे।
ना हम बुरा कहेंगे किसको, ना किससे कहलायेंगे॥
ना हम किस की सुनें बुराई, ना अब किसे सुनायेंगे।
तरुवर पर ज्यों रैन बसेरा, भोर भये उठ जायेंगे॥
देखत ही सब छुप जायेंगे, ज्यों तारे परभात में॥ १ ॥
बुरा नहीं समझेंगे किसको, बुरा नहीं समझायेंगे।
बुरा नहीं देखेंगे किसको, बुरा नहीं दिखलायेंगे॥
सोचेंगे नहिं बुरा किसीका, बुरा न भाव बनायेंगे।
अपना समझ राम के नाते, सबसे प्रेम बढ़ायेंगे॥
समता प्रेम भक्ति के रस में, छके रहें दिन रात में॥ २॥
तनसे मनसे वचनो से अब किसको नहीं सतायेंगे।
पर निन्दा अपवाद छोड़ सर्वात्म भाव अपनायेंगे॥
लखें भिन्न व्यवहार भेद से, किससे कछु नहिं चाहेंगे।
पूछे कोई परामर्श तो, हित की बात बतायेंगे॥
माने कोई नहिं माने तो, बहुत खुशी इस बात में॥ ३॥

भजनका प्रकार

(७२)

ईश्वर को अपना मान लो, बस हो गया भजन।
दूजा नहिं अपना जान लो, बस हो गया भजन॥ टेर ॥
आया कहाँ से, कौन है तूँ, जायगा कहाँ।
इतना ही दिल विचार लो, बस हो गया भजन॥ १ ॥

अनुकूलता प्रतिकूलता, दोनों में सम रहो।
मङ्गल विधान मान लो, बस हो गया भजन॥ २ ॥
नेकी सभी के साथ में, जितनी बने करो।
बदनीती का मत भार लो, बस हो गया भजन॥ ३ ॥
दृष्टी में तेरे दोष है, दुनियाँ निहारती।
समता का अंजन आँज लो, बस हो गया भजन॥ ४ ॥
तुजको बुरा बुरा कहे कर 'सूर' तूँ क्षमा।
वाणी के स्वर सँभार लो, बस हो गया भजन॥ ५ ॥

संत-मिलनकी उत्कण्ठा

(७३)

मेरे दिल में तो ये ही बड़ा चाव मैं आते देखू सन्तन को॥ टेर ॥
बड़े भाग्य से सन्त पधारे, उठकर करूँ प्रणाम।
हरि-मिलने का मारग पूछूं, तज दुनियाँ का सारा काम॥ १ ॥
कैसे करम करूँ इस जग के, लोक शास्त्र व्यवहार।
कैसे जनम-मरण से छूटूँ, पूछूं आँखों से आँसू डार॥ २ ॥
कैसे प्रेम करूँ मैं प्रभु से, हो निर्मल निषकाम।
ऐसी जुगत बताओ स्वामी, कैसे रटूं मैं प्रभु का नाम॥ ३ ॥

और उपाय नहीं

(७४)

संत समागम करिये भाई, तरने की नहिं और उपाई॥ टेक॥
जान अजान छुहे पारस को, लोह पलट कंचन हो जाई॥ १॥
नाना विधि वनराइ कहावत, भिन्न भिन्न करि नाम धराई॥ २॥
जाको बास लगे चंदन की, चंदन होवत बार न लाई॥ ३॥
नौका रूप जानि सतसंगत, तामें सब कोइ बैठहु आई॥ ४॥
और उपाय नहीं तरिबे को, सुन्दर काढ़ी राम दोहाई॥ ५॥

सत्सङ्गमें जाइये

(७५)

संत समागम होय तहाँ पर जाइये,
हियमहँ उपजत ग्यान राम गुन गाइये॥ १॥
ऐसी सभा जलजाय कथा नहीं राम की,
दुलहा बिना तो बरात कहो केहि काम की॥ २॥
संतन्ह सेती प्रीत पले तो पालिये,
राम भजन में देह गले तो गालिये॥ ३॥
यह मन मूढ़ गँवार मरे तो मारिये,
कंचन कामिनि फन्द टरे तो टारिये॥ ४॥
चल रही पिछवा पवन चिन्ह उड़ जायँगे,
हरषि कहे बाजिन्द मूरख पछितायँगे॥ ५॥

सत्संग-सरोवर

(७६)

पड़ा सतसंग का दरिया नहा लो जिसका जी चाहे।
करो हिम्मत जरा डुबकी लगा लो जिसका जी चाहे॥ टेर ॥
हजारौं रत्न हैं इसमें, एक से एक बढ़ आला।
किसी का डर नहीं कुछ भी, उठा लो जिसका जी चाहे॥ १ ॥
मिटे संसार का चक्कर, लगे नहिं मौत की टक्कर।
करे है पार भव सागर, करा लो जिसका जी चाहे॥ २ ॥
वनावे चोर से साहू, मिटावे दुष्टता मन की।
कटे जड़ मूल पापों का, कटा लो जिसका जी चाहे॥ ३ ॥
बनावे रंक से राजा, बड़े राजों के महाराजा।
श्रेष्ठ से श्रेष्ठ अपने को, बना लो जिसका जी चाहे॥ ४ ॥
करत यह मुक्त जीवत ही, मिटे सन्ताप दुख सारे।
रँगे हरि प्रेम के रँगमें, रँगा लो जिसका जी चाहे॥ ५ ॥

सन्तोंको बड़भागी ही जानते हैं

(७७)

सन्तों को कोई बड़भागी लखि पावे॥ टेर॥
बाहर का कोइ भेष नहीं है, भीतर राग-द्वेष नहीं है,
अभिमान का लेष नहीं है, औरों का मान बढ़ावे॥ १ ॥
किससे कुछ भी चाह नहीं है, जीने की परवाह नहीं है,
सद्गुण की कोई थाह नहीं है, दुनियाँ की जलन मिटावे॥ २ ॥
तन की सुधि बिसराय भजन में, पर हितकारी रहे लगन में,
घुले मिले सत्चित् आनन्द में, प्रेम कृपा बरसावे॥ ३ ॥
बोले सो सद्ग्रन्थ वही है, पाँव धरे सत् पन्थ वही है,
सन्त कहो भगवंत वही है, अलग-अलग दरशावे॥ ४ ॥
ऐसे सन्त कहीं पर जावे, वह धरणी तीरथ बन जावे,
माया मोह निकट नहिं आवे, भाग्य जीवों का खुल जावे॥ ५ ॥

सन्तोंके लक्षण

(७८)

जग में सन्तन की महिमा को कोई, बड़भागी लख पाय।
बड़ भागी लख पाय, कोई विरला ही लख पाय॥ टेर॥
बाहर का कोई वेष नहीं है, भीतर राग-द्वेष नहीं है,
अभीमान का लेष नहीं है,
मान बड़ाई तजकर अपनी, जग का मान बढ़ाय॥ १ ॥
तन की सुध विसराय भजन में, पर हितकारी रहे लगन में,
धुले मिले सत् चित् आनन्द में,
सनमुख होय उसी प्राणी पर, प्रेम कृपा बरषाय॥ २ ॥
किससे कुछ भी चाह नहीं है, जीने की परवाह नहीं है,
सद्गुण की कोई थाह नहीं है,
बिनु करता जग का हित होवे, प्रभु ही करे कराय॥ ३ ॥

बोले सो सद्ग्रंथ वही है, पाँव धरे सत्पंथ वही है,
सन्त कहो भगवन्त वही है,
चलते फिरते तीर्थराज में, सब कोई लेवो न्हाय॥ ४ ॥

सत्संग करना अति आवश्यक

(७९)

यह अवसर फिर नहिं मिलने का, सतसंग करो सतसंग करो।
यह वक्त नहीं हिल डुलने का, सत्संग करो सत्संग करो॥ टेर॥
चाहे सारी दुनियाँ ठुकरावे, चाहे धन सम्पत्ति सब लुट जावे।
चाहे थाली लोटा बिक जावें, सत्संग करो सत्संग करो॥ १ ॥
चाहे तन में अधिक बिमारी हो, प्रतिकूल चले नर नारी हो।
माने नहिं बात हमारी हो, सत्संग करो सत्संग करो॥ २ ॥
अपमान अचानक हो जावे, निज साथी सभी बिछुड़ जावे।
चाहे नित्य नई आफत आवे, सत्संग करो सत्संग करो।
हे सुख सम्पत्ति के अभिमानी, कर लो अँचवन बहते पानी।
यहाँ चार दिनों की मेहमानी, सत्संग करो सत्संग करो॥ ४ ॥
व्यवहार सीखना है जिसको, व्यापार सीखना है जिसको।
भव पार उतरना है जिसको सत्संग करो सत्संग करो॥ ५ ॥

जीवन-परिवर्तन

(८०)

सतसंग सच्चे सन्तका, बड़ भाग्य से जो पा गया।
कैसे कुसंग करे जिसे, हरि-भक्ति का रँग छा गया॥ टेर॥
वह झूठ चोरी मांस मदिरा, जुवा अरु व्यभिचार से।
दुर्गुण दुराचारों को तज, भगतों के मन वो भा गया॥ १ ॥
सिगरेट बीड़ी भाँग गाँजा, दुर्व्यसन सब त्याग के।
सतरंज चौपड़ तासबाजी, की वो सौगंध खा गया॥ २ ॥
उसको पसंद आते नहीं, नाटक सिनेमा देखने।
घुड़दौड़ किरकिट खेल सारे दिलसे वो बिसरा गया॥ ३ ॥

अब समय अपना कीमती बरबाद वो करता नहीं।
हरि भजन अरु सतसंग की सरिता के जलसे न्हा गया॥ ४ ॥

सन्तोंकी वाणी से अपरिमित लाभ

(८१)

सुन मन उन सन्तन की वाणी,
करत है चोट कलेजे भीतर, चमक उठे जिन्दगानी॥ टेर॥
मानुष जैसा मानुष दीखे, कौन लखे वाने प्राणी।
चाह नहीं चिन्ता नहिं मन में, सबसे बढ़कर दानी॥ १ ॥
राग न द्वेष न लेष किसी से, चाल चले मस्तानी।
हरि-सुमिरन सूं हियरौ उमड़े, संत कहो चाहे ज्ञानी॥ २ ॥
स्वारथ छोड़ जगत् की सेवा, सुमिरण सारंग पाणी।
आदर मान करे औरन का, बन रहे आप अमानी॥ ३ ॥
क्या जाने विषयन सुख भोगी, मोह माया लिपटानी।
जाने सोइ जन हरि का प्यारा, हरिमें सुरता समानी॥ ४ ॥

रंग खिल जायेगा

(८२)

कर ले उन संतन का संग, तेरा खिल जायेगा रंग।
तेरा खिल जायेगा रंग, तेरा सुधर जायगा ढंग॥ टेर ॥
सबका हित करने के खातिर, कमर कसी दिन रात।
अपना कुछ भी स्वारथ नाहीं, बड़ी अनोखी बात॥ १ ॥
मान बड़ाई मल ज्यों त्यागी, त्याग दिया सब भोग।
दरशन परसन सेवा खातिर, तरस रहे सब लोग॥ २ ॥
केश बरोबर गरज न किसकी, कौड़ी रखे न पास।
लछमी माता पीछे पड़ कर, मुख में देवे ग्रास॥ ३ ॥
गीता ग्यान महासागर में, नित नइ उठे तरंग।
बगुला डूब हंस हो जावे, जीवन होत सुरंग॥ ४ ॥

गप्पें मत मारो

(८३)

गप्पें न मार भाई सत्संग बीच आके॥ टेर ॥
हरि की कथा है ज्योती, जग की कथा है तोथी।
बन्द कर दे तेरी पोथी, जप राम नाम जाके॥ १ ॥
हीरा बिके जँवाहरा, मत बेच वहाँ तूं चारा।
भक्तों को लागे खारा, क्यों हँसता दिल दुखा के॥ २ ॥
सत्सङ्ग बीच आना, गप शप नहीं लगाना।
चुपके से उठके जाना, सन्तों को ना खिजा के॥ ३ ॥
जेहि हरि कथा न भावे, वो अपनें घर को जावे।
यों अचलराम गावे, चरणों में सिर झुका के॥ ४ ॥

वास्तविक चतुराई

(८४)

सतसंग करो मिल भाई, छोड़ो जग की चतुराई॥ टेर ॥
चुन चुन कर ईंटे अरु पत्थर, ऊँचे मंजिल वास किया।
हरी भजन का समय अमोलक, उसका सत्यानाश किया।
निरबल और गरीबों की कछु, करी नहीं सुनवाई॥ १ ॥
कितनी कला सीख लो पढ़ लो, कुछ भी काम न आयेगी।
पद अधिकार मिल्कियत सारी, मिट्टी में मिल जायेगी।
काल बली की चोट लगे जब, खोज खबर नहिं पाई॥ २ ॥
मूढ़ होय कर भजो हरी को, वृथा नहीं बकवाद करो।
भजन कीरतन सेवा सतसँग, पल पल प्रभु को याद करो।
जीवन ऊँचा उठ जायेगा, फरक नहीं है राई॥ ३ ॥

(८५)

सतसँग नहिं कीन्हो गफलत में ऊमर सारी खो दई।
हरि भजन न कीन्हो बातों में ऊमर सारी खो दई॥ टेर॥
बिन सतसंग जगत में प्राणी पशुओं से भी खोटा।
भार रूप धरनीपर रहवे पाप करे वे मोटा॥ जी॥ १॥
दियो न कुछ भी दान हातसे लियो न हरि को नाम।
मर करके वो घोड़ा बनता मुख में पड़े लगाम॥ जी॥ २॥
उजला पहिरे कापड़ा रे पान सुपारी खाय।
नारायण के भजन बिना वो जमपुर बाँधा जाय॥ जी॥ ३॥
बड़े घरों की लाड़ली वा सतसँग में नहिं जाय।
मरकर के वो कुतिया बनती घर घर डंडे खाय॥ जी॥ ४॥
झूठ कपट कर माया जोड़े ना खरचे ना खाय।
मरकर के वो अजगर बनता पड़ा पड़ा दुख पाय॥ जी॥ ५॥
सरवर माहीं न्हावे धोवे भीतर कुरला करता।
मरकर के वो मेंढ़क बनकर टर्रक टर्रक करता॥ जी॥ ६॥
मानव तन अनमोल मिला है तनिक न वृथा गमाओ।
ग्यान भक्ति की गंगा बहती सज्जन सब मिल न्हावो॥ जी॥ ७॥

कवित्त

तात मिले पुनि मात मिले, सुत भ्रात मिले जुबती सुखदाई।
राज मिले गज बाजि मिले, सब साज मिले मनवाँछित पाई॥
लोक मिले सुरलोक मिले, बिधिलोक मिले बैकुण्ठहु जाई।
सुन्दर और मिले सबही सुख, सन्त समागम दुरलभ भाई॥

प्रभुके अत्यन्त प्यारे

(८६)

उधो मोही सन्त सदा अति प्यारे, जाकी महिमा वेद उचारे॥ टेर॥
मेरे कारण छोड़ जगत के, भोग पदारथ सारे।
निशिदिन ध्यान धरे हियमहीं, सब गृहकाज बिसारे॥ १॥

मैं सन्तन के पीछें जाऊँ, जहँ-जहँ सन्त सिधारे।
चरणन-रज निज अङ्ग लगाऊँ, सोधूँ गात हमारे॥ २॥
सन्त मिले तब मैं मिल जाऊँ, सन्त ना मुझसे न्यारे।
बिनु सतसङ्ग मुझे नहिं पावे, कौटि जतन करि डारे॥ ३॥
जो सन्तन के सेवक जगमें, सो मुझ सेवक भारे।
'ब्रह्मानन्द' सन्तजन पलमें भवबन्धन सब टारे॥ ४॥

भक्त-भक्तिमान्

(८७)

मैं तो उन संतन को हूँ दास जिन्होंने मनवा मार लिया॥ टेर॥
मन मार्‌या तन वश किया रे, भया भरम सब दूर।
बाहिर तो कछु दीखत नाहीं, भीतर झलके है नूर॥ १॥
काम क्रोध मद लोभ मारकर, मेटि जगत की आश।
बलिहारी उन संत की रे, प्रगट कियो है परकाश॥ २॥
आपौ त्याग जगत में बैठे, नहीं किसी से काम।
उनमें तो कछु अन्तर नाहीं, संत कहो या चाहे राम॥ ३॥
नरसी के तो सतगुरु स्वामी, दिया अमी रस पाय।
एक बूँद सागर में मिल गई, अब क्या करेगो जमराय॥ ४॥

प्रभुके वचन

(८८)

मेरे हिय महँ गइ है समाय, हो समाय,
भगतों की भाव भरी भगती॥ टेर॥
मैं रीझूँ एक चुलू जल पै, बिक जाऊँ एक तुलसि दल पै।
बिनु प्रेम न सुधा सुहाय, हो सुहाय, भगतों की०॥ १॥
जो मेरो नाम सुमिरि लैगो, भवसागर पार उतर लैगो।
सुमिरन बिनु गौता खाय, हो खाय, भगतों की०॥ २॥

बिदुरानी के छिलका खाऊँ, दुरियोधन के घर नहिं जाऊँ।
गोपियन की छाछ सुहाय, हो सुहाय, भगतों की०॥ ३ ॥
मेरी माया घोर अँधेरी है, पकड़े उनकी मति फेरी है।
तब काल अचानक आय, हो आय, भगतों की०॥ ४ ॥
मेरो प्रेम को पंथ निरालो है, यह जानत जानन हारौ है।
गुरु मारग दियो बताय, हो बताय, भगतों की०॥ ५ ॥

(८९)

क्या कहिये साधो दुनियाँ दुरंगी अनादी॥ टेर ॥
ध्यान करे तो बगुला कहवे, नहिं किये कहत प्रमादी॥ १ ॥
मौन रहे तो गूँगा कहवे, बोले तो कहे बकवादी॥ २ ॥
नम्र रहे तो खुशामदि कहवे, कड़े रहें कहत मिजाजी॥ ३ ॥
सांच कहे तो मूरख कहवे, झूठ कहत कहे पाजी॥ ४ ॥
शांत रहे तो सीतल कहवे, नाहिंत कहत विषादी॥ ५ ॥
अचल राम गुन कैसे सूझे, चश्मा लगा है अपराधी॥ ६ ॥
क्या कहिये साधो दुनियाँ दुरंगी अनादी॥ ७ ॥

असीम कृपा

(९०)

पहली कृपा भई मेरे प्रभु की नर तन दीनानाथ दियो।
पुन्य भूमि भारत में मोकहुँ, कलिजुग माहीं जन्म दियो॥ टेर ॥
दूजी कृपा करी करूनामय, धर्म सनातन पंथ दियो।
वेद पुरान भागवत गीता, रामचरित सो ग्रंथ दियो॥ १ ॥
तीजी कृपा करी मेरे स्वामी, जग सौं सदा बियोग दियो।
जाग्रत करी रुची सतसँग की, संत मिलन को जोग दियो॥ २ ॥
चौथी कृपा करी मेरे दाता, सुमिरन को हरि नाम दियो।
जनम मरन मिट जावे ऐसो, सब साधन को धाम दियो॥ ३ ॥

पंचम कृपा करी परमेश्वर, धर नर तन अवतार लियो।
कर लीला उपदेश बताकर, बहुत बड़ो उपकार कियो॥ ४ ॥
सकें न बरनन शेष शारदा, कृपा तुम्हारी हे घनश्याम।
ऐसे परम कृपालू प्रभु को, कौटि कौटि हम करें प्रनाम॥ ५ ॥

गोविन्दको भजो

(९१)

भज गोविन्दम् भज गोविन्दम्
भज गोविन्दम् जगदाधारम्॥ टेर ॥
परम कृपालुम् परम दयालुम्
परमानंदम् परम उदारम्॥ १ ॥
प्रेम स्वरूपम् छटा अनूपम्
त्रिभुवन भूपम् नर अवतारम्॥ २ ॥
कटि पटपीतम् चरित पुनीतम्
मायातीतम् महिमाऽपारम्॥ ३ ॥
परम मनोरम् जन चित चौरम्
मस्तक मौरम् गिरिवर धारम्॥ ४ ॥
अगुन अरूपम् सगुन स्वरूपम्
धरि नर रूपम् करत बिहारम्॥ ५ ॥

(९२)

यह नैया पार लगा देना, मुरलीवाले श्याम॥ टेर ॥
तुम सब प्रानिन्ह के प्यारे, नहिं जाने लोग बिचारे।
भूलों को पथ दरशा देना, मुरलीवाले श्याम॥ १ ॥
मैं महा कुटिल खल कामी, तुम जानो अंतरयामी।
मोहि अपना समझ निभा लेना, मुरलीवाले श्याम॥ २ ॥
मैं रह नहिं सकूं अकेला, तुम जगतगुरू मैं चेला।
सोया हूँ मुझे जगा देना, मुरलीवाले श्याम॥ ३ ॥

यह नैया बीच फसेगी, तो दुनियाँ तुझे हँसेगी।
तुम अपना बिरद बचा लेना, मुरलीवाले श्याम॥ ४ ॥

(९३)

करौ प्रभु अब सब का कल्याण।
हिंसा राग द्वेष का जग में मेटो नाम निशान॥ टेर ॥
हिन्दू संस्कृति लुप्त हो रही रख लो कृपा निधान।
महा पाप से पीड़ित लोग भये कर दो आप निदान॥ १ ॥
घर घर हो रामायण गीता श्री भागवत पुराण।
घर घर कथा कीरतन होवे आपहि का गुण गान॥ २ ॥
घर घर हो सतसँग हरि चरचा योग भक्ति अरु ग्यान।
बनी रहे इस धरनि मात पर गीताप्रेस दुकान॥ ३ ॥
भाषा वेष जीविका अपनी शुद्ध खान अरु पान।
जाति पांति कुल शील समझ कर कन्या का हो दान॥ ४ ॥
पतिव्रता नारी हो घर घर हरी भक्त संतान।
गौ अरु विप्र अतिथि संन्यासी सबका हो सम्मान॥ ५ ॥
चारौ बरन करे नित पालन अपना धरम प्रधान।
सेवा सबकी करै लखे प्रभु सबमें आप समान॥ ६ ॥
बढ़े परसपर प्रेम प्रीति का हो आदान प्रदान।
राम राज्य घोषित कर सबको कर दो सुखी महान॥ ७ ॥

(९४)

हरि का भजन करो रे प्रानी, दुनियाँ झूठी एक कहानी॥ टेक॥
झूठे जग की झूठी आसा, झूठा इनका खेल तमासा,
पानी का यह बुदबुदासा, कछु नहिं आनी जानी॥ १ ॥
अगनित धनपति हुये जगत में, अगनित हो गये भूप।
राम भजे सो तर गये प्रानी, बाकी के गये डूब।
मिट गइ सबकी नाम निशानी॥ २ ॥

गनिका गीध अजामिल ब्याधा, इन्ह महँ कौन है साधु।
जनम जनम के पापी सबही, तर गये भजन प्रसाद।
भजनकी महिमा वेद बखानी॥ ३ ॥
भजन अकारथ कबहु न जावे, रीझ भजो चाहे खीज।
खेत पड़े सो सब उग जावे, उलटे सुलटे बीज।
भजन की महिमा संत बखानी॥ ४ ॥

(९५)

लोग कहे हरि दूर बसत है, हरी बसे हिरदय माहीं।
अंतर टाटी लगी कपट की, जासौं हरि सूझै नाहीं॥
कर टाटीको दूर अरे नर, कर टाटीको दूर,
कपट तजि सरल होय सोइ हरि पावै।
सरल सुभाव बिना प्रभु तुमको, नहीं नजर हरगिज आवै॥
छोड़ कपट छल छिद्र अरे नर, छोड़ कपट छल छिद्र
कृपा करि शीघ्र मिलेंगे यदुराई॥ १ ॥
किससे कपट करे मन मूरख, किससे कपट करे मन मूरख
जो सबके अंतरयामी।
सकल सृष्टिके करता हरता, मात पिता सबके स्वामी।
त्राहि त्राहि कर टेर अरे नर, त्राहि त्राहि कर टेर,
लगे नहिं देर निकट तेरे साईं॥ २ ॥
सरल भावसे रीझे प्रभुजी, सरल भावसे रीझे प्रभुजी,
कपटीसे अति दूर रहे।
चार बेद छह शास्त्र पढ़े या सकल कला भरपूर रहे।
अहंकार के दुशमन हैं प्रभु, अहंकार के दुशमन हैं प्रभु,
दीनजनों के सुखदाई॥ ३ ॥

सरल भाव से श्रद्धा उपजे, सरल भाव से श्रद्धा उपजे,
निरमल जन हरि को भावै।
सरल होय संतन से पूछे, योग ग्यान भगती पावै।
कर ले प्रभु से प्रेम, अरे नर, कर ले प्रभु से प्रेम अरे नर
तज दे मनकी कुटिलाई॥ ४ ॥

(९६)

मैं तो हूँ भगतन को दास भगत मेरे मुकुटमणी॥ टेर ॥
जो मोहि भजे भजूं मैं वाको हूँ दासन को दास।
सेवा करे करूँ मैं सेवा हो सच्चा बिसवास।
यही तो मेरे मन में ठनी॥ १ ॥
जूठा खाऊँ गले लगाऊँ नहिं जाती को ध्यान।
आचार विचार कछू नहिं देखूं मैं प्रेम सम्मान।
कर राखूं वांने सिरका धणी॥ २ ॥
पग चांपूं अरु सेज बिछाऊँ नौकर बनू हजाम।
हाँकूं बैल बनू गड़वारो बिन तनखा रथवान।
करूँ मैं सेवा जैसी बनी॥ ३ ॥
अपने प्रन को छोड़ भगत को पूरो प्रनहि निभाऊँ।
साधू जाचक बनूं कहे तो बेचे तो बिक जाऊँ।
और तो क्या कहुँ मैं घनी॥ ४ ॥
जो कोइ भगती करे कपट से उसको भी अपनाऊँ।
साम दाम अरु दंड भेदसे सीधे रस्ते पै लाऊँ।
नकल से असल बनी॥ ५ ॥
गरुड़ छोड़ बैकुंठ त्याग कर नंगे पावौं धाऊँ।
जहँ जहँ भीड़ पड़े भक्तन पै तहँ तहँ दौड़यो मैं जाऊँ।
तजूं प्रभुता अपनी॥ ६ ॥

जो कुछ बनी बन रही वामें करता मुझे ठहरावे।
'नरसी' हरि गुरु चरनन चेरो चरनो में सीस नवावे।
पतीवरता एक धणी॥ ७ ॥

(९७)

क्या कर रहे हिन्दू भाई, रहे अपना धरम मिटाई॥ टेर ॥
धरम बिना पथभ्रष्ट हो रहे, अधर्मियोंका स्वांग सजा।
छोड़ा सदगुन सदाचार को, दुराचार का ढोल बजा।
पशू कहो या मानव कह दो, फरक नहीं है राई॥ १ ॥
धोती नहीं किसीके तन पर, लूंगी पेंट पजामा है।
रिषि मुनियों का कहा न माने, वृथा करे हंगामा है।
चोटी कटा कटा कर बन रहे, मुस्लिम और इसाई॥ २ ॥
टी०वी० और सिनेमा भीतर, कलजुग आकर वास किया।
बुरे बुरे चलचित्र दिखाकर, जीवन सत्यानाश किया।
दुरलभ इस मानव शरीर का, अवसर रहे गमाई॥ ३ ॥
बुरे बुरे उपन्यास पत्रिका, पढ़े रात दिन नर नारी।
बिगड़ रही संतान हमारी, बिगड़ रही दुनियाँदारी।
खुद ही गिर पड़ने के खातिर, खोद रहे क्यों खाई॥ ४ ॥
गीता अरु रामायण पढ़ लो, यह संजीवनि बूँटी है।
साधक की अनमोल संपदा, अमर करन की घूँटी है।
जीवन सफल करो तुम अपना, सबकी करो भलाई॥ ५ ॥

(९८)

जनम तेरो बातोंमें बीत गयो रे,
तूँ तो कबहु न कृष्ण कह्यो रे॥ टेर ॥
पाँच बरस को भोलो बालो, अब तो बीस भयो रे।
मकर पचीसी माया के कारन, देश विदेश गयो रे॥ १ ॥

तीस बरष की अब मति उपजी, लोभ बढ़े नित नयो रे।
माया जोड़ी लाख करोड़ी, अजहु न तृप्त भयो रे॥ २ ॥
वृद्ध भयो तब आलस उपज्यो, कफ नित कंठ नयो रे।
साधू संगति कबहु न कीन्ही, बिरथा जनम गयो रे॥ ३ ॥
यो जग सब मतलब को लोभी, झूठो ठाठ ठयो रे।
कहत कबीर समझ मन मूरख, तूँ क्यों भूल गयो रे॥ ४ ॥

(९९)

मनवा तूँ दुख पासी रे।
लियो न हरि को नाम साथे क्या लेजासी रे॥ टेर ॥
दान पुन्य करसी तो जग तन्ने भलो बतासी रे।
बिना भजे भगवान भजन बिन मुकती न पासी रे॥ १ ॥
धरमराज जब लेखो लेसी क्या बतलासी रे।
पड़सी मुगदर मार तन्नें कूण छुटासी रे॥ २ ॥
भाई बंधु कुटुम्ब कबीलो यहाँ रह जासी रे।
निकल जायगो हंस काया काम न आसी रे॥ ३ ॥
सतगुरु कालूराम दया कर ग्यान बतासी रे।
हीन जानकर धन्ना साहिब पार लगासी रे॥ ४ ॥

(१००)

मनवा नायँ बिचारी रे।
थारी म्हारी करतां ऊमर खोदइ सारी रे॥ टेर ॥
गरभवास में कौल कियो तूँ हरिसे भारी रे।
बाहर काढ़ो नाथ भगती करस्यूं थाँरी रे॥ १ ॥
बालपने में लाड़ लडायो माता थारी रे।
भरी जवानी माहिं तिरिया लागे प्यारी रे॥ २ ॥
कौड़ी कौड़ी माया जोड़ी भयो हजारी रे।
दमड़ी दमड़ी खातिर लेवे राड़ उधारी रे॥ ३ ॥

वृद्ध भयो तब यूं उठ बोली घर की नारी रे।
कद मरसी यो बुढ़लो छूटे गैल हमारी रे॥ ४ ॥
रुक गया कंठ दसों दरवाजा मच गइ घ्यारी रे।
कालूराम कहे सुण धन्ना करणीं थारी रे॥ ५ ॥

(१०१)

थारा जावेछे स्वास अमोल, हंसा राम बिना मत बोल॥
गरभवासमें त्रास भइ जब, कीन्हा हरिसे कोल।
पलक न तोकूं भूलूं प्रभुजी, अब काहे काढ़े पोल॥
वाद विवाद वृथा दिन खोवे, हो रहा डावांडोल।
सांची बात गहो कर गाढ़ी, झूठी है झामरझोल॥
अजहूँ कह्यो मान ले मेरो, मन की गुन्ढ़ी खोल।
भावन वेद पुराण पुकारे, कहा बजाऊँ ढ़ोल॥

कलि-ग्रसित मानव

(१०२)

जो ग्रसे हुये कलिकाल के, वे क्या जाने सन्तों को।
जो बनचर माया जाल के, वे क्या जाने सन्तों को॥ टेर ॥
जीवनमुक्त सन्त कहिं जावे, करै अनादर मुख मटकावे।
बिनु सतसंग अकल नहिं आवे, फूटे हैं अक्षर भाल के॥ १ ॥
चोर बजारी करते धन्धा, अर्थ भोग में हो रहे अन्धा।
अंतस भीतर कर लिया गन्दा, मारग पड़े कुचाल के॥ २ ॥
गढ़ गढ़ बातें खूब बनावे, पूजा अपनी ही करवावे।
दौलत मान बड़ाई चाहवे, नौकर हैं धन माल के॥ ३ ॥
स्वारथ काज करे नित झगड़े, अहंकार में रहते अकड़े।
परमारथ का मरम न पकड़े, बरबस ज्यों बैताल के॥ ४ ॥
जो नर पुरुषारथ कर हारे, होत न भव दुख सें छुटकारे।
आरत हो हरि नाम पुकारे, शरण पड़े नन्दलाल के,
तब लखि पावे सन्तों को॥ ५ ॥

भावके भूखे

(१०३)

भाव का भूखा हूँ मैं बस भाव ही एक सार है।
भाव से मुझको भजे तो, उसका बेड़ा पार है॥ टेर॥
अन्न धन अरु वस्त्र भूषण, कुछ न मुझको चाहिये।
आप हो जाये मेरा बस, पूर्ण यह सत्कार है॥ १॥
भाव बिन सूना पुकारे, मैं कभी सुनता नहीं।
भाव की एक टेर ही, करती मुझे लाचार है॥ २॥
भाव बिन सर्वस्व दे डाले तो मैं लेता नहीं।
भाव से एक पुष्प भी दे तो मुझे स्वीकार है॥ ३॥
जो भी मुझमें भाव रखकर, लेते हैं मेरी शरण।
मेरे और उसके हृदय का, एक रहता तार है॥ ४॥
बाँध लेते भक्त मुझको, प्रेम की जंजीर में।
इसलिये इस भूमि पर होता मेरा अवतार है॥ ५॥

प्रभुसे अपनापन

(१०४)

सबसे ऊँची प्रेम सगाई॥ टेर॥
दुर्योधन के मेवा त्यागे साग विदुर घर खाई॥ १॥
जूठे फल शबरी के खाये, बहु बिधि स्वाद बताई॥ २॥
प्रेम के वश नृप-सेवा कीन्ही, आप बने हरि नाई॥ ३॥
राज सुयज्ञ युधिष्ठिर कीन्हो, तामें जूठ उठाई॥ ४॥
प्रेमके वश पारथ-रथ हाँक्यो, भूलि गये ठकुराई॥ ५॥
ऐसी प्रीति बढ़ी वृन्दावन गोपियन नाच नचाई॥ ६॥
'सूर' कूर केहि लायक नाहीं, कहँ लगि करौं बड़ाई॥ ७॥

हरि सुमिरन

(१०५)

तूं सुमिरन कर ले मेरे मना, बीती जात ऊमर हरि नाम बिना॥ टेर॥
पंछी पंख बिना हस्थी दन्त बिना, नारी तो देखो भला पुरुष बिना।
वैश्या को पुत्र पिता बिन हीनों, वैसे ही प्राणी हरि नाम बिना॥ १॥
देहि नैन बिना, रैन चन्द्र बिना, धरती तो देखो भला मेघ बिना।
जैसे पण्डित वेद विहिना, तैसे ही प्राणी हरि नाम बिना॥ २॥
कूप नीर बिना, धेनु खीर बिना, मन्दिर देखो भला दिपक बिना।
जैसे तरुवर फल बिन हीना, वैसे ही प्राणी हरि नाम बिना॥ ३॥
काम, क्रोध, मद, लोभ निवारो, छोड़ो विरोध भाई संत जना।
कह नानक शाह सुनो भगवन्ता, या जग में कोई नहीं अपना॥ ४॥

दिलकी आँख

(१०६)

दिल की आँख उघाड़, अब तूं जाग रे जिया॥ टेर॥
पाप किया तूं आगे भारी, दुःख वियोग भुगते है बिमारी।
भोगे हैं पुण्य पाप तेरा आगला किया॥ १॥
रसना से तू नाम लिया कर, हाथों से कुछ दान किया कर।
संग चले पुण्य पाप तेरा हाथ का किया॥ २॥
इतनी मन तेरे क्यों बेईमानी, भूल गयो तूँ सारँग पानी।
इक पल बैठ एकान्त प्रभु का नाम ना लिया॥ ३॥
अब मनुवा उलटा मत खेलो, राम मिले वो रस्ता ले लो।
मनमें धार विचार, रट लो राम सीया॥ ४॥
कहाँ गया तेरा बाप बडेरा, कहाँ गया सँग साथी तेरा।
करे नहिं सोच विचार, क्यों तेरा फूटग्या हीया॥ ५॥
भज ले रे तूं अन्तरयामी, शिक्षा दे रहे मोहन स्वामी।
रट्यो नहीं हरि नाम, सुधा रस क्यों ना पीया॥ ६॥

भजन करो भाई

(१०७)

जपो राम-नाम सुखदाई, भजन करो भाई,
यह मेला दो दिन का॥ टेर ॥
यह तन है जंगल की लकड़ी, आग लगे जल जाई॥ १ ॥
यह तन है कागज की पुड़िया, हवा लगे उड़ जाई॥ २ ॥
यह तन है फूलोंका बगीचा, धूप पड़े मुरझाई॥ ३ ॥
यह तन है माटीका ढेला, बूँद पड़े गल जाई॥ ४ ॥
यह तन है भूतों की हवेली, मार पड़े भग जाई॥ ५ ॥
यह तन है सपने की माया, आँख खुले कछु नाहीं॥ ६ ॥

सीताराम-राधेश्याम

(१०८)

सीताराम कहो, राधे श्याम कहो मन मेरे
कट जायेंगे शंकट तेरे॥ टेर ॥
प्रभु कैसे मैं तुमको रिझाऊँ, तेरे चरणों में मैं क्या चढ़ाऊँ,
मेरा छोटासा मन, ले लो प्यारे मोहन, ना भुलाना,
पेश करता है तेरा दिवाना॥ सी०॥
आशा दुनियाँ की सब मैंने छोड़ी, तेरे चरणों में प्रीति मैं जोड़ी
अब मैं जाऊँ किधर, छोड़ तेरा ये दर, ना ठिकाना,
पेश करता है तेरा दिवाना॥ सी०॥
तुमने बिगड़ी सभीकी बनाई, आशा दर्शन की मैंने लगाई,
श्यामसुन्दर हरी, सुन लो विनती मेरी, ना भुलाना,
पेश करता है तेरा दिवाना॥ सी०॥

असली सहारा

(१०९)

सहारा पकड़ तूं नाम का, घबरा न किसी से।
श्री कृष्ण कृष्ण कृष्ण कृष्ण, गाले खुशी से॥ टेर ॥
लाया नहीं कुछ साथ न कछु साथ जायगा।
सब छूट जायगा कछु नहिं हात आयगा।
कर सबका भला दिल न दुखा बोल हँसी से॥ १ ॥
मेरा जिसे तूं मानता यहाँ कौन किसी का।
साथी हैं सकल स्वार्थ के न कोइ किसी का।
मत मोह में फँसकर के लगा प्रेम किसी से॥ २ ॥
अवसर जो गया हात से वापिस न आयगा।
जैसा भला बुरा किया वैसा ही पायगा।
कहे शिवप्रसाद अब तो लगा प्रेम हरी से॥ ३ ॥

आलस्य-प्रमादका त्याग

(११०)

सोये पड़े क्यों आज तुम कुछ तो किया करो।
इक राम नाम मंत्र है उसको जपा करो॥टेर॥
साधन करो नित नेम से संध्या किया करो।
मन्दिर में जाके रोज तुलसी दल लिया करो॥ १ ॥
यह भी न तुमसे बन सके तो यह किया करो।
माता पिता की प्रेम से सेवा किया करो॥ २ ॥
यह भी न तुमसे बन सके तो यह किया करो।
मिथ्या बचन को छोड़ सत साधन किया करो॥ ३ ॥
चिरँजी की मानो बात तो यह भी किया करो।
चित मन से सीताराम का सुमिरन किया करो॥ ४ ॥

नीके दिन

(१११)

दिन नीके बीते जाते हैं, तूँ सुमिरन कर ले राम नाम,
सब छोड़ बिषय तज और काम,
तेरे संग चले नहिं एक दाम, जो देते हैं सोइ पाते हैं॥ १॥
लख चौरासी भटकत आया, बड़े भाग मानुष तनु पाया,
राम नाम धन नाहि कमाया, अंत समय पछिताते हैं॥ २॥
यह जग पानी बीच बतासा, मूरख फसे मोह की फासा,
स्वासन की क्या करिये आसा, गये स्वास नहिं आते हैं॥ ३॥
भाई बन्धु कुटुम्ब परिवारा, तूँ किसका है कौन तुम्हारा,
किस कारन हरि नाम बिसारा, दीखत के सब नाते हैं॥ ४॥

मतवारी मैना

(११२)

मतवारी ए मैना बैना कैना नैना नेक निहार।
तूँ तो रामहि राम उचार हे, मतवारी ऐ मैना०॥ टेर॥
मीठा बोलन बोलो मैना, पैला सूँ कर प्यार।
यार न तेरा कोई सँगाती, स्वारथ को संसार हे०॥ १ ॥
तो सिर ऊपर ताक रही है, मौत बड़ी मंझार।
पिंजरा तोड़ तोही लै जासी, खोलेगी नायँ किंवार हे०॥ २ ॥
मौत मिन्नी से उबरी चाहे, हरि चरणां चित धार।
भावन है हरि रच्छक तेरो, और नहीं आधार हे०॥ ३ ॥

भगवन्नाम

(११३)

तूं बोल मेरी रसना हरी हरी॥ टेर ॥
खट रस भोजन अति प्रिय लागे, राम भजन में मरी मरी॥ १ ॥

गरभवास में भगती कबूली, बाहर आयो मति फिरी फिरी॥ २ ॥
पर निन्दा कर पाप कमावे, फल भोगे तूं डरी डरी॥ ३ ॥
चुन चुन कंकर महल चिणावे, मोह ममता में घिरी घिरी॥ ४ ॥
कहत कबीर सुनो भाई साधो, भजन कर्‌यां सूं तरी तरी॥ ५ ॥

भगवन्नाम-महिमा

(११४)

सब हो गये भव से पार प्रभु का नाम लिया।
भक्त हुये ध्रुव बालापन में, करी तपस्या जाकर वन में।
दर्शन दिया कोकिला वन में, होकर गरुड़ सवार॥ १ ॥
राम नाम प्रह्लाद ने गाया, हिरणाकुश ने बहुत सताया।
तब हरि नरसिंह रूप बनाया, प्रकट भये खम्भ फाड़॥ २ ॥
भरी सभा में द्रौपदि टेरी, हे गोविन्द शरण मैं तेरी।
राखी लाज करी नहिं देरी, बढ़ गया चीर अपार॥ ३ ॥
नल अरु नील राम के चाकर, राम नाम लिख दिया शिला पर।
पत्थर तर गये समँदर ऊपर, हो गई सेना पार॥ ४ ॥
तुलसी सूरदास अरु मीराँ, नामदेव रैदास कबीरा।
राम कृष्ण नारायण टेरा, खुल गये मुकती द्वार॥ ५ ॥

तारक-मन्त्र

(११५)

राम नाम तत् सारा सन्तो राम नाम तत् सारा रे॥ टेर॥
बानर रींछ जटायु सबरी भये सकल भव पारा रे।
समँदर ऊपर पत्थर तर गये, रामनाम लिख डारा रे॥ १ ॥
राम नाम से हाथी तर गये, ग्राह से लिया उबारा रे।
राम नाम से मीराँ तर गई, विष अमरित कर डारा रे॥ २ ॥

गनिका और कसाई तर गये, तर गये मच्छी मारा रे।
कोल किरात भील सब तर गये, पापी नीच अपारा रे॥ ३ ॥
राम बिमुख ह्वै कोइ न तरिया, डूब गया मझधारा रे।
'जसवँत' तारक मन्त्र राम यह लागत है मोहि प्यारा रे॥ ४ ॥

संकट कट जायगा

(११६)

मन सीताराम सीताराम रट रे, तेरा संकट जायगा कट रे।
गजराज पुकारे जल में, प्रभु टेर सुनी एक पलमें।
हरि दौड़े भये प्रगट रे॥ १ ॥
हिरणाकुश बहुत रिसाया, प्रह्लाद को बाँध सताया।
जब खम्भ गया था फट रे॥ २ ॥
राणाँ ने जहर मँगाया, चरणाँमृत कह भिजवाया।
मीराँ पी गई गट-गट-गट रे॥ ३ ॥
द्रोपदि दुष्टोंने घेरी, प्रभु आये करी न देरी।
भये वस्त्र हि नागरनट रे॥ ४ ॥
नरसीनें टेर लगाई, सँग बिलखे नानी बाई।
भर दिया माहेरा झट रे॥ ५ ॥

(११७)

भजो रे भैया राम गोविन्द हरी।
जप तप साधन कछु नहिं लागत, खरचत ना गठरी॥ टेर॥
संतत संपति सुख के कारन, जासौं भूल परी॥ १ ॥
गणिका तारी शबरी तारी, गौतम घरनि तरी॥ २ ॥
खग मृग व्याध अजामिल तारे, जिनकी नाव भरी॥ ३ ॥
गज की टेक सुनत उठि धाये, रुके न पलक घरी॥ ४ ॥
और अनेक अधम जन तारे, गिनती न जात करी॥ ५ ॥
कहत कबीर राम नहिं जा मुख, ता मुख धूल भरी॥ ६ ॥

जगत्को हँसने दो

(११८)

तूं तो राम सुमर जग हँसवा दे॥ टेर॥
कोरा कागद काली स्याही, लिखत पढ़त वानें पढ़वा दे॥ १ ॥
हस्थी की चाल चलो मेरे मनवा, जगत् कूकरी को भुसवा दे॥ २ ॥
कहत कबीर सुनो भाई साधो, नरक पचत वाको पचवा दे॥ ३ ॥

बड़ी तलवार

(११९)

हरि भजन बड़ी तलवार, राधे गोविन्दा।
नहिं भजे सो खावे मार, राधे गोविन्दा।
बिन भज्याँ न होय उद्धार, राधे०॥ १ ॥
ध्रुव भगत भज्यो भगवान, राधे गोविन्दा।
वे पायो अविचल धाम, राधे०॥ २ ॥
प्रहलाद भज्यो भगवान, राधे गोविन्दा।
हिरणांकुश खाई मार, राधे०॥ ३ ॥
वीभीषण भज्यो भगवान, राधे गोविन्दा।
रावण नें खाई मार, राधे०॥ ४ ॥
बाइ मीराँ भज्यो भगवान, राधे गोविन्दा।
राणाँ ने खाई मार, राधे०॥ ५ ॥

बद्री विशाल

(१२०)

भज मन बद्री विशाल, नटवर गोपाला॥ टेर॥
कोई कहे थाँने कृष्ण मुरारी, कोई कहे नटवर गिरधारी,
कोई कहे नन्दलाल॥ १ ॥

दुरियोधन के मेवा त्यागे, भूख लगी जब उठकर भागे,
साग विदुर घर खाय॥ २ ॥
केश पकड़ कर कंस पछाड़ा, तपसी बनकर रावन मारा,
भक्तन के प्रतिपाल॥ ३ ॥
मीराँबाई सदन कसाई, हरि के भजन से मुकती पाई,
ऐसे दीनदयाल॥ ४ ॥

भजन बिना व्यर्थ

(१२१)

भजन बिना काहेको देह धरी॥ टेर॥
चटक चटक सों खायो सोयो, सुमिर्‌यो नायँ हरी॥ १ ॥
भूखों को भोजन नहिं दीन्हो, सेवा नायँ करी॥ २ ॥
वाचा देकर बाहिर आयो, पीछें बुद्धि फिरी॥ ३ ॥
श्री भागवत सुनी नहिं काना, झूठी जिकर करी॥ ४ ॥
'सूरदास' भगवन्त भजन बिनु, जननीं भार भरी॥ ५ ॥

दुर्लभ मनुष्य-जन्म

(१२२)

तूने हीरो सो जनम गमायो, भजन बिना बावरा॥ टेर॥
ना तूँ आयो सन्तां शरणे, ना तूँ हरि गुण गायो।
पचि-पचि मर्‌यो बैल की नाईं, सोय रह्यो रे उठ खायो॥ १ ॥
ओ संसार हाट बनिये की, सब जग सौदे आयो।
चातुर माल चौगुना कीन्हा, मूरख मूल गमायो॥ २ ॥
ओ संसार फूल सेमर को, सूवो देख लुभायो।
मारी चोंच निकल गइ रूई, सिर धुन-धुन पछितायो॥ ३ ॥
ओ संसार माया को लोभी, ममता महल चिनायो।
कहत कबीर सुनो भाई साधो, हाथ कछू नहीं आयो॥ ४ ॥

समय भाग रहा है

(१२३)

भजन बिन दिन जावे, दिन जावे, मन हरिगुण क्यों नहिं गावे॥
छिन-छिन करतां पल पल बीते, पल से घड़ी घट जावे।
घड़ी घड़ी करतां पोहोर बदीते, आठ पोहोर घुल जावे॥ १ ॥
तेल फुलेल का मरदन करके, ताते जलसूँ न्हावे।
अंतकाल का देख तमाशा, काल झपट ले जावे॥ २ ॥
सुकरित काम कबहुँ नहिं कीन्हो, मोह माया चित लावे।
साधु सङ्गति में कदे न बैठे, बातें बहुत बणावे॥ ३ ॥
मानुष देही रतन पदारथ, बार बार नहिं पावे।
बालकदास कहे बैरागी, भूलों को समझावे॥ ४ ॥

कुछ काम नहीं आयेगा

(१२४)

प्राणी भज ले, राधेश्याम, काम तेरे कोई न आवेगो॥ टेर॥
देख सब स्वारथ को संसार, पिता माता भ्राता सुत नारि,
तूँ अपने दिल में सोच विचार।
जा दिन हंसो उड़सी वापिस लौट न आवेगो॥ १ ॥
देख सब सुपने को जंजाल, लपेटो ऊपर माया जाल,
हरी को सुमिरन कर ततकाल।
ठाठ धरो रह जाय हाथ मल मल पछितावेगो॥ २ ॥
देह मानुष की तूं पायो कबहुं तूं हरिगुण ना गायो,
करम सुकरित नहिं कर आयो।
भवसागर में पर्‌यो नरक में गोता खावेगो॥ ३ ॥
प्रथम तूं काम क्रोध को मार, दया तूं हिरदे में ले धार,
मिले तोहि निश्चय कृष्ण मुरारि।
कहता राधेश्याम लौटि ना जग में आवेगो॥ ४ ॥

यमसे क्या कहोगे ?

(१२५)

राम गुण गायो नहिं आय करके,
जम्म से कहोगे क्या जाय करके॥ टेर॥
गरभ में देखी नरक निशानी, तब तूं कौल किया था प्राणी।
भजन करूँगा चित लाय करके॥ १ ॥
बालपने में लाड लडायो, मात पिता तन्नें पालणें झुलायो।
समय गमायो खेल खाय करके॥ २ ॥
तरूण भयो तिरिया सँग राच्यो नट मरकट ज्यों निशदिन नाच्यो।
माया में रह्यो है भरमाय करके॥ ३॥
जोबन बीत बुढ़ापो आवे, इन्द्रिय सब शीतल हो जावे।
तब रोवोगे-पछताय करके॥ ४ ॥
वेद पुराण सन्त यों गावे, बार बार नरदेही न पावे।
देवकी तिरोगे हरि गाय करके॥ ५ ॥

निर्धनका धन

(१२६)

माई मेरे निरधन को धन राम॥ टेर॥
खरचे ना खूटे चोर ना लूंटे, भीड़ पड़े आवे काम॥ १ ॥
दिन दिन सूरज सवायो ऊगे, घटत न एक छदाम॥ २ ॥
राम-नाम मेरे हिरदे में राखूँ, ज्यों लोभी राखे दाम॥ ३ ॥
'सूरदास' के इतनी ही पूँजी, रतन मणी से नहिं काम॥ ४ ॥

प्रभुका मङ्गलमय विधान

(१२७)

तर्ज—बोल हरि बोल हरि

सीताराम सीताराम सीताराम कहिये,
जाहि बिधि राखे राम ताहि बिधि रहिये॥ टेर॥

मुख में हो राम-नाम राम-सेवा हाथ में,
तूँ अकेला नाहीं प्यारे राम तेरे साथ में,
विधिका विधान जान हानि लाभ सहिये॥ १ ॥
किया अभिमान तो फिर मान नहीं पायेगा,
होगा प्यारे वही जो श्रीरामजी को भायेगा,
फल की आशा त्याग शुभ काम करते रहिये॥ २ ॥
जिन्दगी की डोर सौंप हाथ दीनानाथ के,
महलों में राखे चाहे झौंपड़ी में वास दे,
धन्यवाद निर्विवाद राम राम कहिये॥ ३ ॥
आशा एक रामजी से दूजी आशा छोड़ दे,
नाता एक रामजी से दूजा नाता तोड़ दे,
साधू सङ्ग राम रङ्ग अङ्ग अङ्ग रङ्गिये,
काम रस त्याग प्यारे राम रस पगिये॥ ४ ॥

अनमोल रत्न

(१२८)

नर तेरा चोला रतन अमोला, बिरथा खोवे मत ना।
बिरथा खोवे मत ना, नींदमें सोवे मत ना॥ टेर॥
तुमको देह मिली है नर की, भगती करी नहीं तूँ हरि की,
सुध बुध भूल गया उस घर की, सुख में सोवे मत ना॥ १ ॥
तेरी पूर्व जन्म की करणीं, तुज को होगी यहाँ पर भरनीं,
ऐसी वेदव्यास ने बरनी, दुख में रोवे मत ना॥ २ ॥
देखे ऋषी मुनी फीकर में, फंस गये माया के चक्कर में,
नैया फँस गई भवसागर में, इसे डुबोवे मत ना॥ ३ ॥
बदरी बाँध कमर हो तगड़ा, आगे जम सें होगा झगड़ा,
सीधा पड़ा मोक्ष का दगड़ा, इत उत जोवे मत ना॥ ४ ॥

चमड़ेका चोला

(१२९)

सोचना विचार बन्दे कौन काम का,
हरि के भजन बिना चोला चाम का।
चोला चाम का रे बन्दा महँगे दाम का॥ हरि के॥ टेर॥
गर्भ वास बीच बन्दे, उलटा झूलता,
बाहर नें निकल हरिका नाम भूलता।
पत्ता ना ठीकाना तेरे असली धाम का॥ हरि के॥ १॥
आवेगा बुढ़ापा तेरा शरीर धूजेगा,
ज्योति पड़े मन्दी ना आँखों से सूझेगा।
भाई ना भतीजा तेरे सुख की बुझेगा,
पड़्यो खटिया के तूं तो बीच जूझेगा।
बाँधले भजन पोट राम-नाम का॥ हरि के॥ २॥
आवेगा परवाना तेरी पेश ना चले,
अन्तकाल बीच दोनों हाथ मसले।
चार जन उठाके तोहे कंधे पे चले,
शमशानां के बीच यह शरीर भी जले।
मती ना बिगाड़ चोला महँगे दाम का॥ हरि के॥ ३॥
पड़ेगी नगारे चोट अन्तकाल की,
ढ़की रह जावे कोठी धन-माल की।
संग ना चलेगा टट्टू घोड़ा पालकी,
गावे दत्तूराम कृपा चन्दूलाल की।
पारासर सन्तान बेटा मुकनाराम का॥ हरि के॥ ४॥

उठो, जागो!

(१३०)

उठ जाग मुसाफिर भोर भई, अब रैन कहा जो सोवत है।

जो सोवत है सो खोवत है, जो जागत है सोइ पावत है॥ टेर॥
टुक नींद से अँखियाँ खोल जरा, अरु अपने रब से ध्यान लगा।
यहाँ प्रीत करन की रीत नहीं, रब जागत है तूँ सोवत है॥ १॥
जो कल करना सो आजहि कर, जो आज करे सो अबही कर।
जब चिड़िया नें चुग खेत लिया, फिर पछिताये क्या होवत है॥ २॥
नादान भुगत अपनी करनी, ऐ पापी पाप में चैन कहाँ।
जब पाप की गठरी सीस धरी, अब सीस पकड़ क्यों रोवत है॥ ३॥

सांसारिक चाहनासे पतन

(१३१)

भजन बनत नाहीं, मनवा सैलानी।
मनवा सैलानी यह जीव अभिमानी॥ टेर॥
खट्टा मिठा भोजन चहिये, और ठण्डा पानी।
चाबने को पान चहिये, और पीकदानी॥ १॥
सेज तो सुरंगी चहिये, रूपवन्ती रानी।
पूत तो सपूत चहिये, कुल की निशानी॥ २॥
हस्थी चहिये घोड़ा चहिये, तम्बू आसमानी।
किला तो अटूट चहिये, तोप धूलधानी॥ ३॥
बालापन बीत गयो, बीती जवानी।
अब तो बुढ़ापौ आयो, लागी खैंचातानी॥ ४॥
कहत मलूकदास, छोड़ दे पराई आस।
देखो भोली दुनियाँ कैसी भरम भुलानी॥ ५॥

ना अपनी; ना अपने बापकी

(१३२)

सुन मन सैलानी, काया तेरी ना तेरे बाप की॥ टेर॥
आया था तूँ क्या करने को, अब करता है क्या।

माया जाल के बीच फँसा क्यों, बाँधे गठरी पाप की॥ १ ॥
उलटे मस्तक रहा गरभ में, कौल किया ईश्वर से।
नरक कुण्ड से मोहि निकालो, याद करूँगा आप की॥ २ ॥
क्या अभिमान करे नर मूरख झूठा सकल पसारा।
काया कंचन राख मिलेगी, लगे काल के थाप की॥ ३ ॥
नेक नियत के मारग चल तूँ धरम करम के साथ।
भँवर गुफा में गुरू विराजे, करले बात मिलाप की॥ ४ ॥
अब मन सोच समझ ले प्रानी, लीजे हियमहँ धार।
राम नाम से प्रीत लगा ले, रट माला इस जाप की॥ ५ ॥
काया खेताराम बीज दे ऊगे नफा अपार।
मुक्त होइ यह जीव देह तजे जैसे कंचुलि साँप की॥ ६ ॥

शरीरकी नश्वरता

(१३३)

क्या तन माँजता रे एक दिन माटी में मिल जाना॥ टेर ॥
माटी ओढ़न माटी बिछावन, माटी का सिरहाना।
माटी का एक बूत बनाया, जामें भँवर लुभाना॥ १ ॥
एक दिन दुलहा बने बराती, बाजत ढ़ोल निशाना।
एक दिन जंगल बीच मसाणां, कर सीधे पग जाना॥ २ ॥
बैठ सदा सतसंगत करना, प्रभु का ध्यान लगाना।
सबका स्वामी सिरजन हारा, उनका हुकम बजाना॥ ३ ॥
करना है सो अब ही कर ले, नहिं तो फिर पछिताना।
कहत कबीर सुनो भाई साधो, फेर जनम नहिं पाना॥ ४ ॥

दो दिनका मेला

(१३४)

अरे मन ये दो दिन का मेला रहेगा।
कायम न जग का ये झमेला रहेगा॥ टेर॥

किस काम का ऊँचा महल जो तूँ बनायगा।
किस काम का लाखों का धन जो तूँ कमायगा।
रथ हाथियों का झुण्ड भी किस काम आयगा।
जैसा यहाँ तूँ आया था वैसा ही जायगा।
तेरी सफर में सवारी के खातिर कन्धों पै ठठरी का ठैला रहेगा॥ १ ॥
कहता है ये दौलत कभी आयेगी मेरे काम।
यह तो बता धन भी कभी किसका हुआ गुलाम।
समझा गये उपदेश हरिश्चन्द्र कृष्ण राम।
दौलत तो सँग रहती नहीं रहता हरी का नाम।
छूटेगी सम्पति यहीं की यहीं पर, तेरी कमर में ना अधेला रहेगा॥ २ ॥
साथी हैं मित्र गंगा के जल बिन्दु पान तक।
अर्धांगिनी बढ़ेगी तो केवल मकान तक।
परिवार के सब लोग चल देंगे मसान तक।
बेटा भी हक निभायेगा तो अगनिदान तक।
इससे तो आगे भजन ही है साथी हरि के भजन बिन अकेला रहेगा॥ ३ ॥

बहके हुए मत फिरो

(१३५)

क्यों बहक्या बहक्या फिरो मगर मस्ती से।
आवेगा जम्म ले जाय जबरदस्ती से॥ टेर ॥
तूं राम सुमिरले सुकरित कर ले मूँजी।
तेरी धरी रहेगी सङ्ग चले नहिं पूँजी।
तूँ क्यों करता अनरीत तुझे क्या सूझी।
तूँ इस काया को छोड़ ठौड़ कर दूजी।
पड़ गई अगर है गाँठ मगर हस्ती से॥ १ ॥

तूँ कर आया वहाँ कवल भूल मत भाया।
यहाँ बिसर गयो तूं देख राम की माया।
माया के जाल में पड़ा पड़ा ललचाया।
नहिं सुकरित कीन्हा नहीं राम गुण गाया।
वहाँ साहिब पूछे जबर बहुत तस्ती से॥ २॥
यह लहर लोभ की लख चौरासी धारा।
भये पार भक्त अरु डूबे पापी सारा।
रख दया धर्म तो होय तेरा निसतारा
निन्दा करने से चढे पाप सिर भारा।
अब अन्न जल तेरा ऊठ चला बस्ती से॥ ३॥
माया के जाल में होता है नित फरजी।
कह लक्ष्मणदास दुनियाँ मतलब की गरजी।
पद कथे दास भगवान् राम की मरजी।
चोला है पुराणा कब लगि सींवे दरजी।
इस सन्त सभी के बीच बचो गस्ती से॥ ४॥

कुछ भी स्थिर नहीं

(१३६)

कहाँ माँगूं कछु थिर ना रहाई।
देखत नयन चल्यो जग जाई॥ टेर॥
आठ पहरियाँ रहे सँग लागी,
प्रेत समझ कर तिरिया भागी॥ १॥
जा मुख चाबत पान की बीड़ी,
वा मुख बड़-बड़ निकसत कीड़ी॥ २॥
बाँधत पाग सँवारत बागा,
उस सिर ऊपर बैठत कागा॥ ३॥

तेल फुलेल लगावत अंगा,
सोइ तन जावे काठ के संगा॥ ४॥
इक लख पूत सवा लख नाती,
तेहि रावण घर दीया न बाती॥ ५॥
कहत कबीर सुनो मेरे गुनियाँ,
आप मरे पीछें मर गई दुनियाँ॥ ६॥

शरीरधारी सब दुःखी

(१३७)

तन धर सुखिया कोई नहीं देख्या,
जो देख्या सोई दुखिया वे।
उदय-अस्त की बात कहत हूँ, सबका किया है विवेका वे॥ टेर॥
शुक आचारज दुख के कारण, गरभ में माया त्यागी वे।
घाटाँ-घाटाँ सब जग दुखिया, क्या ग्रस्थी वैरागी वे॥ १॥
साँच कहूँ तो कोई नहीं माने, झूठी कहि नहिं जाई वे।
ब्रह्मा विष्णु महेश्वर दुखिया, जिण यह सृष्टि रचाई वे॥ २॥
जोगी दुखिया जंगम दुखिया, तपसी को दुख दूना वे।
आशा तृष्णां सब घट व्यापे, कोई महल नहिं सूना वे॥ ३॥
राजा दुखिया परजा दुखिया, रंक दुखी धन रीता वे।
कहत 'कबीर' सभी जग दुखिया, साधू सुखी मन जीता वे॥ ४॥

संसारकी नश्वरता

(१३८)

यो जग झूठो रे संसार, बन्दा थारी नीन्दड़ली ने निवार॥ टेर॥
ऊगे सोई आँथवे रे, फूले सो कुम्हलाय।
चिणिया देवल गिर पड़े रे, जनमे सो मर जाय॥ १॥

जासौं हँस हँस बोलता रे, दिनमें सौ सौ बार।
वे माणस किण देस गया रे, सुरता कर तूँ विचार॥ २ ॥
सोने का गढ़ लङ्क बनाया, हीरों का दरबार।
रति भर सोनूं ना गयो रे, रावण मरती बार॥ ३ ॥
हाथाँ परबत तोलता रे, धरती ना झेले भार।
वे माणस माटी मिल्या रे, भाँडा घड़त कुम्हार॥ ४ ॥
सेर सेर सोनू पहरती रे, मोत्याँ मरती भार।
कोइ एक झोलो बह गयो रे, घर घर की पणिहार॥ ५ ॥
या जगमें तेरो कोई नहिं साथी, स्वारथ को संसार।
मोह मायामें भूल गयो तूँ, कोइ नहीं चाले लार॥ ६ ॥
ढ़ाई अक्षर प्रेमका रे, कृष्ण नाम तत्सार।
'बाई मीराँ' के प्रभु गिरधर नागर, हरि भज उतरो पार॥ ७ ॥

जमाखोरी

(१३९)

माल जिन्होंने जमा किया, बनजारे हारे जाते हैं॥ टेर ॥
भाई-बन्धु कुटुम्ब कबीले, दावा कर-कर खाते हैं।
जभी मुसाफिर मारा जावे, कोई काम न आते हैं॥ १ ॥
साईं का रस्ता बिनु जाने, और राह भटकाते हैं।
इन रस्तों के बीच मुसाफिर, अकसर मारे जाते हैं॥ २ ॥
ऊँचे नीचे महल बनावे, बैठे समय बीताते हैं।
राम-नाम धन नहीं बटोरा, हात पसारे जाते हैं॥ ३ ॥
अगन पलीता राज दण्ड अरु, चोर लूँट ले जाते हैं।
राम-नाम पर कभी न देता, माल जँवाई खाते हैं॥ ४ ॥
भाई बन्धू नाती उस दिन, सभी अलग हो जाते हैं।
कहत 'कबीर' सुनो भाई साधो, अपने हाथ जलाते हैं॥ ५ ॥

चेतावनी

(१४०)

हाकिम आया हवालदार छोड़ नगरी।
छोड़ नगरी रे हंसा छोड़ नगरी॥ टेर ॥
जमका दूत लेन जब आवे, हंसो छुपे कोटड़ी कोटड़ी॥ १ ॥
दोय घड़ी ठहरो जमराजा, माया पड़ी है म्हारी बिखरी॥ २ ॥
मैं जाण्यो काया संग चलेगी, जोड़ धरी दमड़ी दमड़ी॥ ३ ॥
ऐसी मार पड़ेगी तन पर, उखड़ जाय चमड़ी चमड़ी॥ ४ ॥
तुलसीदास भजो भगवाना, हरिके भजन सों काया सुधरी॥ ५ ॥

वैराग्यकी मस्ती

(१४१)

वाह वाह रे मौज फकीरान्दी॥ टेर॥
कभी चबावे चना चबेना, कभी लहरियाँ खीरान्दी॥
कभी तो ओढ़े साल दुसाले, कभी गुदड़ियाँ लीरान्दी॥
कभी तो सोवे रंग महल में, कभी तो गली अहीरान्दी॥
मंग तंग के टुकड़े खान्दे, चाल चले है अमीरान्दी॥
शाह हुसेन फकीर साईंदा सीख लगी गुरु पीरान्दी॥

भूलिये मत

(१४२)

जब तलक पकड़ा सहारा जगत का।
क्यों वृथा बाना बनाया भगत का॥ टेर ॥
आश कर संसार की तूँ घुट रहा।
फिर भी दर दर भटकना नहिं छुट रहा॥ १ ॥

जब तलक अधिकार धन की लालसा।
तब तलक भटकत फिरे कंगाल सा॥ २ ॥
जब तलक सुख भोग में लेता मजा।
तब तलक मिटती न फाँसी की सजा॥ ३ ॥
जब तलक भूखा है आदर मान का।
तब तलक साबुन लगे नहिं ज्ञान का॥ ४ ॥
छोड़ मैं मेरे की झूठी कलपना।
मान कहना है इसीमें भलपना॥ ५ ॥
फोड़ दे भाँडा भरा अभिमान का।
जाग उठ खतरा है तेरी जान का॥ ६ ॥
संत कहते खोल पड़दा कान का।
भूल मत तूँ अंश है भगवान का॥ ७ ॥

जागृति

(१४३)

जाग गया फिर सोना क्या रे।
जो नर तन देवन को दुरलभ, सो पाया फिर रोना क्या रे॥
ठाकुर सौं कर नेह बावरे, इन्द्रिन्ह ते सुख होना क्या रे॥
जब वैराग्य ग्यान धन पाया, तब चान्दी अरु सोना क्या रे॥
दारा सुअन सदन बिच परि के, भार सभी का ढोना क्या रे॥
हीरा हात अमोलक आया, काँच किरिच में खोना क्या रे॥
मुहँ माँगा दाता जब देवे, जन जन का मुख जोना क्या रे॥
जो तन मन हरि रंग भिगोया, और के रंग भिगोना क्या रे॥
गंगा जल तन मल मल धोया, और नीर से धोना क्या रे॥
जिन्ह नैनन में नींद घनेरी, तकिया और बिछौना क्या रे॥
कहत कबीर उदर भर पूरा, मीठा और सलौना क्या रे॥

फकीरी

(१४४)

मन लाग्यो मेरो यार फकीरी में॥ टेर ॥
जो सुख पायो राम भजन में, सो सुख नाहिं अमीरी में॥ १ ॥
भला बुरा सबका सुनि लीजे, करि गुजरान गरीबी में॥ २ ॥
प्रेम नगर में रहनि हमारी, भलि बनि आई सबूरी में॥ ३ ॥
हात में कुण्डी बगल में सोंटा, चारौं दिसिहि जगीरी में॥ ४ ॥
आखिर यह तन खाख मिलेगा, काहे फिरत मगरूरी में॥ ५ ॥
कहत कबीर सुनो भाई साधो, साहिब मिलत सबूरी में॥ ६ ॥

रमता योगी

(१४५)

मैं तो रमता जोगी राम, मेरा क्या दुनियाँ से काम॥ टेर ॥
हाड़ मांस की बनी पुतलियाँ, ऊपर जड़िया चाम।
देखि देखि सब लोग रिझावे, मेरा मन उपराम॥ १ ॥
माल खजाना बाग बगीचा, सुन्दर महल मुकाम।
एक पलक में प्रलय मचेगी, चले न संग छदाम॥ २ ॥
दिन दिन पल पल छिन छिन काया, छीजत जात तमाम।
ब्रह्मानन्द भजन कर प्रभु का, पावौं मैं विश्राम॥ ३ ॥

फकीरी

(१४६)

लीवी है फकीरी फिकर न करना, ध्यान धणीं का धरना वे।
ममता मान बड़ाई त्यागो, रहो सतगुरुजी के शरणाँ वे॥ टेर ॥
क्या बस्ती क्या परबत जंगल, निरभै निशंक विचरणाँ वे।
राजा रंक एक कर जाने, पत्थर और सुबरणाँ वे॥ १ ॥

कबहुक सहज पटम्बर अम्बर, कबहु भूमिपर गिरना वे।
गहो इक साँचरु सील सबूरी, अजर पियाला जरना वे॥ २ ॥
पर इच्छा के षटरस भोजन, तातें छूधा हरणाँ वे।
रूखा सूखा टूका खाकर, इस बिध ऊदर भरना वे॥ ३ ॥
हरदम हेत चेत घट भीतर, बाहर भटक नहिं मरणां वे।
होय उदास त्याग गृह बन्धन, ता सँग लाग न जरणां वे॥ ४ ॥
मात पिता सुत भाई बन्धू, मोह फास नहिं परना वे।
'परसराम' इक राम सुमिर ले, चौरासी नहिं फिरना वे॥ ५ ॥

वैराग्य

(१४७)

मन रे अब तूं जग सूँ छूटो।
सीस उघाड़े गल बिच कंथा, कर में कमँडल फूटो॥ टेर ॥
फाटा पाँव मैल तन ऊपर, उघरत नाहीं अँखियाँ।
मतवाले ज्यों झूमत डोले, एक न माने सँकियाँ॥ १ ॥
ऐसा होय चला बस्ती में, भिक्षा कारज डोले।
पाँच सात छोरा चौगड़ दे, बैंडो कहि कहि बोले॥ २ ॥
ऐसी बिधि बिचरे जगमाहीं, संग न कोई साथी।
धत्ता धूत वैराग इसी बिच, ज्यों मद छकियो हाथी॥ ३ ॥
छोड़ा स्वाद दिया तन भाड़ा, राम नाम लव लाया।
तुलसीदास गुरू परतापै, यों अमरापुर पाया॥ ४ ॥

वैराग्यका नशा

(१४८)

मन रे निज वैरागी होना।
राव रु रंग एक कर मानो, ज्यों कंकर त्यों सोना॥ टेर ॥

तज पुर वास उदासी बिचरो, मत कोई बाँधो भवना।
गिरि तरु मढ़ि समसाना में रहिये, के कोई देवल सूना॥ १ ॥
भूख लगे तब भिक्षा करना, कर का कर लेवो दौना।
सीत निवारन जीरन कंथा, तापर थेगल जूना॥ २ ॥
आशा तृष्णां मैल निवारो, हरि भज हिरदय धोना।
जब दिल पाक दयानिधि पावो, गावे बड़े बड़े मौना॥ ३ ॥
तन मन जीति प्रीति सतगुरु से, धरिये ध्यान अखौना।
'रामाजन' बैरागी बोले, रामचरणजी का छौना॥ ४ ॥

(१४९)

बाबा असल फकीरी झेल।
लटका झटका काम न आवे बाजीगर का खेल॥ टेर ॥
जग प्रपंच में पड़कर प्यारे पापड़ तूं मत बेल।
आदर मान देख मत भूले निकल रहा है तेल॥ १ ॥
कंचन कामिनि दुश्मन तेरे मत पड़ इनके गैल।
जीवन मुक्त संत इक स्वर से कर रहे हेला हेल॥ २ ॥
मत करना अभिमान त्याग का नीचे रहा ढ़केल।
'श्यामसखा' कर जोड़ कहत है कर ले प्रभु से मेल॥ ३ ॥

(१५०)

बाबा असल फकीरी धार।
बड़े धणी का लेकर शरणा राग द्वेष को मार॥ टेर ॥
कफनी बाँध कमर कस करड़ी हो घोड़े असवार।
साहिब का घर दूर नहीं है बढ़ आगे डग चार॥ १ ॥
थूक दिया फिर अब क्यों चाटे आवे कष्ट हजार।
ऊँखल में जब शीश दिया तो मरना कर स्वीकार॥ २ ॥
सुत दारा कुटुम्ब में फसकर जीना है धिक्कार।
'श्यामसखा' विश्वम्भर रक्षक चिन्ता मत कर यार॥ ३ ॥

(१५१)

वाद विवाद अखाड़ा कुस्ती कर ले बाबा करले।
हुज्जत अपनी काम न आवे परमेश्वर सों डरले॥
झोली झंडा लेकर चाहे भेष फकीरी धरले।
बिनु बैराग न बंधन छूटे खलक मुलक में फिरले॥

(१५२)

तप्पा तान मिलावे ऐसी लोग बजावे ताली।
ऊपर ताला गोदरेज का भीतर बगसा खाली॥
खटनी कर नहिं खायो चाहवे भेष फकीरी धार्‍यो।
भीतर भरी जगत की आशा साधू स्वांग बिगार्‍यो॥
मुकती की जुगती नहिं जानी बिषयन्ह महँ लपटायो।
'श्यामसखा' दुबिधा में फसकर मानुष जनम गमायो॥

(१५३)

गर यार की मरजी हुइ सर जोड़ के बैठें।
घर बार छुड़ाया तो वहीं छोड़ के बैठें॥
मोड़ा है वो जिधर वहीं मुख मोड़ के बैठें।
गुदड़ी जो सिलाई तो वहीं ओढ़ के बैठें॥
गर शाल ओढ़ाई तो उसी शाल में खुश हैं।
पूरे हैं वही मर्द जो हर हाल में खुश हैं॥

(१५४)

गर खाट बिछाने को मिली खाट पै सोयें।
दूकाँ मे कहा सो तो वो जा हाट में सोयें॥
रस्ते में कहा सो तो वो जा बाट में सोयें।
गर टाट बिछाने को दिया टाट पै सोयें॥
औ खाल बिछा दी तो उसी खाल में खुश हैं।
पूरे हैं वही मर्द जो हर हाल में खुश हैं॥

(१५५)

साधो जीवत ही करु आसा।
मूवे मुकति कहे गुरु स्वारथी, ताको कहा बिसवासा॥ टेर॥
मन हीं बंधन मन हीं मुकती, मन का सकल तमासा।
जो मन को अपना करि माने, ताहि देत बहु त्रासा॥ १॥
जो कछु दरसे भाव न ताको, ज्यों सुपने जग भाषा।
परम ब्रह्म चेतन अबिनासी, घट में जाहि निवासा॥ २॥
जीवत सूझे जीवत बूझे, जीवत हो भ्रम नासा।
कहत कबीर दया सतगुरु की, मुकती है तोहि पासा॥ ३॥

ठगणीं

(१५६)

क्या नैणाँ ठमकावे ठगणी, कबिरो हात न आवे जी॥ टेर॥
इन्द्रलोक की दोय अपसरा, गल मोतियन का हारा जी।
जाके मनमें ऐसी आवे, कबीरो करूँ भरतारा जी॥ १॥
रूपो पहरे रूप दिखावे, सोनू पहर रिझावे जी।
हम यहाँ बैठे नङ्गा जोगी, तुझको शरम न आवे जी॥ २॥
जात जुलाहो नाम कबीरो, मैं काशी को बासी जी।
मेरे तो मनमें ऐसी आवे, एक मात एक मासी जी॥ ३॥
अम्बर बरषे धरती भीजे, पत्थर को काईं भीजे जी।
नाटक चाटक करो घणेरा, कबिरो कबहुँ न रीझे जी॥ ४॥
सतगुरु म्हारा पुरा पढ़ाया, बाँध्या काचे धागे जी।
रामानन्द का भणे कबीरा, जल बिच आग न लागे जी॥ ५॥

अमूल्य समय

(१५७)

दिन नीके बीते जात सजन कर हरिसे नेहरवा॥ टेर॥
घरि घरि घटत जात तन जैसे काचा गागरवा।
प्रान तजत नहिं संग चलेगा, करमें एक करवा॥ १॥

निसदिन राम नाम जप लीजे, हिय के मल हरवा।
पाहन तरे नीर पर हो गये पानन ते हरवा॥ २ ॥
सदा समीप बसे हरि तेरे, सरवन्ह के सरवा।
टेर सुनत तो ऊपर ढ़रि हैं, जैसे बादरवा॥ ३ ॥
अंतरजामी प्रान पिया प्रभु, पलक न बीसरवा।
जन भावन हरि सांचे साजन, सुख के सागरवा॥ ४ ॥

भक्तकी प्रार्थना

(१५८)

दीन दयाल दयानिधि स्वामी, कौन भाँति मैं तुम्हें रिझाऊँ॥ टेर ॥
तव चरणन से गंगा निकसी, और शुद्ध जल कहाँ से लाऊँ।
कामधेनु सुरतरू तुम्हारे, कौन पदारथ भोग लगाऊँ॥ १ ॥
चार बेद प्रभु तुमसे प्रगटे, और कहा मैं पाठ सुनाऊँ।
अनहद बाजे बजत तुम्हारे, क्या मैं शंख मृदङ्ग बजाऊँ॥ २ ॥
कौटि भानु तेरे नखकी शोभा, दीपक ले प्रभु क्या दिखलाऊँ।
लक्ष्मि तब चरणन की चेरी, आन द्रब्य क्या भेंट चढ़ाऊँ॥ ३ ॥
तुम तिरलोकी करता हरता, छोड़ तुम्हें प्रभु कौन पै जांऊँ।
'सूरश्याम' हरि विपति विदारण, मन वांछित प्रभु तुमसे पाऊँ॥ ४ ॥

भगवान्‌का आश्वासन

(१५९)

सदा तुम मुझसे कहते हो, तुम्हें कैसे रिझाऊँ मैं।
सुनो मेरे रिझाने का, सरल रस्ता बताऊँ मैं॥ टेर॥
रिझाया था मुझे भिलनी, खिलाकर बेर जंगल के।
लगाया भोग उस दिनका, कभी भी नां भुलाऊँ मैं॥ १ ॥
रिझाना जो मुझे चाहे, विदुर से पूछ लो रस्ता।
सुदामा की झपट गठरी, खड़ा चावल चबाऊँ मैं॥ २ ॥

न रीझूँ गान गप्पों से, न रीझूँ तान टप्पों से।
बहा दो प्रेम के आँसू, पिघल बस उस से जाऊँ मैं॥ ३ ॥
न पत्थर का मुझे समझो, नरम हूं मोम से बढ़कर।
लगे 'तुलसी' लगन सच्ची, सहज ही उसको पाऊँ मैं॥ ४ ॥

एक भरौसो

(१६०)

और नहीं कोई कामके, मैं तो भरौसे अपने रामके॥
जो माँगू सो देत पदारथ, और देत सुख धाम के॥
दोऊ अक्षर सब कुल तारे, वारि जाऊँ उस नाम के॥
तुलसीदास आस रघुबर की, और देव सब दाम के॥

हर हर गंगे

(१६१)

तिहारो दरश मोहि भावे, श्री गंगा मैया॥ टेर ॥
हरिके चरण से प्रगटी हे मैया, शंकर शीश चढ़ावे॥ १ ॥
सुर नर मुनि तेरी करत वीनती, वेद विमल जस गावे॥ २ ॥
जो गंगा मैया तेरो जल पीवे, भवसागर तिर जावे॥ ३ ॥
जो गंगाजी में स्नान करे नित, फेर जनम नहिं पावे॥ ४ ॥
दास नारायण शरण तिहारी, जनम जनम जस गावे॥ ५ ॥

तुलसीजीसे प्रार्थना

(१६२)

नमो नमो तुलसी महारानी, नमो नमो हरि की पटरानी॥ टेर॥
जाके दरस परस अघ नासे, महिमा वेद पुराण बखानी॥
साखा पत्र मञ्जरी कोमल, श्रीपति चरण-कमल लिपटानी॥
धन्य तुलसि पूरण तप कीन्हा, सलिगराम भई मन-भानी॥

शिव सनकादिक अरु ब्रह्मादिक, खोजत फिरत महा मुनी ज्ञानी॥
छप्पन भोग धरे हरि-आगे, बिनु तुलसी प्रभु एक न मानी॥
धूप दीप नैवेद्य आरती, पुष्पन की वरषा वरसानी॥
प्रेम प्रीत कर हरि वश कीन्हे, साँवरि सूरत हृदय समानी॥
मीराँ के प्रभु गिरधर नागर, भक्ति दान दीजे महारानी॥

सालिगराम-पूजन

(१६३)

सालिगराम सुनो विनती मोरी, यह वरदान दया कर पाऊँ॥ टेर॥
आप विराजो रतन सिंहासन, झालर शंख मृदङ्ग बजाऊँ।
धूप दीप तुलसी की माला, वरण वरण का पुष्प चढ़ाऊँ॥ १ ॥
जो कुछ अहार मिले प्रभु मोकूँ, भोग लगाकर भोजन पाऊँ।
छप्पन भोग छतीसौं मेवा, प्रेम सहित मैं तुम्हें जिमाऊँ॥ २ ॥
एक बूँद चरणामृत लेकर, कुटुम्ब सहित बैकुण्ठ पठाऊँ।
जो कुछ पाप किया काया से, दे परिकम्मा शीश नवाऊँ॥ ३ ॥
डर लागत मोहि भव सागर को, जमके द्वारे प्रभु मैं नहिं जाऊँ।
राम प्रताप कहे कर जोड़े जनम जनम को दास कहाऊँ॥ ४ ॥

मीठी-सी याद

(१६४)

तुहीं तुहीं याद मोहि आवे रे दरद में॥ टेर॥
लख चौरासी भटकत भटकत,
भटक भटक मर जावे रे दरद में॥ १ ॥
सुख संपति का सब कोई संगी,
दुखमें निकट नहीं आवे रे दरद में॥ २ ॥

भाई बन्धू कुटुम्ब कबीलो,
भीड़ पड़े भग जावे रे दरद में॥ ३ ॥
साह हुसेन फकीर साईं दा,
हरष निरखि गुन गावे रे दरद में॥ ४ ॥

प्रार्थना

(१६५)

मैं तो नहीं हूँ तनमें यह चेतना तुम्हारी।
बसमें नहीं है मेरे यह इन्द्रियाँ तुम्हारी॥ टेर॥
सुखमें बना हूँ भोगी दुखमें बना हूँ रोगी।
तुमहीं बनाओ जोगी मैं हूँ शरण तुम्हारी॥ १ ॥
भयभीत हो रहा हूँ घबरा के रो रहा हूँ।
पाया वो खो रहा हूँ रक्षा करो मुरारी॥ २ ॥
मैं दीन हूँ न टारो हे नाथ तुम उबारो।
दृष्टी कृपा की डारो जय हो सदा तुम्हारी॥ ३ ॥
बेगी सँभाल लीजे चरनों का दास कीजे।
गोपी को आप दीजे निज भक्ति यह तुम्हारी॥ ४ ॥

तेरी शरण पड़ा हूँ

(१६६)

तेरी शरन पड़ा हूँ, मुजको तो क्या फिकर है।
तेरा ही गीत गाऊँ, दूजा नहीं जिकर है॥ टेर॥
जो दीखता जगत में, खाता है काल सबको।
वह काल उनसे डरपै, जिस पै तेरी महर है॥ १ ॥
मैं हूँ सदा ही तेरा, बिन मोल का हूँ चेरा।
कुछ भी करो करा लो, मेरा नहीं उजर है॥ २ ॥

व्यापक सभी जगत में, तूँ हीं झलक रहा है।
तुमको न कोइ जाने, सबकी तुम्हें खबर है॥ ३ ॥
तेरा ही अंश हूँ मैं, हकदार तेरे दर का।
तेरी ही गोदमें हूँ, अब ना किसी का डर है॥ ४ ॥

लज्जा आपकी ही जावेगी

(१६७)

जावेगी लाज तिहारी हो नाथ मेरो क्या बिगरेगो॥ टेर ॥
नीति करी बदनीति सभामें, धरनि धरम सुत हारी हो।
हट गयो तेज प्रबल पारथ को, भीम गदा महि डारी हो॥ १ ॥
सूर समूह सभी मिल बैठे, बड़े बड़े प्रण धारी हो।
शकुनि दुशासन कर्ण दुर्योधन, सब मिल कुबुद्धि बिचारी हो॥ २ ॥
मो पति पाँच पाँच के तुम पति, अब पत जावेगी थाँरी हो।
उन पाँचों ने त्याग दई है, तुम मत त्यागो बनवारी हो॥ ३ ॥
आप तो दीनानाथ कही जो, मैं हूँ दीन दुखारी हो।
जैसे जल बिन मीन तड़फती, सो गति भई है हमारी हो॥ ४ ॥
अब लगि तो कछु बिगड़्यो नाहीं, खेंचत चीर पुकारी हो।
सूर के स्वामी लाज मरोगे, देखोगे द्रुपदा उघारी हो॥ ५ ॥

प्रभुके भरोसे निश्चिन्त

(१६८)

मन तूँ क्यों पछितावे रे।
सिरपर श्री गोपाल बेड़ा पार लगावे रे॥ टेर ॥
निज करनीं को याद करूँ जब जिव घबरावे रे।
प्रभु की महिमा सुन सुन मनमें धीरज आवे रे॥ १ ॥
शरणागत की लाज तो सबही ने आवे रे।
तीन लोक को नाथ लाज हरि नायँ गमावे रे॥ २ ॥

जो कोइ अनन्य मनसे हरि को ध्यान लगावे रे।
वाके घर को योग क्षेम हरि आप निभावे रे॥ ३ ॥
जो मेरा अपराध गिनो तो अन्त न आवे रे।
ऐसो दीन दयाल हरी चित एक न लावे रे॥ ४ ॥
पतित उधारन विरद हरि को, वेद बतावे रे।
मो गरीब के काज विरद हरी नायँ लजावे रे॥ ५ ॥
महिमा अपरम पार तो सुर नर मुनि गावे रे।
ऐसो नन्दकिशोर भगत की ओड़ निभावे रे॥ ६ ॥
वो है रमानिवास भगत की त्रास मिटावे रे।
तूँ मत होय उदास कृष्ण को दास कहावे रे॥ ७ ॥

परम सेवासे कल्याण

(१६९)

ले लो! ले लो! सज्जन वृन्द, लाभ सेवा का बड़ भारी!
लाभ सेवा का बड़ भारी, लाभ सेवा का बड़ भारी॥ ले लो॥ टेर ॥
करो नित अन्न वस्त्र जल दान, करो सब जगका हित सम्मान।
बचावो पशु-पक्षिन के प्राण, गरीब अनाथों को दो स्थान।
दो०—सुगम श्रेष्ठ साधन कहूँ, सुनियो सकल सुजान।
लगन एक भीतर लगे, हो सबका कल्याण॥
हो सबका कल्याण, करो घर-घर यह तैयारी॥ ले लो॥ १ ॥
कहूँ नहिं मन-घड़न्त वाणी, कह रही गीता महाराणी,
बात सब सन्तों ने मानी, सहज में मुक्त होय प्राणी,
दो०—अपने घर या गाँव में, जो कोइ पड़े बिमार।
शुद्ध औषधी देय के, कर लो सद्-उपचार॥
कर लो सद्-उपचार, छोड़ दूजी सम्मति सारी॥ ले लो॥ २ ॥

प्रथम ईश्वर का नाम सुनाय, पढ़े गीता अष्टम अध्याय,
करे सेवा मल मूत्र उठाय, और नहिं अटपटि बात चलाय,
दो०—गंगाजल में घोटके, तुलसी मुखमें डाल।
गीता सिरहाने रहे, गल तुलसी की माल॥
गल तुलसी की माल, दिखावे प्रभु की छबि प्यारी॥ ले लो॥ ३ ॥
अगर बचने का नहीं उपाय, धरनि गोवर से दे लिपवाय,
बिछा बृज-रज पर देय सुलाय, हरी-कीर्तन की झड़ी लगाय,
दो०—जीवे तो आनन्द है, जावे तो आनन्द।
कृष्ण-नाम से कट गये, जनम-मरण के फन्द॥
जनम-मरण के फन्द, प्रथम यदि रहा दुराचारी॥ ले लो॥ ४ ॥
'परम सेवा' है यह भाई, लूंट लो मानुष तन पाई,
हृदय की मिटे मलिनताई, देखि हर्षित हो रघुराई,
दो०—परम-पिता के लाडले, हैं हम सब नर नार।
देख हमारी भावना, करेंगे बेड़ा पार॥
करेंगे बेड़ा पार, कृपा बरषावे गिरधारी॥ ले लो॥ ५ ॥

विदुरके घर कृष्ण

(१७०)

आज हरि आये विदुर घर पाहुणा॥ टेर ॥
विदुर नहीं घर थी विदुरानी, आवत देख्या सारङ्ग पाणी।
फूली अंग समावे नाहीं, भोजन कहा जिमावणां॥ १ ॥
केला बड़े प्रेम से लाई गिरी गिरी सब देत गिराई।
छिलका देत श्याम मुख माहीं, लागे बहुत सुहावणां॥ २ ॥
इतने माहिं विदुर घर आये, खारे खोटे बचन सुणाये।
छिलका देत श्याम मुख माहीं, कहाँ गमाई भावना॥ ३ ॥
केला लिये विदुर कर माहीं, गिरी देत गिरधर मुख माहीं।
कहे कृष्ण जी सुणो विदुर जी, वो सवाद नहिं आवणा॥ ४ ॥

बासी खूसी रूखे, सूखे हम तो विदुरजी प्रेम के भूखे।
'शम्भु सखी' धन धन विदुरानी, भक्तों का मान बढ़ाववणा॥ ५ ॥

श्रीहनुमान्‌जीके सिन्दूर

(१७१)

मोह जाल ममता के बन्धन, जिसने दूर निवारे।
तन मन प्रभु पर वार दिया, वे परमेश्वर के प्यारे,
श्री राघवेन्द्र के प्यारे॥ टेर॥
एक बार कर स्नान महल में, जनक दुलारी आई।
हनूमान वहाँ जाकर बोला, घाल कलेवा माई॥
सीता बोली कपड़ा पहनूँ, जरा ठहर जा भाई।
करि शृंगार सिया सिन्दूर की, बिन्दी भाल लगाई॥
कपि कलेवा भूल गया बिन्दी की ओर निहारे॥ तन० १॥
जब वह कुछ नहिं समझ सका, तो माता से बतलावे।
इसका मतलब बता मात तूँ, बिन्दी काहे लगावे॥
इतनी सुनकर हँसे सियाजी, लाड़ सहित बतलावे।
इस बिन्दी से अपना मालिक, ज्यादा प्यार बढ़ावे॥
ऐसा तो मुझको करना है, कपि मन माहिं बिचारे॥ तन० २॥
मन में निश्चय कीन्हा हनुमत, बनूं राम का प्यारा।
सिया करन लगि काम, कपी ने चारौं तरफ निहारा॥
डिब्बा भरा हुआ सिंदूरका, पटक जमी पर मारा॥
भर भर मुट्ठी ले सिंदूर की, रंग लिया तन सारा॥
बाहर आया दरशाया तो, हँसने लागे सारे॥ तन० ३॥
मन में मगन होय बजरंगी दरबारी में आया।
अद्‌भुत शोभा देख राम ने, अपने पास बुलाया॥
प्रेम सहित परमेश्वर बोले, किसने रंग चढ़ाया।

सीता ने जो कहे वचन सो, कपि ने तुरत बताया॥
सूखा रंग उतर जायेगा, यों श्री राम उचारे॥ तन० ४॥
मंगल और शनिश्चर के दिन घृत सिंदूर मिलावे।
उस पर ज्यादा कृपा करूँ, जो तेरे लाय चढ़ावे॥
ध्वजा नारियल मोदक मेवा, जो कोई भोग लगावे।
उस पर हम तुम कृपा करेंगे, अन्त अभय पद पावे॥
दास बिहारी इन चरणों पर, सरबस अपना वारे॥ तन० ५॥

शरणागति

(१७२)

शरणांगत पाल कृपाल प्रभो, हमको एक आस तुम्हारी है।
तुम्हरे सम दूसर और नहीं, कोउ दीनन को हितकारी है॥ टेर ॥
सुधि लेत सदा सब जीवन्ह की, अतिसय करुना उर धारी है।
प्रतिपाल करो बिनहीं बदले, अस कौन पिता महतारी है॥ १ ॥
जब नाथ दया करि देखत हो, छुटि जात व्यथा संसारी है।
बिसराय तुम्हें सुख चाहत जो, अस कौन नादान अनारी है॥ २ ॥
परवाह तिन्हें नहिं स्वर्गहु की, जिन्हको तव कीरति प्यारी है।
धनि धन्य है वे जन बड़भागी, तव प्रेम सुधा अधिकारी है॥ ३ ॥
सब भाँति समर्थ सहायक हो, तव आश्रित बुद्धि हमारी है।
परताप नारायण तो तुम्हरे, पद-पंकज पै बलिहारी है॥ ४ ॥

महत् पुरुषोंकी कृपा

(१७३)

मेरे हिरदय लागा सबद बान,
अस तकि मारा सतगुरु सुजान।
मम दसहु दिसा मन करत दौर,
जब लग्यो बान तब रह्यो ठौर।

अब चाल सके नहिं पैंड एक
अस भयो कलेजे माहिं छेक।
लखि सके न कोई मोर पीर,
जाने सोइ जाके लगा तीर।
जीवत ही मोकहुँ लियो मार,
अब रोम रोम ऊठत खुमार।
उर प्रेम मगन रस नहिं अघात,
अति भूल गयो सब और बात।
अब पलटी गति मति पलट्यो अंग,
मिल पाँच पचीसौं रहत संग।
अस उलट समाना सुन्न मायँ,
सोइ सुन्दर कबहु न आव जाइ।

अनिर्वचनीय बोध

(१७४)

अब कहा कहौं कछु कहि न जाय,
जब हम तुम तुम हम रहे बिलाय।
जस लवन पर्‌यो है सिन्धु माहिं,
जेहि खोजत पावत कछुक नाहिं।
अस जीव ब्रह्म को मिट्यो भेद,
संसार भरम को भयो निषेध।
जस बरफ रूप अरु जलाकार,
दोउ भिन्न भिन्न दीखत न सार।
जस खाँड खिलौना रूप रंग
बहु भाँतिन्ह कर आकार ढंग।
जब खाँड गली है मिटा भेक,
तब खाँड खिलौना एक मेक।

जस तानें बानें एक सूत,
अस ब्रह्महिं दरसे जीवभूत।
कहे किसनदास आतम प्रकास,
ज्यों घट बाहर भीतर अकास।

अति विलक्षण भगवद्गीता

(१७५)

जानें क्या जादू भरा हुआ, भगवान तुम्हारी गीता में।
मन चमन हमारा हरा हुआ, घनश्याम तुम्हारी गीता में॥ टेर॥
जब शोक मोह से घिर जाते, तब गीता बचन हृदय लाते।
कल्यान खजाना धरा हुआ, भगवान तुम्हारी गीता में॥ १॥
गीता ग्रन्थों में न्यारी है, श्रुति जुगती अनुभव कारी है।
युग युग का अनुभव जुड़ा हुआ, घनश्याम तुम्हारी गीता में॥ २॥
गीता सन्तों का जीवन है, गंगा के सम अति पावन है।
शरनागति अमरित भरा हुआ, भगवान तुम्हारी गीता में।
बिग्यान ग्यान रस भरा हुआ, घनश्याम तुम्हारी गीता में।
हरि प्रेम लबालब भरा हुआ, भगवान तुम्हारी गीता में॥ ३॥

परिशिष्ट

(१७६)

हमारे गुरु दीन्ही एक जरी।
कहा कहौं कछु कहत न आवै अमरित रस की भरी॥ टेर॥
ताको मरम संत जन जानत, वस्तु अमोल खरी।
याते मोहि पियारी लागत, लेकर सीस धरी॥
इक भुजङ्ग अरु पाँच नागिनी, सूँघत तुरत मरी।
डाकिनि एक खात सब जगको सो भी देखि डरी॥

त्रिविध विकार ताप तन भागे दुरमति सकल हरी।
ताको गुन सुनि मीचु पलाई और कौन बपुरी॥
निसि बासर नहिं ताहि बिसारत, पल छिन आध घरी।
सुन्दरदास भयो घट निरविष, सबही ब्याधि टरी॥

(१७७)

साधो सहज समाधि भली।
गुरु प्रताप जा दिन तैं उपजी, दिन दिन अधिक चली॥ टेर॥
जहँ जहँ डोलूँ सोइ परिकम्मा, जो कछु करौं सो सेवा।
जब सोवौं तब करौं दंडवत, पूजौं और न देवा॥ १॥
कहौं सो नाम सुनौं सो सुमिरन, खावौं पिवौं सो पूजा।
गिरह उजाड़ एक सम लेखौं, भाव न राखौं दूजा॥ २॥
आँख न मूँदौं कान न रूँधौं, तनिक कष्ट नहिं धारौं।
खुले नयन पहिचानउँ हँसि हँसि, सुन्दर रूप निहारौं॥ ३॥
सबद निरंतर से मन लागा, मलिन वासना त्यागी।
ऊठत बैठत कबहु न छूटे, ऐसी तारी लागी॥ ४॥
कह 'कबीर' यह उनमनि रहनी, सोउ परगट करि भाई।
दुख सुख से कोइ परे परमपद, तेहि पद रहा समाई॥ ५॥

(१७८)

साधो सोइ सतगुरु मोहि भावे।
राम नाम का भर भर प्याला, आप पिये मोहि पावे॥ टेर॥
मेला करे ना महन्त कहावे, पूजा भेंट न चाहवे।
परदा दूर करे अँखियन का, ब्रह्म दरश दिखलावे॥ १॥
जाही बिधि साहिब घट दरशे, सो मोहि शबद सुनावे।
माया के सुख दुख करि माने, आतम सुख उपजावे॥ २॥
निसदिन राम भजन में राता, शबद में सुरता समावे।
कहत कबीर ताको भय नाहीं, निरभय पद परसावे॥ ३॥

(१७९)

भाइ संत बड़े वे श्रेष्ठ कुछ भी नहिं चाहवे जी नहिं चाहवे।
सब जीवों का भ्रम मेट हरि हरि दरसावे जी दरसावे॥ टेर॥
ना कोइ मूंडे चेला चेली, मूँडे कलेजा ठेट, भव दुख मिट जावे॥ जी॥
ना अपनी पूजा करवावे, ना माँगे कछु भेंट, सबके मन भावे॥ जी॥
कौड़ी पैसा पास न राखे, सेठों के वे सेठ, अमरित बरसावे॥ जी॥
ना कोइ आश्रम कुटी छवावे, खुली हवा में बैठ, प्रभु का गुन गावे॥ जी॥
केस बरोबर गरज न किसकी, पूत राम के जेठ, हरिपुर पहुँचावे॥ जी॥
ना गृहस्थ का धरम छुड़ावे, ना कोइ बदले फेंट, हिवड़ो रँग जावे॥ जी॥
ना कोइ भेजे परबत जंगल, भेजे हरिपुर ठेट, वापिस नहिं आवे॥ जी॥
जनम जनम के भूखे प्राणी, भर रहे सबका पेट, जिवड़ा सुख पावे॥ जी॥

(१८०)

कर हरि चरनन से हेत हेत।
बाल पनो खेलन में खोयो, केस भये सिर स्वेत स्वेत॥ १॥
मानुष जनम अमोलक हीरा, काहे रुलावत रेत रेत॥ २॥
बीज बोइ कर खबर न लीन्ही, चिड़िया चुग गइ खेत खेत॥ ३॥
कहत कबीर सुनो भाई साधो, मरकर होहि हैं प्रेत प्रेत॥ ४॥

(१८१)

हरिजी से लागे रहो रे भाई, तेरी बिगड़ि बात बनि जाई॥ टेर॥
रंका लागी बंका लागी, लागी सदन कसाई।
धन्ना भगत के ऐसी लागी, हरिने साख निभाई॥ १॥
सेना लागी केवट लागी, लागी मीराँबाई।
बलख बुखारे ऐसी लागी, छाँड़ि चले बादशाही॥ २॥
ध्रुव लागी प्रहलाद के लागी, नारद बीन बजाई।
शिव सनकादिक लागे रहत नित, कबहु न रहत अघाई॥ ३॥

ऐसा ध्यान धरो घट भीतर, आवागमन मिटाई।
कै तुम जानो कै प्रभु जाने, माया पति रघुराई॥ ४॥
सतगुरु बैठे सैन बतावे, शूरा लड़त लड़ाई।
भेरी शंख नगारा बाजे, वीर चले हरषाई॥ ५॥
बयरी घात करे छिप छिप कर, प्रगट न देत दिखाई।
कहत कबीर सुनो भाई साधो, हारो तो रामदुहाई॥ ६॥

(१८२)

प्याला प्रेम का हो कोई पीवे साधु सुजान।
भर भर प्याला छक छक पीवे, ऐसा राम रसान॥ टेर॥
नारद पीयो शारद पीयो, शुक पीयो भर प्रान।
सनकादिक ब्रह्मादिक पीयो, पवन पुत्र हनुमान॥ १॥
ध्रुव पीयो प्रहलाद ने पीयो, पियो विभीषण दास।
शंकर पियो गोपिका पीयो, बालमीक बेदव्यास॥ २॥
अरजुन पीयो सुदामा पीयो, चन्द्रहास हरिदास।
अम्बरीष रूकमाँगद पीयो, भयो अमरपुर वास॥ ३॥
पियो सुधनवा भक्त मोरध्वज रन्तिदेव हरिचन्द।
शिवि दधीचि बलि भीष्म विदुर अरु पियो जसोदा नन्द॥ ४॥
नामदेव रामानँद पीयो, और पियो रैदास।
कबिरा पीयत ना छक्यो कोइ और पिवन की आस॥ ५॥

(१८३)

म्हारा साहिब है रँगरेज, चुनर मेरी रँग डारी॥ टेर॥
स्याही रंग छुडाय के रे, दियो मजीठी रंग।
धोये से छूटे नहीं रे, दिन दिन होत सुरंग॥ १॥
नेह का जल अरु भाव की कूंडी, प्रेम रंग दइ बोर।
माया मैल छुड़ाय के रे, खूब रँगी है झकझोर॥ २॥

साहिबने चुनरी रँगी रे, प्रीतम चतुर सुजान।
सब कुछ उनपर वार दूँ रे, तन मन धन अरु प्रान॥ ३ ॥
कह कबीर रँगरेज पियारे, हमपर हुये दयाल।
सुरँग चूनरी रँगी हमारी, भइ हौं ओढ़ निहाल॥ ४ ॥

(१८४)

चलो मन गंगा यमुना तीर।
गंगा यमुना निरमल पानी, सीतल होत सरीर।
बंसी बजावत गावत कान्हो, संग लिये बलबीर॥
मोर मुकुट पीताम्बर सोहे, कुण्डल झलकत हीर।
मीराके प्रभु गिरधर नागर चरणकँवलपर सीर॥

(१८५)

सो लीला तेरी अजब निराली है॥ टेर॥
तूं अजर अमर है निराकार भगतोंके कारज देह धरे।
बिन पैर चले बिन कान सुने बिन हात करोड़ों काम करे॥
सब जगहँ विश्वमें वास तेरा हो महाप्रलय फिर भी न मरे।
तूं पिता है सबही पुत्र तेरे भोजन दे सबका पेट भरे॥
हाकिम तूं सारी दुनियांका तेरा हुकम किसीसे नहीं टरे।
जिसकी भी तुमसे लगन लगी सुख दे उसका दुख दूर करे॥
डर तेरा है वह निडर हुआ दुनियांसे बिलकुल नहीं डरे।
हे दीनबंधु तेरी याद करे वह पलभरमें भव सिन्धु तरे॥
सारे जगत फूलबगियाका तूं ही माली है॥ १ ॥
तेरे किसी पेड़पर फल लटके अरु किसी पेड़पर लगी फरी।
कहिं घनी बस्ति कहिं है उजाड़ कहिं खुश्की है कहिं तरी तरी॥
कहिं खाख उड़े है धुआँधोर कहिं घास खड़ी है हरी हरी।
कहिं ऊँचे टीले चमक रहे कहिं नीची धर करतार करी॥

कहिं वाह वाह कहिं हाय हाय कहिं खैर खुशी कहिं मरी मरी।
कहिं जन्मघड़ी कहिं ब्याह लगन कहिं हवन होय कहिं चिता जरी॥
कहिं द्वार पै नोपत बाज रही कहिं रोय रोय अखियाँ नीर भरी।
किस तौर करूँ गुनगान तेरा है धन्य धन्य तेरी कारीगरी॥
माया तेरी रिषि मुनियोंको मोहनहारी है॥ २ ॥
कहिं रुपियोंका है ढेर लगा कहिं टुकड़े माँगे दर दर के।
कोइ बना हुआ है बादशाह कोइ वक्त गुजारे डर डर के॥
कोइ हुकुम चलावे लाखोंपर कोइ जीवे खटनी कर कर के।
कोइ मौज करे कोइ पेट भरे अपने सिर बोझा धर धर के॥
कोइ देख किसीको मगन होय कोइ मिला खाखमें जर जर के।
कोइ हँसे टहाका मार मार कोइ रोवे आँसू भर भर के॥
कोइ है गोरा किसीकी काया बिलकुल काली है॥ ३ ॥
कोइ चले नहीं बिन मोटर के कोइ नंगे पैरों भाग रहा।
कहिं ढेर पड़ा जर जेवरका कोइ करज किसीसे माँग रहा॥
कोइ शांत सबूरी कर बैठा कोइ सिकल बिकल हो भाग रहा।
कोइ किसीका दुश्मन बन बैठा कोइ प्रेम किसीसे पाग रहा॥
कोइ भोग वासनाका गुलाम कोइ हरि भगतीमें लाग रहा।
कोइ सुखकी निंदियां सोय रहा कोइ पड़ा फिकरमें जाग रहा॥
कोइ दुष्टोंके कुसंगमें रहकर जीवन अपना दाग रहा।
कोइ संतनकी संगत करके तेरी भगतीमें लाग रहा॥
अपने भगतोंकी तूं करता नित रखवाली है॥ ४ ॥

(१८६)

जगा दो भारत को भगवान्॥ टेर॥
बिहार जागे उत्कल जागे, जागे बँग आसाम।
करनाटक गुजरात मराठा, जागे राजस्थान॥ १ ॥

बालक ध्रुव प्रह्लाद से होवे, धरें तुम्हारा ध्यान।
वीर हकीकतराय से होवे, धरम हेतु बलिदान॥ २ ॥
सीता सावित्री दमयंती, फिरसे प्रगटे आन।
दुर्गावति लक्ष्मीबाई की, चमके चपल कृपान॥ ३ ॥
ब्राह्मण हो तेजस्वी त्यागी, गौतम कपिल समान।
तन्मय होकर स्वरसे गावे, सामवेद का गान॥ ४ ॥
क्षत्रिय हो विक्रम प्रतापसे, रणरंगी बलवान।
करें देश हित जान न्योछावर, हँस हँस दे निज प्रान॥ ५ ॥
वैश्य होइ भामासा जैसा, करें देश हित दान।
शूद्र होय रविदास भक्त सा, कबीर सा मतिमान॥ ६ ॥

(१८७)

जिनके हियमें श्रीराम बसे तिन साधन और कियो न कियो।
जिन संत चरणरज को परसा तिन तीरथ नीर पियो न पियो॥
सब भूत दया जिनके चितमें उन कोटिन दान दियो न दियो।
जेहि ध्यान निरंतर है प्रभुको मुखसे तिन नाम लियो न लियो॥
जो भर प्याला हरिरस चाख्यो वह तो रस और पियो न पियो।
जिन श्रवनन को प्रिय राम कथा चित और कथामें दियो न दियो॥
जिन नैनन सुन्दर श्याम बसे तिन और को दरस कियो न कियो।
कबिरा जब मैंपन छाँड़ि दिया सो मरो तो मरो वा जियो तो जियो॥

(१८८)

राम नाम पूँजी पल्ले बाँधो रे मना।
बाँधो पल्ले बाँधो पल्ले बाँधो रे मना॥ टेर ॥
ध्रुव बाँधी प्रहलाद ने बाँधी, बाँधी जाट धना।
मीराँ बाँधी वर पायो है, नन्दनन्दना॥ १ ॥

पींपा अरु रैदास बाँधी, शबरी सदना।
दास तो कबीरे बाँधी, ताना रे बाना॥ २ ॥
बाल पने का मित्र जो, सुदामा ब्रह्मना।
ताको सब दारिद्र खोयो, रच दी रचना॥ ३ ॥
गनिका गीध अजामिल तारे, तारे अधम जना।
'सूर' के स्वामी अंतरजामी, माफ करो गुनाह॥ ४ ॥

(१८९)

कोइ पीवे राम रस प्यासा रे।
गगन मँडल में अमरित बरसे, पी लो सांसम सांसा रे॥
ऐसा महँगा अमृत बिकता, छह रितु बारह मासा रे॥
जो पीवे सोइ जुग जुग जीवे, कबहु न होइ विनासा रे॥
एहि कारन राजा भये जोगी, छोड़ा भोग विलासा रे॥
सहज ही राज सिंघासन त्यागे, भसम लगाय उदासा रे॥
गोपीचन्द भरथरी रसिया, और कबिर रैदासा रे॥
गुरु दादू परसाद पाइ कै, पीवे 'सुन्दरदासा' रे॥

(१९०)

राम कहो राम कहो राम कहो बावरे।
अवसर न चूक भोदू पायो भलो दांव रे॥ टेर ॥
जिन तोकूं तन दीनो, ताको ना भजन कीनो,
जनम सिरानो जात, लोहे कैसो ताव रे॥ १ ॥
रामजी को गाय गाय, राम को रिझाव रे।
रामजी के चरन कमल, चित माहीं लाव रे॥ २ ॥
कहत मलूकदास, छोड़ दे पराई आस।
आनँद मगन होय हरि गुन गाव रे॥ ३ ॥

(१९१)

अब कैसे छूटे राम रट लागी॥ टेर॥
प्रभुजी तुम चंदन हम पानी, जाकी अँग अँग बास समानी॥
प्रभुजी तुम घन हम बन मोरा, जैसे चितवत चंद चकोरा॥
प्रभुजी तुम दीपक हम बाती, जाकी जोति जगे दिन राती॥
प्रभुजी तुम मोती हम धागा, जैसे सोनहि मिलत सुहागा॥
प्रभुजी तुम स्वामी हम दासा, ऐसी भगति करे रैदासा॥

(१९२)

दुनियाँ से नेह लगाय के, मत भूले नाम हरी का॥ टेर॥
नव दस मास गरभ में झूल्यो, भजन करन को बचन कबूल्यो,
बाहर आय सबहि सुध भूल्यो, मन्दिर महल चिनाय के,
सुख भोगे सदा परी का॥ १ ॥
मात पिता भ्राता सुत नारी, मतलब की सब नातेदारी,
ऊपर बाजे काल कटारी, दूर सभी भग जायँगे,
कोइ संगी ना बिगड़ी का॥ २ ॥
क्या करता मन मेरी मेरी, साढ़े तीन हात नहिं तेरी,
काल लगाय रया चहुँ फेरी, प्राण तजे मुख बाय के,
ज्यों हाल होय बकरी का॥ ३ ॥
जग सुपना है रैन बसेरा, बिन भगवान कोई नहिं तेरा,
सुखीराम समझो मन मेरा, तिर गये हरिगुण गाय के,
डर रहा न जम नगरी का॥ ४ ॥

(१९३)

जगत माहीं बहुत बड़ी सतसंगा॥ टेर॥
जे कोइ साँची संगति पावे, दुख में होत निसंगा॥ १ ॥
जैसे परिक्षित पार उतर गये, सुण सुण कथा प्रसंगा॥ २ ॥

जनम जनम की भूल मिटी है, जीवन हो गया चंगा॥ ३ ॥
सबद का बाण लगा घट भीतर, उड़ गया भरम पतंगा॥ ४ ॥
जैसे लोहा कंचन होवे, कर पारस का संगा॥ ५ ॥
जैसे नदियाँ मिली गंग में, सब मिल हो गइ गंगा॥ ६ ॥
बेद पुराणन में यह गावे, होत कीट से भृंगा॥ ७ ॥
कह सुकदेव सुणो परिक्षित लागत है हरि रंगा॥ ८ ॥

(१९४)

सुख कयो न जाय सतसंगनो रे, अँग आठों ही सीतल थाय।
अड़सट तीरथ घर आँगणें रे, त्याँ हरिजन हरिजस गाय।
सुख ब्रह्मलोक थी है घणों रे, बैकुण्ठ थी बढ़तो ही जाय।
ए तो काम क्रोध लोभ मद ईरषा रे, सतसंग थी अलगा ही जाय।
दास रतनो कहे सतसंग थी रे, भय लख चौरासी नो जाय।

(१९५)

सतसंग के परताप से दुख दरिद सारा टल गया।
अगनित जनम के पाप का, कूड़ा भरा वह जल गया॥ टेर ॥
कहते हैं कोई क्या मिला, समझा उसे सकते नहीं।
बिछुड़ा न पलभर भी कभी था, मिला सोइहि मिल गया॥ १ ॥
फूला हुआ फिरता सदा निज मूर्खता अभिमान में।
भइ संत चरनन की कृपा, अहँकार असुर निकल गया॥ २ ॥
बेहोश रहता था सदा सुख भोग की आसक्ति में।
प्रगटत ही ग्यान प्रकाश के, मुरझा पड़ा वह खिल गया॥ ३ ॥
परमातमा परिपूर्ण है, सब देशमें सब कालमें।
परिछिन्नता का भान वो, घनश्याम रँगमें घुल गया॥ ४ ॥

(१९६)

क्या देख दिवाना हुआ रे॥ टेर॥
यो संसार सार की सूली नारी नरक का कुआ रे॥ १ ॥

हाड़ चाम का बना पींजरा, भीतर मनवा सुआ रे॥ २ ॥
काल चक्र तेरे सिरपर डोले, ज्यों मंजारी चुहा रे॥ ३ ॥
काकी मामी और भतीजी, बहन भानजी भुवा रे॥ ४ ॥
कहत कबीर सुनो भाई साधो, हार चल्यो जैसे जुआ रे॥ ५ ॥

(१९७)

रे मन मूरख जनम गमायो।
कर अभिमान विषय सौं राच्यो, श्याम शरण नहिं आयो॥ १ ॥
यह संसार फूल सेमर को, सुन्दर देखि लुभायो।
चाखन लग्यो रुई उड़ गई, हाथ कछू नहिं आयो॥ २ ॥
कहा भयो अबके मन सोच्यो, पहले नाहिं कमायो।
सूरदास हरि नाम भजन बिनु, सिर धुनि धुनि पछितायो॥ ३ ॥

(१९८)

नर तैं जनम पाइ कहा कीनो।
उदर भर्‌यो कूकर सूकर ज्यों, हरि को नाम न लीनो॥ टेर ॥
श्री भागवत सुनी नहिं श्रवननि, गुरु गोविंद नहिं चीनो।
भाव भक्ति कछु हृदय न उपजी, मन विषयन महँ दीनो॥ १ ॥
झूठो सुख अपनो करि जान्यो, परस प्रिया कै भीनो।
अघ को मेरु बढ़ाय अधम तूँ अंत भयो बल हीनो॥ २ ॥
लख चौरासी जौनिं भरम के, फिर वाही मन दीनो।
सूरदास भगवंत भजन बिनु, ज्यों अंजलि जल छीनो॥ ३ ॥

(१९९)

दोय दिन का जगमें मेला, सब चला चली का खेला॥ टेर ॥
कोइ चला गया कोइ जावे, कोइ गठरी बाँध सिधावे,
कोइ खड़ा तैयार अकेला॥ १ ॥

कर पाप कपट छल माया, धन लाख करोड़ कमाया,
सँग चले न एक अधेला॥ २ ॥
सुत नार मातु पितु भाई, कोइ अंत सहायक नाहीं,
क्यों भरे पाप का ठेला॥ ३ ॥
यह नश्वर सब संसारा, कर भजन प्रभू का प्यारा,
ब्रह्मानंद कहे सुन चेला॥ ४ ॥

(२००)

चलो चलो सखी अब जाना, पिया भेज दिया परवाना॥ टेर॥
एक दूत जबर चल आया, सब लशकर संग सजाया,
किया बीच नगर के थाना॥ १ ॥
गढ़ कोट किला गिरवाया, सब द्वार बंध करवाया,
अब किस विध होय रहाना॥ २ ॥
जब दूत महल में आवे, वे तुरत पकड़ ले जावे,
तेरा चले न एक बहाना॥ ३ ॥
वह पंथ कठिन है भारी, कर सँग सामान तैयारी,
ब्रह्मानंद फेर नहिं आना॥ ४ ॥

(२०१)

आराम के हैं सब सँग साथी, जब वक्त पड़ा तब कोइ नहीं।
यहाँ मतलब के हैं लोग सभी, दुनियाँ में किसीका कोइ नहीं॥ टेर ॥
जब टिकट मिला है जाने का, तब डेरा किया मसाणो में।
वहाँ जलाने वाले लाखों थे, पर जलने वाला कोइ नहीं॥ १ ॥
जब बाग हरा था फूलों से, इठलाती थी कलियाँ बाँकी।
वो बिखर गई क्या फिकर करें, वहाँ रहने वाला कोइ नहीं॥ २ ॥
दरदी दिन रात रुला करते, बेदरदी हँसते ओर खिलते।
वहाँ सुनने वाले लाखों थे, समझाने वाला कोइ नहीं॥ ३ ॥
यह ख्याल जगत कैसा है, ओर यार सभी का पैसा है।
आतम का कहना ऐसा है, समझाता सुनता कोइ नहीं॥ ४ ॥

(२०२)

इक दिन है मरना, है मरना, कोइ राग द्वेष मत करना॥ टेर॥
कृपा करी मानुष तन दीन्हो, ताको नहीं बिसरना।
अंतर द्वार उनगनी साधो, सिरजन हार सुमरना॥ १॥
काम क्रोध मद लोभ ईरषा, इनका सँग परहरना।
होय हुँसियार हरी को सुमिरो, निसदिन पार उतरना॥ २॥
मेरो कयो मान मन मूरख, गुरु गोविन्द से डरना।
इक दिन उनसे काम पड़ेगा, पकड़ उसीका सरना॥ ३॥
मरने का भय पैंड पैंड पर, समझ समझ पग धरना।
भक्त भारतीं गुरू कृपाते, भवसागर से तरना॥ ४॥

(२०३)

तूं चेत मुसाफिर अब तो गाड़ी चलने वाली है।
चलने वाली है, राम घर चलने वाली है॥ टेर॥
बिस्तर गोल करो जलदी अब टिकटें कटती है।
सींगल तो नीचे गेर दिया, अब घंटी बजती है॥ १॥
राम नाम का टिकट साथमें, लेकर चलना है।
भाइ बिना टिकट तो धक्का खाकर बाहर टलना है॥ २॥
तोड़ जगत के बंधन सारे, करो पयाना है।
रहो सदा अमरापुर में, वापिस नहिं आना है॥ ३॥

(२०४)

उमर सब गफलत में खोई, किया शुभ करम नहीं कोई॥ टेर॥
फिरा स्वारथ में दिवाना, नहीं परमारथ पहिचाना,
खेलना खाना अभिमाना, काम क्रीड़ा में सुख माना,
जग धंधे में खो दिया सारा समय अमूल।
रैन गमाई सोयके रे जीवन गयो समूल।
बेल तैं पापों की बोई॥ १॥

बिमुख हो निज प्रभु से प्यारे, किये दुरगुण भारे भारे,
हजारौं बे गुनाह मारे, दीन अरु दुखिया नहिं टारे,
तब क्या उत्तर देयगा न्यायाधीश दरबार।
जहाँ नहीं है झूठे साक्षी नहिं वकील मुखत्यार।
चले फिर वहाँ न बदगोई॥ २॥
समझ मन अब तो सैलानी, छोड़ दे जगत बेईमानी,
चले गये लाखों अभिमानी, तूं है किस गिनती में प्रानी,
हरि सुमिरन कर जीव जड़ तुझे कहूँ हरबार।
स्वारथ में सब नर तन खोयो, रे मतिमंद गँवार।
बेग उठ बहुत लिया सोई॥ ३॥
सुहृद सुत पितु कुटुम्ब दारा, हुआ क्यों धन पर मतवारा,
मौत का आवे हलकारा, छुटेगा इक दिन संसारा,
सपने सो हो जावसी सुत कुटुम्ब धन धाम।
हो सचेत बलदेव नींद से जप ईश्वर का नाम।
मनुष तन फिर फिर नहिं होई॥ ४॥

(२०५)

रामजी को राख भरौसो भाई।
जे तूँ राखे राम भरौसो, कमी नहीं राखे काही॥ टेर॥
कीड़ी को कण देत रामैयो, हाथी मण भर खाई।
अनड़पंख आकाश उड़त है, ताको चूण चुगाई॥ १॥
अजगर उड़त न चलत धरनिपर, चोंच मोड़ नहिं खाई।
ताको भरण करे भूधरियो, पलक नहीं बिसराई॥ २॥
जम के द्वारे मैं नहिं जाऊँ, यह मेरे मन भाई।
हरिजी को छोड़ जगत ने जाचे, लाजे त्रिभुवन राई॥ ३॥
पूरत राम उदर भर सबको, यामें फरक न राई।
कहत कबीर सुनो भाई साधो, हरिजी ने लाज बड़ाई॥ ४॥

(२०६)

वो घर सतगुरु क्यों न वतावो जिन घर से जिव आया है।
काया छाँड चला जब हंसा, कहो जी कहाँ समाया है॥ टेर ॥
मैं मेरी ममता के कारण, बारमबार ठगाया है।
समझ न पड़ी ग्यान गुरु गम की, फिर तातें भटकाया है॥ १ ॥
रज बीरज दोऊ नहिं होता, जीव कहाँ ठहराया है।
ब्रह्मा विष्णु महेश न होता, आदि न होती माया है॥ २ ॥
चन्द्र न सूर दिवस नहिं रजनी, जहाँ जाय मढ़ छाया है।
सुरत सुहागन पाँव पलूटे, पिव अपणां ही पाया है॥ ३ ॥
मेरी प्रीत पिया सूं लागी, उलट निरंजन ध्याया है।
भणत कबीर सुणो भाइ साधो, अपरंपार बनाया है॥ ४ ॥

(२०७)

छूटे जो अहंकार से है ब्रह्म सच्चिदानंदा॥ टेर ॥
विषय वासनाओंमें फसकर, जीव भयो मतिमंदा।
जब लगि मोह फास नहिं छूटे, अहंकार है जिन्दा॥ १ ॥
पुन्य पाप का करता माने, भोक्ता सुख दुख द्वंदा।
निज स्वरूप को भूलि पर्‍यो है, जनम मरनके फंदा॥ २ ॥
रहता सभी अवस्था मे जो, निर्विकार निस्पंदा।
अहंकार बिन स्वयं प्रकाशे, जैसे पूरन चंदा॥ ३ ॥
ज्यों निरमल जल मल के सँगमें, मिलकर हो गयो गंदा।
मैं मेरापन मिटते ही वह, ज्यों का त्यों स्वच्छंदा॥ ४ ॥

(२०८)

कछु लेना न देना मगन रहना॥ टेर॥
पाँच तत्व का बना है पींजरा, भीतर बोल रही मैना।
तेरा पिया तेरे घटमें बसत है, देखो री सखी खोल नैना।

गहरी नदियाँ नाव पुरानी, केवटिया से मिल रहना।
कहत कबीर सुनो भाई साधो, प्रभुके चरन लिपट रहना॥

(२०९)

गुप्त बात गुरुजन से पाई, धारन कर के चुप रहना।
नाशवान का संग छोड़ कर, अविनाशी में थिर रहना॥ टेर ॥
जो है कभी न घटता बढ़ता, सोइहि रूप तुम्हारा है।
नाम रूप आकार न तेरा, तूँ इन सब से न्यारा है।
कथन मात्र है यह जग सारा, मोह निशा का है सपना॥ १ ॥
बादल गरजे बिजली चमके, बरसत है जलकी धारा।
रहता यह आकाश निरंतर ज्यों का त्यों निरमल सारा।
देह विनाशी तूँ अविनाशी, इनके सँग में मत बहना॥ २ ॥
अनूकूल प्रतिकूल लखे जो, हरष शोकमें मत दहना।
ईश्वर के शरणागत होकर, समता माहिं अटल रहना।
यह अनमोल वचन संतन का, अनधिकारि से मत कहना॥ ३ ॥

(२१०)

सच्चिदानंद तूँ नित्य निर्द्वंद्व तूँ जीव माना।
बन गया देह में तूँ दिवाना॥ टेर ॥
अपने अग्यान से भरमाया, शेर होकर के मैं मैं मचाया।
मेरा घरबार है मेरा परिवार है ये खजाना॥ बन॥ १ ॥
हो के अविनाशि जनमा मरा है, रज्जु में सर्प देख डरा है।
झूठा भ्रम जाल है ये स्वपन काल है सत्य माना॥ बन॥ २ ॥
तेरी माया ही तुझको नचाती, खेल रचकर के तुमको रिझाती।
खेल में खेलना कष्ट दुख झेलना ना अघाना॥ बन॥ ३ ॥
पाँच तत्वों का देह न तेरा, अब मत मान इसको मैं मेरा।
ग्रन्थी छुट जायगी बेड़ी कट जायगी ले ठिकाना॥ बन॥ ४ ॥

(२११)

ब्रह्म सच्चिदानंदा, भूल कर भयो बंदा॥ टेर॥
आया था तूँ क्या करने को, छेड़ दिया क्या धंधा॥ १॥
बिषय वासनाओं में फसकर, हो गयो मूरख अंधा॥ २॥
जैसे सिंघ भेड़ बन बैठो, चरे बकरी के संगा॥ ३॥
मृग के नाभि बसे कस्तूरी, घास की लेत सुगंधा॥ ४॥
जब अपनो निज रूप सँभार्‍यो, ज्यों का त्यों स्वच्छंदा॥ ५॥

(२१२)

माया महा ठगनी हम जानी।
निरगुन फास लिये कर डोले, बोले अमरित बानी॥ टेर॥
केशव के कमला ह्वै बैठी, शिव के भवन भवानी।
पंडा के मूरति ह्वै बैठी, तीरथ में भइ पानी॥ १॥
जोगी के जोगिन ह्वै बैठी, राजा के घर रानी।
काहू के हीरा ह्वै बैठी, काहू के कौड़ी कानी॥ २॥
भगतन के भगतिन ह्वै बैठी, ब्रह्मा के ब्रह्मानी।
कहत कबीर सुनो हो संतो, यह सब अकथ कहानी॥ ३॥

(२१३)

पानी में मीन पियासी, मोहि देखत आवे हाँसी॥ टेर॥
आतम ग्यान बिना नर भटकत कोइ मथुरा कोइ कासी।
कस्तूरी मृग नाभी अंदर बन बन फिरत उदासी॥ १॥
जल बिच कमल कमल बिच कलियां तापर भँवर लुभासी।
विषयन बस तिरलोक भयो सब जती सती संन्यासी॥ २॥
जाको ध्यान धरत बिधि हरि हर मुनि जन सहस अठासी।
सोउ तेरे घट माहीं विराजत परम पुरुष अबिनासी॥ ३॥
भीतर को प्रभु जान्यो नाहीं बाहिर खोजन जासी।
कहत कबीर सुनो भाइ साधो जो खोजे सो पासी॥ ४॥

(२१४)

नजरिया ये जाती जिधर भी हमारी।
उधर देखता हूँ मैं सूरत तुम्हारी॥ टेर॥
बना कैसा दुनियाँका सुन्दर बगीचा।
सभी डाल पत्तोंमें तेरी हरारी॥ १॥
करे नाच ज्यों काठ पुतली हजारौं।
कला एक सबहीमें दरशे तिहारी॥ २॥
बदलती है रंगत जगतकी हमेशां।
तूं हीं सबके अंदरमें है निर्विकारी॥ ३॥
तेरी रोशनीसे चमकता है अंबर।
ब्रह्मानंद घट घट में तेरी उजारी॥ ४॥

(२१५)

मन मगन भया तब क्या बोले॥ टेर॥
सुरत कलाली भइ मतवाली, अमृत पी गइ बिन तोले॥ १॥
रीता है सोइ डगमग डोले, पूरा भया तब क्या बोले॥ २॥
तेरा साईं है तुज माहीं, बाहर नैना क्या खोले॥ ३॥
हंसा पाया मान सरोवर, डाबर डाबर क्या डोले॥ ४॥
कहत कबीर सुनो भाई साधो, साहिब पाया तृण ओले॥ ५॥

(२१६)

दगा किसीका सगा नहीं है, करके दगा कोइ देख लो रे॥ टेर॥
दगा किया था दुशासन ने, द्रौपदी के साथमें रे।
खेंच हारा चीर तब क्या, हाथ लगा कोइ देख लो रे॥ १॥
दगा किया रावण ने सीता, राम की हर ले गया रे।
वंश उसका मिट गया क्या जंग जगा कोइ देख लो रे॥ २॥

कंस ने अक्रूर को भेजा बुलाने कृष्ण को रे।
पकड़ चोटी दे पछाड़ा, मामा सगा कोइ देख लो रे॥ ३ ॥
बावन बन राजा बलीसे, दगा किया खुद विष्णुने रे।
चार महीने नौकरी का, लाग लगा कोइ देख लो रे॥ ४ ॥
यारो किसी से दगा न करना, कहत यों दामोदरा रे।
दगा जमी पर जो किया खुद, वही ठगा कोइ देख लो रे॥ ५ ॥

(२१७)

जागिये हे मातृ शक्ती, नींद में क्यों सो रही।
बंद कर संतान को तुम, क्यों निपूती हो रही॥
जागिये हे हिन्दु जननी, नींद में क्यों सो रही।
वंश अपना नाश कर तुम, क्यों निपूती हो रही॥ टेर ॥
यह सकल सृष्टि तुम्हारी, तुमहीं पालन हार हो।
नाश अब तुम कर रही, है दुख बड़ा हमको यही॥ १ ॥
माँ अगर बनती नहीं तुम, हो कहो किस काम की।
छनिक सुख की लालसा से, बीज विष के बो रही॥ २ ॥
गर्भ पात कराय के तुम, डाकिनी क्यों बन रही।
खा रही बच्चोंको खुद माता की कीरति खो रही॥ ३ ॥
है भयंकर पाप इसका, ब्रह्महत्या से बड़ा।
करके अपनी दुर्गती क्यों, पाप सिरपर ढो रही॥ ४ ॥
छोड़ सुख आराम हिन्दू, वंश की रच्छा करो।
अन्न जल भगवान देते, बात सच्ची है सही॥ ५ ॥

(२१८)

भगतों की मदद भगवान खड़ा सुन भाई।
भगतों का बुरा जो करे कत्ल हो जाई॥ टेर॥
हिरनाकुश नेकी छोड़ बदी पर आया।
प्रहलाद भगत ने राम नाम गुन गाया।

जब किया असुर अति कोप दिया दुख काया।
प्रहलाद भजे मुख राम नहीं घबराया।
हरि चिरी दुष्ट की खाल कागला खाई॥ १ ॥
रावण के नव ग्रह बँधे खाट के पाया।
दस सीस भुजा थी बीस बड़ी थी काया।
उनके जो भक्त विभीषण छोटा भाया।
वह त्याग दुष्ट को संग राम पै आया।
मारा रावण को राज विभीषण पाई॥ २ ॥
कौरव कपटी जो लाखा भवन बनाया।
पाँडव थे जिसमें उसमें आग लगाया।
खेंचन द्रौपदिका चीर दुशासन आया।
वह खेंच खेंच थक गया दुष्ट घबराया।
भारत में उसका नाश किया यदुराई॥ ३ ॥
राणा मीराँ को विष का प्याला पाया।
अमृत प्रभु ने कर दिया भक्त मन भाया।
यों भगतों को भगवान तोल कर ताया।
जब करे भक्त जन याद तुरत उठ आया।
कहे गिरधर प्रभुजी ऐसे हैं सुखदाई॥ ४ ॥

(२१९)

रघुराज कहें यदुराज कहें तुम रूप अनूप दिखाते हो।
कब धनुषबान धर आते हो, कब वंशी मधुर बजाते हो॥ टेर ॥
कब तीर चलाते हाथों से, कब नैन के तीर चलाते हो।
कब छाछ माँगते ग्वालिन से, कब शबरी के फल खाते हो॥ १ ॥
कब राक्षस भील बानरों को तुम अपना सखा बनाते हो।
कब गोप बालकों के सँगमें, तुम बन बन धेनु चराते हो॥ २ ॥

है वास तुम्हारा घट घट में, सब जग को नाच नचाते हो।
फिर भी जसुदा के हाथों से, तुम ऊँखल से बँध जाते हो॥ ३ ॥
कब मरियादा पुरुषोत्तम की, तुम लीला सरस रचाते हो।
कब सारथि बनकर अरजुन के तुम गीता ग्यान सुनाते हो॥ ४ ॥

(२२०)

प्यारे श्यामसुन्दर, मनमोहन गिरधारी।
कैसी अदभुत वाणी तेरी, गीता प्यारी प्यारी॥ टेर ॥
स्वारथ में हम हो रहे अंधे, पड़ रहे लोभ मोहके फंदे,
करमयोग दरशाया, सर्व भूत हितकारी॥ १ ॥
हो रहे हम तो देह अभिमानी, झूठे ही हम बन रहे ग्यानी,
अपना बोध कराया, मिट गइ बाधा सारी॥ २ ॥
कलियुग के हम जीव दुखारे, भटक रहे थे मारे मारे,
पाई बड़ी विलच्छन, शरणागती तुम्हारी॥ ३ ॥

(२२१)

यह जग सराय है मुसाफिर है खाना,
तूँ इसमें लुभाने की कोशीष न करना।
तूँ अपना सफर बिस्तरे में बिता ले,
पर कबजा जमाने की कोशीष न करना॥ टेर ॥
तेरे से भी पहले अनेकों मुसाफिर,
वे आये कमाये अरु खाये सिधाये।
न वे भी रहे ना गये साथ लेकर,
कि तुम भी ले जाने की कोशीष न करना॥ १ ॥
ये दुनियाँ है दौलत अमानत प्रभुकी,
नहीं है किसीकी न होगी किसीकी।
न पहले किसीकी न अब भी किसीकी,
तूँ अपनी बनाने की कोशीष न करना॥ २ ॥

गर राजा हो रानी बड़ा सेठ दानी,
पैगम्बर हो मुल्ला हो पंडित हो ग्यानी।
जो आया यहाँ उसको जाना पड़ेगा,
तूँ ममता बढ़ाने की कोशीष न करना॥ ३ ॥
चौरासी के चक्कर में गोते लगाकर,
ये मुस्किल से नर तन का चोला मिला है।
बड़े भाग्य से आज मौका मिला है,
तूँ मौका गमाने की कोशीष न करना॥ ४ ॥
ये आकाश धरती अगन जल हवा है,
तेरे ही लिये जिसने पैदा किया है।
बाबाजी कहे जिसने सब कुछ दिया है,
तूँ उसको भुलाने की कोशीष न करना॥ ५ ॥

(२२२)

मुखड़ा क्या देखे दरपन में तेरे दया धरम नहिं मन में॥ टेर ॥
कागज की इक नाव बनाई, छोड़ी समँदर जल में।
धरमी धरमी पार उतर गये, पापी डूबे पल में॥ १ ॥
पेच मार कर पगड़ी बाँधे, तेल डार जुलफन में।
इसी बदन पर दूब उगेगी, गऊ चरेगी बन में॥ २ ॥
कंगन कड़ा कान की बाली, ले उतार पल छिन में।
काची काया काम न आवे, नंग धरे आँगन में॥ ३ ॥
घर वाले तो घर में राजी, फक्कड़ राजी वन में।
आम की डार कोयलियां बोले, सूआ बोले बन में॥ ४ ॥
कौड़ी कौड़ी माया जोड़ी, गाड़ी खोद भवन में।
कहत कबीर सुनो भाई साधो, रह गई मन की मन में॥ ५ ॥

(२२३)

दुखों से अगर चोट खाई न होती।
तुम्हारी प्रभो याद आई न होती॥
यदि संग संतन का मिलता न मुजको।
कभी हमसे कोई भलाई न होती॥
कभी जिंदगी में ये आँखे न खुलती।
कुकर्मो की मेरी सफाई न होती॥
कहींपर मुझे चैन मिलती न जगमें।
अगर तेरी सूरत दिखाई न होती॥

(२२४)

ये संसार का चक्र चलता रहेगा।
जमाना भी करवट बदलता रहेगा॥
जो पैदा हुआ है मरेगा वो निश्चित।
ये आवागमन यों ही चलता रहेगा॥
वो बचपन गया दूर आई जवानी।
बुढ़ापा भी पल पल बदलता रहेगा॥
ये दुनियां के मेले कभी कम न होंगे।
तूँ कब तक जगत में कुचलता रहेगा॥
उसी को मिलेंगे नारायण के दर्शन।
जो भगती के रस में पिघलता रहेगा॥

(२२५)

अजब रचा यह खेल खिलौना माटी का।
भगवान रचा यह खेल खिलौना माटी का॥ टेर ॥
संसकार जीवों का जैसा, फोटो बना दिया है वैसा।
मानुष जनम दुहेल॥ १ ॥

पाँच तत्व का बना खिलौना, शादी करके किया है गौना।
नाक में पड़ी नकेल॥ २ ॥
दोय चार जब हो गये लड़के, घर की तिरिया कहे अकड़ के।
घर है या कोइ जेल॥ ३ ॥
पति पतनी में हुई लड़ाई, घर वाली रोटी नहिं खाई।
पापड़ रहि है बेल॥ ४ ॥
राम नाम मुख से नहिं लीना, नारायन का भजन न कीना।
रहा मुसीबत झेल॥ ५ ॥
कंचन सी यह काया तेरी, इक दिन हो माटी की ढ़ेरी।
कर ले प्रभु से मेल॥ ६ ॥

(२२६)

अनमोल तेरा जीवन, यूं हीं गंवा रहा है।
किस ओर तेरी मंजिल, किस ओर जा रहा है॥ टेर ॥
सपनों की नींद में ही ये रात ढल ना जाये।
पल भर का क्या भरौसा, क्या जाने कल ना आये।
गिनती की है ये श्वासें, यूं हीं लुटा रहा है॥ १ ॥
जायेगा जब यहाँ से, कोई न साथ होगा।
जो कुछ यहाँ किया है, इन्साफ वहाँ पै होगा।
कर्मो की है ये खेती, फल उसका पा रहा है॥ २ ॥
ममता के बंधनो ने, ले आज तुझको घेरा।
सुख के सभी हैं साथी, दुखमें कोई न तेरा।
तेरा ही मोह तुझको, कबसे रुला रहा है॥ ३ ॥
जब तक है भेद मनमें, भगवान से जुदा है।
देखे जो दिल का दर्पण, इस दिलमें ही खुदा है।
सुख रूप हो के खुद ही, दुख आज पा रहा है॥ ४ ॥

(२२७)

भैया मैं मेरीके कारण नैया आय फसी मझधार॥ टेर॥
अठ नव मास गरभमें तुमने, वादे किये हजार।
भूल गया उस परमेश्वरको, जो हैं सर्वाधार॥ १ ॥
बचपन और जवानीमें तूँ, लूंटी मौज अपार।
भाई बन्धू कुटुम्ब कबीला, किया जगतसे प्यार॥ २ ॥
मेरा कहकर मानत जिन्हको, मतलबके सब यार।
कोई किसीके काम न आवे, देखा नजर पसार॥ ३ ॥
नारायण सतगुरु है जीवन, नौकाके पतवार।
प्रभुकी कृपादृष्टिसे पलमें, होवे बेड़ा पार॥ ४ ॥

(२२८)

कर गुजरान गरीबीमें मगरूरी किसपर करता है॥ टेर॥
मुल्ला होकर बाँग मचावे, क्या तेरा साहेब बहरा है।
कीड़ीके पग नूपुर बाजे, सो भी साहेब सुनता है॥ १ ॥
आसन मारे तिलक लगावे, लम्बी माला जपता है।
अंतर तेरे कपट कतरनी, सो भी साहेब लखता है॥ २ ॥
ऊँचा ऊँचा महल बनाया, गहरी नींव जमाता है।
चलनेका मनसूबा नाही, रहनेको जी चाहता है॥ ३ ॥
कौड़ी कौड़ी माया जोड़ी, गाड़ जमीमें धरता है।
अंतकाल विच काम न आवे, पापी पच पच मरता है॥ ४ ॥
हीरा पाय परख नहिं जाने, परखत कौड़ी पैसा है।
कहत कबीर सुनो भाई साधो, हरि जैसे को तैसा है॥ ५ ॥

(२२९)

विनती सुन लो हे भगवान्, प्रार्थना सुन लो हे भगवान्,
हम तो बालक हैं नादान॥ टेर॥
भाषाका कछु ग्यान नहीं है, जप सेवा अरु ध्यान नहीं है,
ना तुम्हरी पहिचान॥ १ ॥

निर्बल हैं कछु शक्ति नहीं है, भाव नहीं है भक्ति नहीं है,
ना हममें कछु ग्यान॥ २ ॥
शुद्ध नहीं है बुद्धि हमारी, कैसे पावें भक्ति तुम्हारी,
छाया हिय अग्यान॥ ३ ॥
कौन भाँति हम तुम्हें रिझावें, किस प्रकार हम दर्शन पावें,
करो आप कल्याण॥ ४ ॥
ग्यान भक्ति की ज्योति जगा दो, अहंकारको दूर भगा दो,
आप भानुके भान॥ ५ ॥
तुमहीं माता पिता हमारे, सुहृद बंधु गुरु सखा हमारे,
हम तुम्हरी संतान॥ ६ ॥

(२३०)

बचाओ प्रभु अब तो जल्दी बचाओ।
ये संसारके सुख की आशा छुटाओ॥ टेर॥
ये घाटी कठिन है करूँ पार कैसे।
बताओ मैं आऊँ तेरे द्वार कैसे।
मुझे अपनी भगतीका मारग दिखाओ॥ १ ॥
क्यों देरी करो ये समझमें न आता।
कुकर्मोंका मेरा उठा दो ये खाता।
वे अपराध मेरे सभी भूल जाओ॥ २ ॥
पड़ा हूँ शरण नाथ तुमहीं सँभारो।
करो मेहरबानी कृपादृष्टि डारो।
जैसे चाहो वैसे ही मुजको नचाओ॥ ३ ॥
मेरे और कोई ना दूजा सहारा।
बिना आपके है ना कोई हमारा।
बचाओ बचाओ बचाओ बचाओ॥ ४ ॥

(२३१)

मेरी बन जायेगी राम गुन गाये से॥ टेर ॥
ध्रुव की बनि प्रहलादकी बन गई,
द्रौपदी की बन गई चीरके बढ़ाये से॥ १ ॥
व्यास की बनि शुकदेवकी बन गई,
नारद की बन गई वीणाके बजाये से॥ २ ॥
व्याध की बनी निषाद की बन गई,
बालमिककी बन गई मरा मरा गायेसे॥ ३ ॥
शबरी की बन गई अहिल्या की बन गई,
विभीषण की बन गई शरणमें आये से॥ ४ ॥
गज की बन गई गीधकी बन गई,
केवट की बन गई नावमें बिठाये से॥ ५ ॥
भीषम की बनि हनुमान की बन गई,
अर्जुन की बन गई गीता ग्यान पाये से॥ ६ ॥
विदुर की बन गई सुदामाकी बन गई,
मोरध्वज की बन गई आराके चलाये से॥ ७ ॥
गनिका की बन गई पूतना की बन गई,
करमा की बन गई, खीचड़ा खवाये से॥ ८ ॥
अजामील की बन गई रैदास की बन गई,
सदना की बन गई हरि मन भाये से॥ ९ ॥
धन्ना की बन गई सेना की बन गई,
नामदेव की बन गई छानके छवाये से॥ १० ॥
रंका की बन गई बंका की बन गई,
नरसी की बन गई भातके भराये से॥ ११ ॥
तुलसी सूर कबीर की बन गई
मीराँबाई की बन गई गोविन्द रिझाये से॥ १२ ॥
दास अज्ञात राम गुन गावे,
सबकी बनेगी प्रभु शरणमें आये से॥ १३ ॥

(२३२)

आँख खोल देखो बंदा प्रभुका कमाल है॥ टेर ॥
सारे विश्वमें है वास, रोम रोममें निवास।
सूर्य चन्द्रमें प्रकाश, बड़ा ही विशाल है॥ १ ॥
कैसा है वो जादूगर, सबमें सभीसे पर।
जगसे असंग है वो, बड़ा ही दयालु है॥ २ ॥
फूलोंमें है मंद मंद, भरी है कैसी सुगंध।
करे सबका प्रबंध, बड़ा महीपाल है॥ ३ ॥
सुख इंद्रियोंका छोड़ो, नाता दुनियाँसे तोड़ो।
नारायणसे प्रीती जोड़ो, रहो खुशहाल है॥ ४ ॥

(२३३)

प्रभु तुम साँचे मनके मीता॥ टेर॥
कब शबरी काशी कर आई, कब पढ़ आई गीता।
जूठे बेर बिसंभर चाखे, कीन्ही प्रेम पुनीता॥ १ ॥
यज्ञ दान गणिका कब कीन्ही, कब तीरथ जल पीता।
बाँह पकड़ हरि पार उतारी, मनहीके परतीता॥ २ ॥
कब करमा बाइ भोर सुमरिया, जप तप संजम कीता।
नंदलाल गोपाल प्रभूको खिचड़ी भोग धरीता॥ ३ ॥
साँच समान और जग नाहीं, जुग जुग संत भणीता।
कहत कबीर सांच घट जाके, सकल जगत तिन्ह जीता॥ ४ ॥

(२३४)

तेरी महरबानी का भार प्रभु इतना।
मैं तो उठाने के काबिल नहीं हूँ॥
मेरी हरकतें सब तुम्हीं जानते हो।
कहीं मुंह दिखाने के काबिल नहीं हूँ॥ टेर ॥